आठ भाषाओं में दो लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित

विश्वास के लिए भोजन

एक बाइबिल आधारित निर्देशिका

रिचर्ड बेनेट ने कलीसियाओं में, सम्मेलनों में और बाइबिल कॉलेजों में व्यक्तिगत रूप से सेवकाई की है । आप अमरीका, कनाडा, यूरोप तथा अफ्रीका इत्यादि देशों में पैंतालीस वर्षों से सेवकाई करते रहें हैं । इनमें से बीस वर्षों तक आपकी बाइबिल संबंधी सिक्षा का प्रसारन पांच महाद्वीपों के लिये ''ट्रांस वर्ल्ड रेडियो'' तथा ''फार ईस्ट ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन'' जैसे मिशनरी रेडियो स्टेशन्स से नियमित रूप से किया गया। इन सुनियोजित सेवकाईयों के माध्यम में यह गंभीर एवं यथार्थ इच्छा है कि लोगों को पुनरुत्थित प्रभु यीशु मसीह को अधिक से अधिक घनिष्ट एवं व्यक्तिगत रूप से जानने में मदद प्रप्त हो सके।

अत्यधिक आत्मिक लाभ प्राप्ति के खातिर प्रथान किये गये आत्मिक भोजन सराहनीय, उपयुक्त और संश्लेषात्मक होने चाहिये। आपने हमें दिखाया है कि यह प्रक्रिया किस प्रकार संपन्न होती है।

डॉ. स्टीफ़न एफ. आल्फोर्ड

Authentic

ISBN 81-7362-584-0

9788173625848 00350

Food for Faith (Hindi)

विश्वास के लिए भोजन

बेनेट

Authentic

विश्वास के लिए भोजन

रिचर्ड बेनेट

आराधनाः

मन और हृदय को नम्रता पूर्वक सर्वोच्च जीवित प्रभु यीशु मसीह पर उसे उसी रूप में देखते हुए केंद्रित करना जिस रूप में उसे परमेश्वर के वचन में प्रकट किया गया है, सच्ची आराधना है। जब कभी ऐसा होता है, तब उसके सम्मुख समर्पण और प्रशंसा के साथ एक आंतरिक दंडवत होता है।

पृष्ठ -100

गवाहीः

प्रभावकारी सुसमाचार - प्रचार, पवित्र आत्मा के छलकने के परिणाम स्वरूप होता है। यहाँ छलकने का तात्पर्य पवित्र आत्मा से भरपूर विश्वासी के जीवन से प्रवाहित पवित्र आत्मा के अतिरिक्त प्रवाह से है, जिसके अंतर्गत वह अपने अंदर निवास कर रहे मसीह की सच्चाई अर्थात् वास्तविकता को दूसरों पर प्रकट करता है।

पृष्ठ -129

युद्ध या लड़ाईः

जब आप परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रार्थना करते हैं, तब आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं। और यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप शैतान पर और आपके जीवन को पथभ्रष्ट करने के उसके प्रयास पर विजय को जानें।

पृष्ठ -102

विश्वास
के लिये भोजन

विश्वास के लिये भोजन

बाइबिल पर आधारित नियमावाली
परमेश्वर के साथ निरंतर और जीवित संगति के लिये मार्गदरशन

लेखक
रिचर्ड ए. बेनेट

अनुवादिका: श्रीमती नीता पात्रो

Vishwas Ke Liye Bhojan
(Hindi)

Food for Faith
by Richard A.Bennett
Copyright © 1994, 1998 by Cross Currents Intl. Ministries

First Hindi edition 2004
Reprint 2007
ISBN 81-7362-584-0

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced in any form or by any means, electronic, or mechanical, including photocopying, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publisher.
The sociological and doctrinal views of the author may not necessarily be those of the publisher.
OM Authentic Books is an imprint of OM Authentic Media, the publishing division of STL OM Books India.

Published by
OM Authentic Books
P. O. Box 2190
Secunderabad 500 003
Andhra Pradesh, India.

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में, यह पुस्तक उस प्रत्येक सहकर्मी को स्नेहश्ण प्रति समर्पित है, जिसने क्रॉस करेंट्स इंटरनेशनल मिनिस्ट्रीज़ के माध्यम से मेरी पत्नी और मेरे साथ सुसमाचार की सेवकाई में अत्याधिक विश्वासयोग्यता से कार्य किया है।

विश्वास के लिये भोजन क्रॉस करेंट्स इंटरनेशनल मिनिस्ट्रीज़ एवं इंटरनेशनल प्रिजन मिनिस्ट्रीज़ की एक मिशनरी शाखा के रूप में अन्य भाषाओं में प्रकाशित की जा चुकी है। अगले मिशनरी अनुवाद और प्रकाशन शेष हैं।

विषय सूची

	भूमिका	11
	प्रस्तावना	13
1.	प्रतिदिन का आनंद	21
2.	सिर और हृदय	33
	सिर	36
	हृदय	41
3.	प्रार्थनापूर्ण तैयारी	51
	अपने घुटने टेकें	54
	अपना हृदय खोलें	57
	मेरी स्वर्गीय दृष्टिकोण	71
	मेरी संसारिक समस्या	78
4.	साथ-साथ समय	87
	आज्ञाकारिता की एक प्रक्रिया	90
	विश्वास का एक प्रत्युत्तर	93
	आराधना में वास्तविकता	97
	विरोधी या शत्रु के प्रति सर्तक	100
5.	विश्वास का एक तत्व	111
6.	बताने का समय	125
	अतिरिक्त प्रवाह वाला सुसमाचार - प्रचार	130
7.	फल अथवा आग	139
	सफेद पृष्ठ	142

व्यर्थ गये वर्ष 144
अनंत प्रकाश 146
8. आओ और भोजन करो 151
क. बाइबल अध्ययन 170
ख. साथ - साथ समय 171
ग. प्रतिदिन की प्रार्थना मार्गदर्शक 172

भूमिका

डॉ. रिचर्ड बेनेट की नयी पुस्तिका, विश्वास के लिये भोजन की सराहना करने का यह सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। यह उनकी पिछली पुस्तक परमेश्वर की खोज का एक योग्य अगली कड़ी है। विश्वास के बिना मनुष्य परमेश्वर के पास नहीं आ सकता (इब्रानियों 11:6) और वह विश्वास के बिना परमेश्वर के लिये नहीं जी सकता (रोमियों 1:17)। यह तब संभव है, जब आरंभिक रूप से (रोमियों 10:17) और निरंतर रूप से (1 पतरस 2:1-3; इब्रानियों 5:12-14) विश्वास का पोषण किया जाये। प्रभु यीशु ने इस विषय को उस समय अंतिम रूप दिया, जब उसने यह घोषित किया कि ''मनुष्य सिर्फ रोटी से ही नहीं, परंतु प्रत्येक उस वचन से जीवित रहेगा, जो परमेश्वर के मुँह से निकलता है (मत्ती 4:4)। इससे पहले यिर्मयाह ने उस समय इस सिद्धांत की पुष्टि की, जब उसने यह लिखाः ''जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनंद का कारण हुए; क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूँ'' (यिर्मयाह 15:16)।

अधिकतम लाभ के लिये; आत्मिक भोजन को सराहना चाहिये, उपयुक्त ढ़ंग से बांटना या वितरित करना चाहिये और तब ग्रहण करना

चाहिये। डॉ. बेनेट, हमें यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर के साथ ''मिलकर बिताये जाने वाले समय'' में यह प्रक्रिया कैसे होती है। विशेष तौर पर, अध्याय 8, इस बारे में सबसे अधिक सहायक है।

सांसारिक मानवता के दिनों में, जब किसी औसत दर्जे के मसीही के दिमाग में यह धारणा डाल दी जाती है कि वह अंतः निवास करने वाले मसीह पर पूर्णतः विश्वास निर्भरता के बिना ही, परमेश्वर के लिये जी सकता है (गलातियों 2:20), तब ऐसे समय में विश्वास के लिये भोजन नामक यह पुस्तक हम सबके लिये स्वर्ग से एक संदेश है। जबकि यह पुस्तक अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ती है, तो परमेश्वर इसकी सेवकाई को आशीष प्रदान करे।

डॉ. स्टीफ़न एफ़. ओल्फोर्ड
मेम्फ़िस, टेनेसी

प्रस्तावना

विश्वास के लिये भोजन, परमेश्वर की खोज नामक मेरी पुस्तक के लिये सचमुच एक क्रमगत् कड़ी है जिसे मैने तन लिखा जब मैं और मेरी पत्नी हमारी शदी मे रपूर्वी वर्षगाँठ के करीब थे। उस समय हम सुसमाचार के संदेश की इस पहली प्रस्तुति को लिखने, छपवाने और प्रकाशित करने के माध्यम से परमेश्वर के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहते थे।

हमने परमेश्वर की खोज के प्रथम संस्करण की पच्चीस हजार प्रतियां छपवायीं थीं। उसके बाद से लेकर अब तक परमेश्वर उसके प्रति हमारे साधारण और सामान्य प्रेम समर्पण को अत्याधिक ध्यान देने योग्य ढ़ंग से आशीषित करने में अनुकूल एवं अनुरूप रहा है।

आज, समस्त विश्व में पचास से अधिक भाषाओं में इस पुस्तक की लगभग तीस लाख प्रतियाँ वितरित की गयी हैं तथा इस पुस्तक की मांग नाटकीय ढ़ंग से लगातार बढ़ती ही जा रही है। हमारे लिये सबसे बड़े आनंद की बात उन लोगों की कहानियों अर्थात उनके वृतांतों को सुनना है, जिन्होंने विश्व के विभिन्न भाग में इस पुस्तक को पढ़ने के परिणाम स्वरूप पुनः जन्म अर्थात् नये सिरे से जन्म प्राप्त किया है।

इसके बाद, हम अपने विवाह की पैंतीसवी वर्षगांठ मनाने के बारे

में सोच रहे थे! उन मध्यस्थ वर्षों के दौरान, सुसमाचार के खातिर द्वार खुल गये थे। इसलिये परमेश्वर की खोज के वितरण के लिये इतना अधिक सुअवसर दस वर्ष पहले कभी उपलब्ध नहीं हुआ था। इसके परिणाम स्वरूप, हमारे लिये स्वर्गीय पिता के प्रति अपने बढ़ते हुए प्रेम और आभार को प्रकट या व्यक्त करने का इसके अलावा अन्य कोई बेहतर तरीका नहीं था कि हम विश्वास के लिये भोजन को छपवाएँ और प्रकाशित करें। जिस प्रकार परमेश्वर ने ''परमेश्वर की खोज'' को आशीष प्रदान किया है, उसी प्रकार वह इस पुस्तक को इस देश के तथा विदेशों के अनेक लोगों की मदद करने के लिये उपयोग में लाये; जो मसीह में नया जीवन प्राप्त कर रहे हैं।

तथापि, विश्वास के लिये भोजन, परमेश्वर की खोज की सिर्फ अगली कड़ी ही नहीं है। डॉरथी और मुझे यकीन है कि यह स्वतः में और स्वतः के लिये प्रत्येक उस विश्वासी का एक महत्वपूर्ण सहायक बनेगी, जो प्रभु के साथ अपेक्षाकृत एक अधिक घनिष्ट संबंध रखने के लिये इच्छुक है। यह एक सच्ची एवं नियमित प्रार्थना के साथ लिखी गयी है; ताकि इसे पढ़नेवाला प्रत्येक व्यक्ति अपने मसीही जीवन में विशेष सहायता और प्रोत्साहन प्राप्त कर सके।

विश्वास के लिये भोजन वास्तव में लापरवाही के साथ पढ़ने के लिये नहीं है। और न ही यह पढ़कर किसी किनारे पर या ताक पर रखने के लिये है। इसे सावधानी पूर्वक पढ़ने के बाद, एक निर्देश पुस्तिका के रूप में रखना चाहिये। जब इस पुस्तक के सिद्धांत हमारे जीवन में विश्वासयोग्यता पूर्वक लागू किये जाते हैं, तब हम परमेश्वर के साथ अपेक्षाकृत एक अधिक नियमित एवं घनिष्ट चालचलन को विकसित करने का तरीका सीखते हैं।

हम में से अधिकांश लोग यह मानते हैं कि समय समय पर ''चिकित्सीय जांच'' कराना, बुद्धिमानी का काम है। इसे करने के लिये हम पैसा और थोड़ा वक्त देते हैं। किसी भी शारीरिक समस्या की सही पहचान और उसका परिवर्ती उपचार, डॉक्टर के द्वारा आरंभ में पूछे गये प्रश्नों पर निर्भर होते हैं। मसीहियों के लिये भी समय समय पर ''आत्मिक जाँच'' कराना बुद्धिमानी की बात है। इन सबके लिये जब हम परमेश्वर के साथ अकेले में संगति करने के खातिर स्वयं को अलग करते हैं, तब पारदर्शक सच्चाई अर्थात् ईमानदारी और वक्त देने की आवश्यक्ता होती है! प्रत्येक अध्याय के अंत में, आपकी व्यक्तिगत निजी ''आत्मिक जांच पड़ताल'' के आधार के रूप में कुछ सहायक प्रश्न पूछने का सुझाव दिया गया है। इनमें से कुछ प्रश्नों के कारण आपको तकलीफ़ महसूस हो सकती है। कृपया यह याद रखें कि शारीरिक जाँच करते समय जिस जगह पर बहुत अधिक दर्द होता है, समान्य तौर पर उसी जगह पर समस्या रहती है!

इस पुस्तक को लिखते समय मुझे एक घटना स्मरण हो आयी है, जिसे मेरे मित्र स्वर्गीय डॉ. जे. एडविन ओर ने मुझे बतायी थी। उन्होंने बताया कि एक महत्वपूर्ण राष्ट-ीय समारोह में शामिल होने के लिये उनके साथ एक विख्यात प्रवक्ता और चुने हुए जाने माने मसीही अगुवों को आमंत्रित किया गया था। यह समारोह विशेष तौर पर मध्यस्थ प्रार्थना के उद्देश्य के लिये आयोजित किया गया था। इसके बावजूद, एडविन ने जिस गुमनाम प्रवक्ता का उल्लेख किया है, उसने प्राप्त आमंत्रण को यह कहते एवं समझाते हुए नम्रतापूर्वक ठुकरा दिया कि वह अत्याधिक व्यस्त था। ठीक इसके साथ ही उसी समय उसने अपने इंकार के पत्र में एक अनुबंध संलग्न कर दिया, जिसमें उसने यह बताया था कि उसके पास

प्रार्थना के बारे में एक अत्याधिक अच्छा संवाद या संदेश है और बाद में किसी ऐसी सभा में उस संदेश का प्रचार करने में उसे प्रसन्नता होगी! मेरा हृदय इस बात को अच्छी तरह जानता है कि सचमुच प्रार्थना करने के बजाय प्रार्थना के बारे में लिखना या प्रचार करना अपेक्षाकृत कितना अधिक आसान है। अतः मैं किसी विशेषज्ञ के रूप में नहीं लिखता हूँ, परंतु एक ऐसे भूखे व्यक्ति के रूप में लिखता हूँ, जो दूसरे भूखे लोगों को बताता है कि उन्हें रोटी कहाँ प्राप्त हो सकती है।

मेरी पत्नी डॉरथी विश्वास के लिये भोजन को मेरे द्वारा लिखने के दौरान, न सिर्फ एक बड़ी प्रोत्साहन थी, वरन् उसने अधिक महत्वपूर्ण रूप से परमेश्वर के साथ मेरे समय बिताने के प्रति निरंतर सुरक्षा और प्रोत्साहन प्रदान करने में प्रयासरत भी थी। मैं कितने स्पष्ट रूप से सी.टी. स्टड की प्रार्थनाओं में से एक पढ़ी हुई प्रार्थना को याद करता हूँ, जिसे मैं ने डॉरथी से मुलाकात होने से पहले की थी। वह प्रार्थना कुछ इस तरह हैः ''हे प्रभु! यदि तेरे पास मेरे लिये पत्नी है, तो उसे उस क्षण एक लाल तपती हुई भोंकने या कोंचने वाली छड़ की तरह मुझे उसकाने और प्रेरणा देने वाली बनाना जब मैं अहंकारी होने की परीक्षा में पड़ जाऊँ!'' यह कितना बड़ा सौभाग्य है कि एक ऐसी पत्नी के साथ विवाह हो। परमेश्वर की प्रशंसा हो!

पचास वर्ष से अधिक समय बीत गया, जब मसीह में मेरे पिता, डॉ. स्टीफ़न ने मुझे उद्धारकर्त्ता की ओर अगुवाई दी थी। मैं अत्याधिक आभारी हूँ कि उस समय स्टीफ़न ने मुझे बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने में नियमित समय बिताने की सर्वोच्च महत्ता बतायी थी।

अनेक विचार, जो इस पुस्तक में व्यक्त किये गये हैं, वे परमेश्वर के वचन पर मेरे व्यक्तिगत मनन से अंकुरित हुए हैं। अन्य कई सच्चाई परमेश्वर के उन चुने हुए कई सेवकों की बाइबल संबंधी प्रेरणाओं से एकत्र

की गयी हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उदारता के साथ मेरे मार्ग पर लाया है। यद्यपि इस पुस्तक जैसे एक छोटे और व्यवहारिक प्रकाशन के संदर्भ में, उल्लेखनीय विश्वासयोग्य पुरूष एवं महिलाएँ संख्या में अत्याधिक हैं; तौभी मैं उनमें से प्रत्येक के लिये परमेश्वर की प्रशंसा करता हूँ।

अब, विश्वास के लिये भोजन के प्रकाशन के माध्यम से, बदले में इस आदेश का पालन कर सकता हूँ, जिसे पौलुस ने विश्वास में अपने पुत्र, तीमुथियुस को प्रदान की थीः ''और जो बातें तूने बहुत से गवाहों के सामने मुक्य से सुनी हैं उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरो को भी सिखाने के योग्य हों'' (2 तीमुथियुस 2:2)।

यद्यपि इस पुस्तक को इसलिये लिखा गया है; ताकि विश्वासियों को प्रभु यीशु के साथ एक निरंतर संगति का आनंद प्राप्त हो सके, तौभी इन पृष्ठों को पढ़ने वाले ऐसे लोग भी होंगे, जो पापों की क्षमा प्राप्त करने के आनंद से अब तक अनजान हैं और अनंत जीवन के अद्भुत आनंद से अनजान हैं। यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं, तो मैं आपसे यह आग्रह करता हूँ कि आप अपनी बाइबल में यूहन्ना रचित सुसमाचार को खोलें। वहाँ आप पढ़ेंगे कि यह सुसमाचार आपके खातिर एक विशिष्ट सहायक क्यों हो सकता हैः ''परंतु ये इसलिये लिखे गये हैं, कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह हैः और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:31)।

- आर.ए.बी.

विश्वास के लिये भोजन

तेरे वचन मुझको कैसे मीठे लगते हैं,
वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं!...
इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से
वरन् कुंदन से भी अधिक प्रिय मानता हूँ!

- भजन संहिता 119:103,127

अध्याय 1

प्रतिदिन का आनंद

थोड़े ही समय पहले एक अत्याधिक दयालू मसीही महिला ने विनम्रतापपूर्वक यह आग्रह कीः ''कृपया प्रार्थना करें कि मैं प्रभु के साथ अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठ संबंध रख सकूँ''। हां, किसी परस्पर आपसी संबंध में घनिष्टता की विभिन्न अलग-अलग श्रेणियाँ होती हैं। और यह विशेष तौर पर मसीहियों के लिये प्रभु यीशु मसीह के साथ उनके संबंध में सच है।

यहाँ तक कि मानवीय संबंध में, भावनात्मक संबंधों या बंधनों की सच्ची एकता इन बातों के शामिल होने पर फलफूल सकती है; इच्छाओं के मिश्रित होने से अर्थात् इच्छाओं का सम्मिश्रण; मान्यता की पद्धतियों का वितरण या आबंटन; सामान्य इच्छाओं का आनंद; खुले संचार की सच्चाई और मन - मस्तिष्क का सामंजस्य।

उदाहरणार्थ, मेरी पत्नी डॉरथी और मैं ने हाल ही में एक पत्र प्राप्त किया, जिसे पढ़ने पर हम दोनों को अत्याधिक आनंद मिला। वह पत्र दो अफ्रीकी लोगों ने लिखकर भेजा था। उसमें लिखा थाः ''हमने कल शिशु डॉरथी को अस्पताल से घर लाया; उसने अपने नाम के अनुरूप ही वक्त की पाबंद बनने का निर्णय लिया। शिशु डॉरथी का जन्म सुरक्षित रूप से

हुआ। उसका वजन 3 किलो अर्थात् लगभग 6 1/2 पौंड था। उनके और उनके परिवार के लोगों के लिये कितने अकथनीय आनंद की बात है।

उस क्षण गर्व से फूले न समाने वाले माता-पिता की खुशी में खुश होना कितना आसान है, जब वे अपने नवजात शिशु को नाजुकता एवं कोमलता पूर्वक उठाकर घर ले जाते हैं। और जब बालक विकसित होता जाता है, माता-पिता का आनंद लगातार जारी ही रहता है। जब शिशु पहली बार लात मारने या हंसने का प्रयास करता है, तब हम आनन्द विभोर होकर आँखें मटकाते हैं! पैरों की छोटी अंगुलियाँ, घुटने, पहला कदम और तब वह उत्सुकता भरा क्षण आता है, जब हम पहली बार पापा या मम्मा शब्द को उसके मुख से सुनते हैं!

एक नवजात शिशु, अपने विकास के लिये अपनी क्षमता के साथ, अवश्य ही एक ऐसा आश्चर्यकर्म होता है, जो मानवीय ज्ञान से अर्थात् मानवीय समझ से परे होता है। यहाँ तक कि वह व्यक्ति भी अपेक्षाकृत अधिक अद्‌भुत होता है, जिसने अभी नया जन्म पाया है अर्थात् पुनः जन्म प्राप्त किया है - ऐसा व्यक्ति, जिसने आत्मिक जन्म से लेकर आत्मिक परिपक्वता तक की यात्रा पर पहला कदम रखा है।

दुर्भाग्यवश, इन सबके बावजूद, जन्म के आनंद से लेकर प्रौढ़ता की परिपक्व भरपूरी तक, जीवन एक ही मार्ग पर हमेशा नहीं चलता है। दुखद बात यह है कि ठीक जिस सप्ताह शिशु डॉरथी के जन्म की सूचना देने वाला पत्र हमें मिला, उसी सप्ताह मेरी पत्नी डॉरथी और मैंने यह भी सुना कि लंबे अर्से से सिन्सीनेटी, ओहिओ में रह रहे हमारे मित्र की इक्कीस वर्षीय पुत्री का देहांत हो गया। दुःखदपूर्ण घटना यह थी कि उसने अपने इस इक्कीस वर्षीय जीवन में बचपन से ही मानसिक, शारीरिक या सामाजिक

रूप से कोई विकास नहीं किया था। यद्यपि उसके माता - पिता ने बड़े प्रेम के साथ उसका नाम केरल जॉय (आनंद का गीत) रखा था; तौभी हमने यह पाया कि जब उसकी मृत्यु हुई, तब भी वह एक शिशु थी - एक इक्कीस - वर्षीय शिशु बालिका! उसके माता - पिता के साथ बात करने की उसकी क्षमता में वृद्धि रूक चुकी थी अर्थात् वार्तालाप करने की उसकी क्षमता बौनी या ठिंगनी थी। अगर मानवीय दृष्टिकोण से देखा जाये, तो उसके जीवन की यात्रा कठोर या उग्र रूप से क्षीण या दुर्बल थी।

जिस प्रकार कैरल शिशु अवस्था से निकलकर या आगे बढ़कर कभी परिपक्व नहीं हुई, ठीक उसी प्रकार आज कलीसिया में कई लोग ऐसे हैं, जो आत्मिक शिशु अवस्था से आगे बढ़कर परिपक्व होते हुए प्रतीत नहीं होते हैं। यद्यपि यह संभव है कि वे कई वर्ष से मसीही हैं; तौभी वे प्रभु में कभी सचमुच विकसित नहीं हुए हैं। इसके बावजूद, परमेश्वर ने ऐसा आत्मिक पोषण प्रदान किया है, जिसे हम अगर उपयुक्त ढ़ंग से पचा लें, तो हम परमेश्वर के प्रत्येक नये जन्म लिये संतान के जीवन में आत्मिक विकास उत्प्रेरित करेंगे।

आपके मसीही जीवन को आत्मिक रूप से बौना या ठिंगना होने से रोकने के लिये बाइबल परमेश्वर का पौष्टिक तत्व या भोजन है। यदि आपको शिशु अवस्था की आत्मिक जिज्ञासा से आगे युवावस्था की आत्मिक स्थिरता और अंततः प्रौढ़ावस्था की आत्मिक परिपक्वता की ओर आगे विकसित होना है, तो यह आदेश है कि आप परमेश्वर के वचन, बाइबल से प्रतिदिन पोषण अर्थात् पोष्टिक भोजन प्राप्त करें। बाइबल पढ़ना, कर्तव्य का एक विषय होने के साथ ही हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा अधिक है; इसे प्रत्येक उस भूखे मसीही के जीवन में तरो ताजा करने वाला आनंद बनना चाहिये, जो परमेश्वर के द्वारा तैयार किये गये भोजन का भागीदार होता है।

हाँ, सचमुच परमेश्वर का वचन, उस समय आपके लिये निरंतर और बढ़ते हुए आनंद का स्त्रोत होगा, जब आप उसे अपने व्यक्तिगत आत्मिक पोषण के रूप में पचाना समझ जाएंगे।

परमेश्वर, यशायाह भविष्यद्वक्ता के माध्यम से उन सब लोगों को उदारतापूर्वक आमंत्रित करता है, जो उसकी निजी भोज की मेज से उसके साथ आत्मिक भोजन करने के लिये भूखे और प्यासे हैं:

> ओह सब प्यासे लोगो पानी के पास आओ और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिना रूपये और बिना दाम ही आकर ले लो। जो भोजन-वस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों रूपया लगाते हो और जिससे पेट नहीं भरता उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएँ खाने पाओगे और चिकनी - चिकनी वस्तुएँ खाकर संतुष्ट हो जाओगे। कान लगाओ और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बांधूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा (यशायाह 55:1-3)।

चूंकि कई लोगों को देखने से यह मालूम नहीं पड़ता है कि जब वे परमेश्वर के वचन को सीधे पढ़ते हैं, तब वे अपने विश्वास के खातिर भोजन कैसे प्राप्त करेंगे; उनके लिये वास्तव में बाइबल को पढ़ने की तुलना में बाइबल से संबंधित पुस्तकों को पढ़ना अधिक आसान होता है। आपके हाथों में इस पुस्तक का उद्देश्य बाइबल की व्याख्या करना नहीं है; परंतु इसके बजाय इसका तात्पर्य आपको इस रीति से बाइबल पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करना है, कि बाइबल स्वतः ही अपनी व्याख्या करेगी! इसके परिणाम स्वरूप आप बड़े एवं बढ़ते हुए पैमाने पर, अपने स्वर्गीय पिता के साथ पारदर्शक और घनिष्ट संगति के एक जीवन का आनंद उठायेंगे।

मैं ने अक्सर ऐसे लोगों से यह कहा है, जो अपने विश्वास के खातिर भोजन के रूप में अभी - अभी बाइबल पढ़ना आरंभ कर रहे हैंः

आप उसे पढ़ें, जो आपकी समझ में आता है और शीघ्र ही आप उन बातों पर पहुंचेंगे, जिन्हें आप नहीं समझते हैं। पढ़ना जारी रखें। थोड़ी ही देर में, आप कुछ ऐसी बातों तक पहुँचेंगे, जिन्हें आप नहीं समझते हैं। धीरे-धीरे, आपकी समझ में आनेवाली बातें, आपको उन बातों को समझने में मदद करेंगी, जिन्हें आप अब तक नहीं समझे हैं!

क्या वह आपके लिये कोई अर्थ रखती हैं अर्थात् क्या वे आपको समझ आती हैं? दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि आप कभी निराश न हों।

संपूर्ण विश्व में - पढ़ने की कक्षाओं में, संवाद कक्षों में और पुस्तकालयों में - लोग ऐसी शैक्षणिक सूचनाओं का पाचन कर रहे हैं, जो उन्हें ''विचार या धारणा के लिये अत्याधिक भोजन'' प्रदान करता है। अगर हम इसी तरह से, बाइबल को एक धार्मिक पाढ्य पुस्तक के रूप में पढ़ें, तो हम सिर्फ यह प्राप्त करेंगे - **विचार के लिये भोजन।** इसके बावजूद, बाइबल स्वतः हमें यह चेतावनी देती हैः ज्ञान घमंड उत्पन्न करता है, परंतु प्रेम से उन्नति होती है (1 कुरिन्थियों 8:1)।

हाँ, जब तक हम इस बात को नहीं समझते हैं कि परमेश्वर के वचन का पाचन उपयुक्त ढ़ंग से कैसे किया जाये, तब तक यह संभव है कि बाइबल की सच्चाई का ज्ञान हमारे आत्मिक जीवन में निर्माण करने के बजाय बौद्धिक अहंकार या घमंड के साथ घमंड उत्पन्न करे। हमारे प्रभु के साथ मिलकर रोज समय बिताने के दौरान, केवल ज्ञान प्राप्त करने के

बजाय हमें उसके भोज की मेज से उस पोषक तत्व को प्राप्त करने या ग्रहण करने की जरूरत है, जो हमें ''विश्वास के लिये भोजन'' प्रदान करेगा।

जो लोग बाइबल को सिर्फ़ एक शैक्षणिक अभ्यास के रूप में पढ़ते हैं, उनके लिये ध्यान देने योग्य विरोधभास में ऐसे अनेक प्रसन्न या आनंद से भरे विश्वासी है, जिन्होंने परमेश्वर के वचन को पढ़ने के रहस्थ का पता लगा लिया है; ताकि वह उनके जीवन में सच्चे आत्मिक पोषण का एक व्यवहारिक और जीवित स्त्रोत बन जाता है। ये मसीही परमेश्वर के साथ संगति के एक जीवन की बढ़ती हुई सच्चाई का अनुभव कर रहे हैं और इस प्रक्रिया में वे यथार्थ या सच्ची आराधना और फलवंत सेवा के मार्ग का पता लगा रहे हैं। ऐसे लोगों को आत्मा - चेतना का बंधन या दासत्व, परमेश्वर की चेतना की आशीष के लिये मार्ग प्रदान करेगा।

प्रतिदिन एक खुली बाइबल के साथ विश्वस्त और व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर तक पहुंचना और एक खुले हृदय के साथ पहुँचना, परमेश्वर के पुनः जन्म पाये हुए प्रत्येक संतान का एक अद्भुत विशेषाधिकार है।

आप यह प्रश्न पूछ सकते हैंः बाइबल को पढ़ने का सबसे उत्तम तरीका क्या है; ताकि वह मेरे प्राण का पोषण करे और हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेम तथा ज्ञान में बढ़ने के लिये मुझे सक्षम बनाये? इसका रहस्य इस बात में पाया जाता है, जिसे हम साथ मिलकर समय बिताना कहेंगे - प्रभु के साथ इकट्ठा होने के लिये एक समय।

इकट्ठे समय बिताना, हमारे जावित प्रभु के साथ सचमुच एक दो - तरफा वार्तालाप है। परमेश्वर अपने वचन बाइबल के द्वारा अपने संतानों से बातें करता है। जब हम परमेश्वर की कही बात का सही और व्यक्तिगत तौर पर प्रत्युत्तर देते हैं, तब हम बाइबल के अनुसार और अपेक्षित विश्वास के साथ प्रार्थना कैसे की जाये, यह सीखेंगे।

जब मैं ''बाइबल के आधार पर प्रार्थना करने'' के बारे में कहता हूँ, तब मेरा तात्पर्य इस बात से होता है कि प्रार्थना में, हमारे प्रभु को प्रत्युत्तर देते समय, वास्तव में हम पवित्र शास्त्रों के उन्हीं शब्दों या वचनों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें हम पढ़ते हैं। बाइबल के अनुसार प्रार्थना करना, परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप प्रार्थना करने के एक बढ़ते हुए आश्वासन का आनंद उठाना है।

जब पवित्र आत्मा, परमेश्वर के वचन को हमारे लिये जीवित बनाता है, तब हम पवित्र शास्त्र के ठीक उन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हैं और उन्हें उन चिंताओं या बोझ के साथ जोड़ते या संबंधित करते हैं, जो हमारे हृदय में हो सकते हैं। इस रीति से प्रार्थना करने में, हम अपरिवर्तित प्रार्थनाओं से बचेंगे। इसके विपरीत, जब हम बाइबल के अनुसार प्रार्थना करते हैं, तब परमेश्वर की व्यक्तिगत चिंताओं और हमारे जीवन में उद्देश्यों की एक बढ़ती हुई समझ में हमारे प्रवेश करने पर, हम प्रभु के साथ विशिष्ट अधिकार की संगति का आनंद उठायेंगे।

सच्ची प्रार्थना, परमेश्वर की इच्छा को अपनी इच्छा के समक्ष झुकाना नहीं है; परंतु यह अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के समक्ष झुकाना है। बसंत ऋतु के समय की बाढ़ के दौरान, यहोशू के द्वारा इस्राएल के संतानो को यर्दन नदी से पार जाने के लिये अद्भुत रीति से अगुवाई करने के बाद, उसका सामना एक अनजान व्यक्ति अर्थात ''पुरूष'' से हुआ था। यहोशू यह जानता था कि कनान में परमेश्वर की ओर से उसके लिये यह आदेश था कि वह देश पर विजय प्राप्त करे और उसे मूर्तिपूजक प्रथाओं से शुद्ध करे। इसलिये यहोशू ने इस अजनबी से पूछा जिसने अपने हाथ में एक तलवार खींच ली थीः ''क्या तू हमारे लिये है अथवा हमारे विरोधियों के लिये? यहोशू को चकित करने वाला एक उत्तर मिला थाः

''नहीं!'' या (NIV) बाइबल में ''दोनों के लिये नहीं'' के रूप में अनुवाद किया गया है। यहोशू ने इस उत्तर से यह अनुमान लगाया था कि वह अजनबी दोनों ही पक्ष में नहीं रहेगा। तब वचन पहुँचा, जिसने अजनबी के द्वारा दिये गये उत्तर को स्पष्ट कियाः परंतु मैं परमेश्वर की सेना का कमांडर होने के नाते अब आया हूँ।

उस समय, यहोशू ने उचित एवँ सही रूप में यह जान लिया कि यह अजनबी किसी का पक्ष लेने के बजाय, लगभग पूरा नियंत्रण खुद लेने वाला था। सुपुर्दगी या समर्पण के एक संकेत के रूप में, यहोशू ने अपने मुँह के बल गिरते हुए यह जान लिया कि वह परमेश्वर की सेना के कमाँडर की उपस्थिति में था। क्योंकि तू जिस जगह पर खड़ा है, वह पवित्र है (यहोशू 5:13-15)।

इसी तरह हमारी व्यक्तिगत निजी प्रार्थना के समय में हमें परमेश्वर के समक्ष अपनी व्यक्तिगत माँगों का प्रस्ताव नहीं लाना चाहिये और तब हमें परमेश्वर को हमारे साथ होने या रहने के लिये नहीं कहना चाहिये; परंतु इसके बजाय हमें उसकी पवित्र उपस्थिति में घुटने टेकना चाहिये और उसकी योजनाओं, उसके उद्देश्यों और उसकी शक्ति के अनुरूप खुद को ढाल लेना चाहिये।

इस प्रकार, बाइबल के अनुसार प्रार्थना करना, परमेश्वर के उद्देश्यों और उसकी इच्छा के साथ अनुरूपता और अनुकूलता में प्रार्थना करना है। और उसकी इच्छा के सामने अपनी इच्छा को झुकाना, हममें से प्रत्येक व्यक्ति के लिये बढ़ता हुआ अनुभव हो सकता है, जबकि हम कहीं भी प्रार्थना करने के दौरान, परमेश्वर के वचन के साथ एक सुर या लय में होना सीखते हैं।

हाँ, जब आप परमेश्वर की ओर से सुनने के लिये सच्ची इच्छा के

साथ प्रार्थनापूर्वक बाइबल पढ़ते हैं, तब आप हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह तथा ज्ञान में आगे बढ़ते जायेंगे (2 पतरस 3:18)।

जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है कि यशायाह ने बताया है: जब हम परमेश्वर की आवाज सचमुच सुनने के लिये अपने कान उसकी ओर लगाते हैं, तब हम उसके द्वारा कही गयी सभी बातों में सचमुच आनंदित होंगे।

आत्मिक जांच - पड़ताल

1.पहली बार मुझे एक पुनः जन्म पाया हुआ मसीही बने हुए कितना समय हो चुका है?

2.जैसा कि मैं अभी परमेश्वर के साथ एक निकट संगति का आनंद उठाता/ उठाती हूँ, क्या वैसे ही कभी पहले मैं ने आनंद उठाया है?

3.पांच वर्ष पहले के मेरे जीवन के साथ मेरे आज के जीवन की तुलना में:

- क्या मैं परमेश्वर के साथ अकेले में अधिक समय बिताता/ बिताती हूँ?

- क्या मैं अपनी निजी इच्छाओं से परमेश्वर के निर्देश को बेहतर ढ़ंग से अलग करता / करती हूँ?

हे प्रभु, मुझे सुनना सिखा ।
मेरा समय कोलाहल से भरपूर है और मेरे कान
उन हजारों कर्कश ध्वनि से थक चुके हैं,
जो निरंतर उन तक थपेड़ों की
तरह पहुंचती हैं।
मुझे बालक शमूएल के समान आत्मा दे,
जब उसने तुझसे कहाः
''कह, तेरा दास सुनता है''।
मुझे मेरे हृदय में तुझे बात करते हुए सुनने दे।
मुझे तेरा आवाज़ के स्वर की
आदत पड़ने दे;
ताकि उसका लय मेरे लिये परिचित हो सके।
जब पृथ्वी के स्वर समाप्त हो जाते हैं,
तब सिर्फ तेरी
कहती हुई आवाज़ के संगीत का ही स्वर होगा।
आमीन

- ए. डब्लू. टोजर

अध्याय 2

सिर और हृदय

कई वर्ष पहले, कीनिया के उत्तरी भाग में, मुझे और मेरी पत्नी डॉरथी को राष्ट-ीय पास्टरों और उनकी पत्नियों की एक सभा को परमेश्वर के वचन में से शिक्षा देने का सुअवसर प्राप्त हुआ। शाम की सभा में शामिल होने के खातिर शाम 7.00 बजे पहुंचने के लिये, उनमें से कुछ पास्टर 4.00 बजे सुबह से अपने अपने घर से निकड़ पड़े थे। बाइबल के बारे में अधिक सीखने की उनकी तीव्र इच्छा के उग्र रूप से प्रोत्साहित एवं उत्प्रेरित, उन्होंने भूमध्यरेखीय क्रूर एवं तपते हुए सूर्य के नीचे थकानपूर्ण यात्रा करते हुए लम्बी दूरी चलकर तय की थी। इस तपते सूर्य की क्रूर धूप ने ही अकाल और सूखे से उनकी भूमि और उनके देश का विनाश कर डाला था।

हम यह जानकर चकित हो गये कि उन राष्ट्रीय पास्टरों में से साठ से सत्तर प्रतिशत पास्टरों के पास बाइबल नहीं थी। यद्यपि इनमें से कई समर्पित अगुओं का हृदय था अर्थात् वे हाल ही में मसीही हुए थे; तौभी उनकी प्रकाशमान गवाहियों का उपयोग परमेश्वर ने उनके लोगों के बीच में अनेक कलीसियाओं को जीवन प्रदान करने के लिये अफ्रीकी देश में किया था।

हमारे सम्मेलन के आरंभ में, हम इस योग्य थे कि प्रत्येक पास्टर के हाथों में बाइबल रख सकें। तब मैं कई दिनों के निर्देश के साथ आगे बढ़ा। मेरा उद्देश्य शीर्षक यह थाः ''अब आपके पास आपके हाथ में एक बाइबल है, यह तब तक आपके लिये आशीष का कारण नहीं बन सकती है, जब तक यह आपके हाथ से आपके सिर अर्थात् दिमाग तक नहीं पहुंचेगी! परंतु इसके बावजूद भी, यह आपके लिये उस पूरी आशीष को नहीं लायेगी, जिसे परमेश्वर इन दिनों आपको देना चाहता है। केवल जब बाइबल, परमेश्वर के वचन के रूप में आपके हृदय में निवास करने लगती है, तब यह सम्मेलन आपके लिये एक अनंत आशीष बनेगा। यह एक आदेश है कि आप बाइबल को अपने हाथ से अपने सिर तक और फिर अपने सिर से अपने हृदय तक ले जाने का उपाय या तरीका सीखें।''

हाल ही में, मैं ने इंग्लैंड में उस घर को देखा, जिसमें मैं उस समय रहता था, जब मैं ने अपनी युवावस्था के अंतिम चरण के दौरान, मसीह के प्रति अपने हृदय को परिवर्तित किया था। एक प्रकाशस्तंभ हमारे घर थोड़ी ही दूरी पर था, जिसके नीचे एक चौदह वर्षीय लड़के ने यीशु मसीह को ग्रहण किया था। उसका नाम बॉब फिंलट था। बॉब के हृदय परिवर्तन ने उसके पूरे जीवन को नाटकीय ढ़ंग से बदल दिया था। चूंकि उसने पहले ही स्कूल छोड़ दिया था, और किसी भवन निर्माण की जगह पर एक मजदूर के रूप में काम कर रहा था; इसलिये उस समय निश्चय ही युवा बॉब अपने जीवन में कोई ज्ञाता या विशेषज्ञ नहीं था!

फिर भी बॉब के मसीही बनने के तुरंत बाद ही, मैं प्रतिदिन उसके काम में जाने से पहले उसे बाइबल पढ़ने के लिये राजी करता था। यद्यपि उसके पास कोई कलीसियाई पृष्ठभूमि नहीं थी; तौभी बॉब ने प्रतिदिन इकट्ठे समय बिताने में परमेश्वर के वचन के साथ व्यक्तिगत सवाल

जवाब करने के द्वारा अपने आत्मिक जीवन को पोषित करना सीख लिया था।

यह एक थोड़े आश्चर्य की बात थी कि बॉब ने सत्तरह वर्ष की उम्र में पत्राचार द्वारा बाइबल पाठ्यक्रम में दानिएल की किताब के अपने अध्ययन में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये थे! मैं कितना अधिक खुश था, जब मैं ने यह सुना कि उसने अठारह वर्ष की आयु में सेना में प्रवेश ले लिया था। उसने परमेश्वर के लिये अपनी जिज्ञासा को जारी रखा। वास्तव में, ''बूट कैंप'' में उसके प्रथम आठ सप्ताह के दौरान, उसने अपने दल या पलटन के सत्रह सैनिकों में से प्रत्येक के साथ व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना की, जिसके परिणामस्वरूप, उन्होंने मसीह को ग्रहण किया। इसके पश्चात्, जब उसने अपनी सैन्यसेवा को समाप्त किया, तब बॉब ने महसूस किया कि परमेश्वर की ओर से उसे मिशनरी प्रशिक्षण लेने की बुलाहट है। जब वह जर्मनी में अपने अंतिम मिशन को पूर्ण करने के लिये हवाई जहाज से जा रहा था, तब सेना का वह हवाई जहाज दुर्घटना ग्रस्त हो गया और बॉब की मृत्यु हो गयी।

हवाई जहाज के दुर्घटनास्थल के पास, जर्मनी के उस ग्रामीण इलाके में बॉब के पैकेट में से सुसमाचार पत्रिकाएँ बाहर गिरकर फैल गयी थीं! सचमुच, परमेश्वर का वचन बॉब के हाथों से उसके सिर तक और तब उसके सिर से उसके हृदय तक और अंत में उसके हृदय से दूसरों के हृदय तक पहुँच चुका था। जब बॉब की मृत्यु हुई, तब वह प्रभु के साथ एक भौतिक अर्थात् पृथ्वी पर के जीवित संबंध में से परमेश्वर की उपस्थिति में अपेक्षाकृत एक अधिक अद्भुत संगति के लिये बुला लिया गया था।

बॉब की तरह ही ऐसे अनेक लोग हैं, जिनके लिये औपचारिक बाइबल अध्ययन की सुविधाएँ और प्रशिक्षण उपलब्ध हैं, जो उन्हें उनके

मसीही चालचलन या आचरण में प्रोत्साहित कर सकते हैं। उन इच्छुक अफ्रीकी पास्टरों के विपरीत, हम में से अधिकांश लोगों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा को सुनने के लिये भूमध्यरेखीय सूर्य के नीचे पंद्रह घंटे तक चलने की जरूरत नहीं है। परंतु हमारी परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, हम सबको हृदय - परिवर्तन या संपूर्ण परिवर्तन करना जानना चाहिये हां, परिवर्तन - हार्दिक अनुभव तक बाइबल का ज्ञान।

मैं व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मेरे मसीही जीवन की आरंभिक अवस्था में ही मुझे औपचारिक बाइबल अध्ययन और इकट्ठे समय बिताने के बीच पाये जाने वाले अंतर को दिखाया। यद्यपि परमेश्वर के वचन को समझने के लिये हमारी विधि में सिर और हृदय दोनों का शामिल होना अर्थात् उनका योगदान महत्वपूर्ण है; तौभी यह समझना महत्वपूर्ण है कि हृदय समर्पण के बिना सिर का ज्ञान आत्मिक वृद्धि की ओर अगुवाई नहीं देगा।

सिर

बाइबल अध्ययनः इसके उद्देश्य और इसकी समस्याएँ

''अपने आपको परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाये और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो'' (2 तीमुथियुस 2:15)। बाइबिल का औपचारिक तौर पर अध्यायन करना और उसकी विषयवस्तु से परिचित होना, अपने आप में एक उत्साहवर्द्धक, उत्तेजनापूर्ण एवं अनिवार्य रूप से प्रत्येक मसीही के लिये समय का व्यय करना है। जब कभी संभव हो, किसी भक्त पासबान या बाइबल शिक्षक की सेवाओं

और शिक्षाओं का पूर्ण लाभ उठायें और बाइबल के उपलब्ध टीकाओं की मदद से मानसिक तौर पर परमेश्वर के वचन से परिचित हों। सूचनाओं की ऐसी प्राप्ति उस समय आपको अत्याधिक सहायता करेगी, जब आप स्वयं को निजी तौर पर ''इकट्ठे समय बिताने'' के लिये अलग करेंगे।

अंततः, सभी पास्टर - शिक्षक लोग परमेश्वर की कलीसिया के लिये उसके वरदान को भाग हैं। किसी पास्टर की सर्वोच्च सेवकाई बाइबल की विभिन्न पुस्तकों की विषय वस्तु, उसके संदर्भ और उनकी परिस्थितियों के बारे में क्रमगत रूप से अध्याय के बाद अध्याय तथा पुस्तक के बाद पुस्तक की शिक्षा विश्वासियों को देना है। उस ढ़ाँचे से किसी पास्टर को अपनी कलीसिया को ईश्वरीय जीवन, आत्मिक संतुष्टि की एक अवस्था तथा नाश हो रही आत्माओं के लिये एक बोझ के बारे में उपदेश देना चाहिये।

मेरे पास मेरे सामने पांच उपदेशों का रिकॉर्ड रखा हुआ है, जिन्हें एक ऐसे ही पास्टर ने बनाया या तैयार किया था। कई वर्ष पहले, पास्टर विलियम स्टिल ने एक अंतर - विश्वविद्यालयीन आध्यात्मवादी विद्यार्थियों के सम्मेलन में इन उपदेशों को प्रस्तुत किया था। स्कॉटलैंड के अबरदीन में एक कलीसिया में पैंतालीस वर्ष से अधिक सेवकाई करने के बाद, उनकी सेवकाई अब तक हमेशा की तरह रोमांचक और महत्वपूर्ण थी। निसंदेह, उसकी पासबानी सेवकाई स्कॉटलैंड की उस कलीसिया में हद में कहीं बहुत दूर तक पहुंच गयी थी। आज भी मसीही धर्म में आये हुए लोगों की एक छोटी सेना तथा ऐसे कई दूसरे लोग, जो उसकी प्रचार करने एवं शिक्षा देने की सेवकाई से प्रभावित हुए थे, विश्व में चारों ओर प्रत्यक्ष रूप से मसीह की सेवकाई कर रहे हैं। पास्टर स्टिल ने उन अंतर विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों को दिये अपने उपदेशों में कहाः

> भेड़ों को भोजन खिलाने के लिये पास्टर या पासबान बुलाया जाता है, चाहे भेड़ें भोजन करना चाहें अथवा न चाहें। उसे बकरों का मनोरंजन करनेवाला अवश्य ही नहीं बनना चाहिये। बकरों का मनोरंजन बकरों को ही करने दें और उन्हें उनकी बकरी भूमि में ही रहने दें। निश्चय ही, आप बकरियों को उनके बकरीपन के लिये बुरे काम करने हेतु प्रोत्साहित करने के द्वारा भेड़ों में नहीं बदलेंगे... सबसे अधिक फलवंत पासबानी कर्तव्य सभी प्रकार की बेमेल भेड़ों को साथ मिलकर रहने में मदद करना है और उन्हें यह दिखाना कि बकरे के समान बने बिना ही संसार में बकरों के बीच किस प्रकार जीवित रहना है।

जब आप पुनः जन्म प्राप्त कर लेते हैं, तब यह अत्याधिक महत्वपूर्ण है कि आप किसी कलीसिया के अंग बने, जहां आप ऐसी विश्वासयोग्य पासबानी सेवकाई के माध्यम से आशीष प्राप्त कर सकें।

दुर्भाग्यवश, आप में से कुछ लोग, जो इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, संभवतः इस प्रकार के पासबानी निर्देश को नहीं जानते। तथापि, अगर आप किसी विश्वासयोग्य पास्टर - शिक्षक की मदद प्राप्त करने में सौभाग्यशाली हैं और आपके लिये बाइबल के विभिन्न टीका उपलब्ध हैं; तो आपको हमेशा विधमान इस खतरे से अवगत रहना चाहिये, जिसमें आपके प्रतिदिन के इकट्ठे समय बिताने में, उस आत्मिक भोजन को जो परमेश्वर आपको देना चाहता है, के खातिर (के बदले में) आपके द्वारा सीखी हुई आपके सिर या दिमाग में एकत्र बातों को आप पूरक बनाने का प्रयास करते हैं।

नहीं, हमें यह महसूस करना चाहिये कि जब हम इकट्ठे बिताये जाने वाले विशेष समय में पवित्र आत्मा के साथ शामिल होते हैं, तब वह जो आत्मिक भोजन हमारे हृदय और जीवन में लागू करता है, उसका स्थान न तो बाइबल का वह ज्ञान ले सकता है, जिसे हम किसी विश्वासयोग्य

पास्टर शिक्षक से ग्रहण करते हैं और न ही हमारे द्वारा किये गये परमेश्वर के वचन का निजी बौद्धिक अध्ययन से हमें प्राप्त होने वाली समझ ले सकती है।

वास्तव में, जिस प्रकार एक बाइबल शिक्षक व्यक्तिगत इकट्ठे बिताने के समय के लिये पूरक नहीं है, ठीक उसी प्रकार व्यक्तिगत इकट्ठे बिताया जाने वाला समय उन सुअवसरों को नज़रअंदाज करने का कोई बहाना नहीं हो सकता, जिन्हें परमेश्वर हमें उसके वचन का अध्ययन करने के लिये प्रदान करता है तथा इस बात का भी बहाना नहीं है कि हम किसी बाइबल - विश्वसी कलीसिया की सेवकाई का भाग या अंग बनने में असफ़ल हो जायें।

चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, आगे दिये गये सुझाव, औपचारिक बाइबल अध्ययन की एक अधिक सफ़ल विधि को विकसित करने में आपकी मदद कर सकते हैं।

बहुत समय पहले, माइल्स कवरडेल ने यह सुझाव दिया था कि इन प्रश्नों का उपयोग परमेश्वर के वचन का एक सहायक अध्ययन आयोजित करने के लिये किया जाये। उसने जो लिखा था, उसका यह भाषांतर हैः

> यह आपको पवित्रशास्त्र को समझने में बहुत अधिक मदद करेगा, अगर आप सिर्फ़ उस बात को नहीं लिखते हैं जिसे कहा गया अथवा लिखा गया; परंतु यह भी किः
>
> -अनुच्छेद किसके बारे में कहता है?
> -अनुच्छेद किसकी ओर संकेत करता है?
> -अनुच्छेद किस समय लिखा गया था?

-अनुच्छेद कहां से लिखा गया था?
-अनुच्छेद किस उद्देश्य से लिखा गया था?
-अनुच्छेद किस स्थिति में लिखा गया था?

अनुच्छेद अपनी पिछली बातों और अगली बातों के प्रति कितना और कैसे अनुकूल है?

जब आप अपने औपचारिक बाइबल अध्ययन में, ऐसे प्रश्नों का स्वाभाविक तौर पर प्रत्युत्तर छेने की आदत बना लेते हैं, तब आप संपूर्ण बाइबल में पाये जाने वाले सत्य का उन अद्भुत बहुमूल्य बातों पर अधिकाधिक आश्चर्य और रोमांच करेंगे, जो पूरे बाइबल में सामंजस्य स्थापित करती हैं। धीरे - धीरे आप परमेश्वर के प्रकाशन में उपलब्ध भविष्यद्वाणी - के खुले हुए विस्तृत दृश्य के प्रति मोहित होंगे, जिसके कुछ भाग पहले ही पूर्ण हो चुके हैं और कुछ भाग अब तक पूर्ण होने के लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जब आपकी आखें आपके अनंत परमेश्वर के प्रति विस्तृत और आश्चर्यजनक रूप से खुलेंगी, तो आपको अत्याधिक आशीष भी प्राप्त होगीः सृष्टि में उसके उद्देश्य; इतिहास में उसका स्थान; उद्धार का उसका सिद्धांत; प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में संसार में उसका आगमन; यहां तक कि इस वर्तमान समय तक आपके और मेरे समान मसीहियों के लिये उसके विस्तृत निर्देश। बाइबल का ऐसा ज्ञान सचमुच मोहक है और प्रत्येक विश्वासी के द्वारा प्रयास एवं परिश्रम के साथ इनका पालन किया जाना चाहिये।

हृदय

इकट्ठे समय बिताना: इसके संशोधन और इसके सुझाव

परमेश्वर की उसके अपनों के लिये यह इच्छा है कि हम आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें (यूहन्ना 4:24), हमारे **हृदय** और **मस्तिष्क** के साथ ये दोनों उसके साथ व्यक्तिगत संगति से जुड़े हैं।

अगर आपका औपचारिक बाइबल अध्ययन, आपको सिर्फ़ बाइबल के एक उद्देश्यपूर्ण अर्थात् वस्तुनिष्ठ ज्ञान के साथ छोड़ता है, तो आपको ऐसे ज्ञान से कम लाभ होगा! वास्तव में, बिना नियमित जीवन - उपयोगिता के मस्तिष्क ज्ञान आज अनेक मसीहियों के साथ एक बहुत बड़ी समस्या है।

दुःखद बात यह है कि ऐसे लोग हैं, जो परमेश्वर के वचन के बारे में बहुत अधिक जानते हैं; परंतु वे उस अद्भुत ज्ञान के प्रकाश में जीवन नहीं बिताते हैं। इसके बजाय, वे बाइबल के अपने ज्ञान को अपने मस्तिष्क या दिमाग के खाली कोनों में बंद कर देते हैं और मूर्खतापूर्ण ढ़ंग से संसार के विभिन्न मार्ग अपना लेते हैं। परमेश्वर के वचन के लिये यह कितनी दुःखद घटना है कि वह समकालीन विचार और जीवन - पद्धतियों या शैलियों के अनुकूल और अनुरूप कभी नहीं होता है।

संसार की धारणा के साथ परमेश्वर के वचन को समझने का प्रयास करना और तब किसी मानवीय संस्कृति के दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के साथ पवित्रशास्त्रों को मिश्रित करने का प्रयास करना, बौद्धिक सच्चाई एवं नैतिक सत्यनिष्ठा के प्रत्येक सिद्धांत का उल्लंघन करना है। प्रभु यीशु मसीह ने हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाने के लिये एक बहुत बड़ी

कीमत चुकायी और परमेश्वर का वचन, निश्चय ही मसीह को ठुकराने वाली पीढ़ी की विचार पद्धतियों के विपरीत होता है।

चूंकि परमेश्वर का वचन किसी मानवीय संस्कृति के कभी अनुरूप नहीं होता है, इसलिये जब हम इस सर्वोच्च इच्छा के साथ बाइबल का अध्ययन करते हैं कि हम परमेश्वर जैसा चाहता है, हम वैसे ही बने, तब वह सचमुच एक क्रांतिकारी जीवन परिवर्तित करने वाला अनुभव होगा! यह सिर्फ एक मस्तिष्क ज्ञान नहीं है, वरन् इस हृदय का शामिल होना है, जिसे परमेश्वर अपने प्रत्येक संतान के लिये आवश्यक समझता है।

भजन संहिता के लेखक ने यह नहीं कहाः ''मैं ने तेरे वचन को अपने **मस्तिष्क** में छिपा रखा है''। उसने यह कहाः ''मैं ने तेरे वचन को अपने **हृदय** में छिपा रखा हैः ताकि तेरे विरूद्ध पाप न करूं'' (भजन संहिता 119:11)। यहाँ तक कि अडोल्फ़ हिटलर ने अपने निंदापूर्ण भाषण में बाइबल से कई उद्धरण कहे, परंतु बाइबल के कुछ पदों से संबंधित उसका ज्ञान न तो उसके निजी नैतिक चयन में सहायक था और न ही उसके अनंत नियति में। यह स्पष्ट है कि उसका ज्ञान उसके हृदय की गहराई तक नहीं पहुंचा था।

परंतु आप यह पूछ सकते हैं कि ''जब दाऊद ने यह कहा, तब उसका क्या तात्पर्य था कि उसने परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में छिपा रखा था?'' निश्चय ही वह माँस के खाली या रिक्त उस अंग के बारे में बात नहीं कर रहा था, जो रक्त को उसकी शिराओं से उसकी धमनियों में भेजता है या भेजा था। वास्तव में, परमेश्वर के वचन को वहाँ कोई नहीं छिपा सकता है! जब दाऊद ने हृदय शब्द का उपयोग किया था, तब उसने अपने व्यवहारिक जीवन को निर्देशित करनेवाले अंतःकरण के केंद्र की ओर संकेत किया था। जब हम परमेश्वर के वचन को अपने अस्तित्व के

केंद्र में छिपने के लिये बाइबल पढ़ते हैं, तब अंतः निवास करने वाले मसीह के सामर्थ के द्वारा परमेश्वर के वचन के शुद्धिकारक, क्षमतादायक और पोषक गुणों और महत्व का निरंतर आनंद उठायेंगे।

जब मुझे पूरे समय के छात्र के रूप में एवं आध्यात्मवाद का औपचारिक अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, तब मैं ने सीखा कि बाइबल संबंधी सत्य को एकत्र या संग्रहित करना, परमेश्वर के साथ अकेले रहकर यह जानने का पूरक नहीं था कि वह अपने वचन के माध्यम से मुझसे क्या कहना चाहता था। मैं ने यह भी पता लगाया कि परमेश्वर के वचन को खुद पर न्याय में बैठने की अनुमति देने की अपेक्षा परमेश्वर के वचन पर न्याय में बैठना आसान था।

कॉलेज के उन दिनों में, हम कक्षा में दिये गये लेक्चर के बारे में अपनी शोख और नटखट परिभाषा के बारे में जब सोचते थे, तब हम हँसते थे। हमने कहाः ''कोई लेक्चर या प्रवचन वह माध्यम है, जिसके द्वारा सामग्री प्रोफ़ेसर के नोट बुक से छात्र या छात्रा के नोटबुक तक बिना सिर और हृदय तक पहुंचे ही स्थानांतरित हो जाती है!

इससे भी अधिक दुःख परिस्थिति यह है कि बाइबल की शिक्षा पास्टर के सिर से कलीसिया के सिर में किसी के भी हृदयमें हलचल किये बिना ही पहुंच जाती है। आप यह स्मरण करें कि परमेश्वर यह स्पष्ट रूप से कहता हैः

> क्योंकि हमें उन्हीं की नाई सुसमाचार सुनाया गया है; परंतु सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा (इब्रानियों 4:2)।

यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की गवाही को जानने और समझने पर ही, परमेश्वर का वचन हमारे जीवन में अपनी ऐच्छिक आशीष लायेगा। यिर्मयाह

ने कहाः यदि मैं कहूं, मैं उसकी चर्चा नहीं करूँगा न उसके नाम से बोलूँगा, तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग हो, और मैं अपने को रोकते - रोकते थक गया पर मुझ से रहा नहीं जाता है (यिर्मयाह 20:9)। आज अनेक विश्वासियों के जीवन में परमेश्वर के वचन के बारे में ऐसे एक प्रज्वलित दृढ़ निश्चय का अभाव पाया जाता है। सिर और हृदय अर्थात् मस्तिष्क व दिल के बीच में एक यर्थाथ संबंध का निर्माण नहीं किया गया है - परमेश्वर की आवाज तथा विश्वासी के जीवन के मध्य कोई संबंध नहीं बनाया जाता है। इसके परिणाम स्वरूप, हम क्या जानते हैं और हम क्या करते हैं - इनके बीच बहुधा बहुत थोड़ा पारस्परिक संबंध पाया जाता है।

जब बाइबल की शिक्षा सचमुच आपके हृदय में हलचल मचाती है, तब यह अवश्य ही आपके जीवन को परिवर्तित करेगी! जब ऐसा होता है, तब आप स्वयं को मानवीय आश्रय पद्धतियों पर बहुत कम निर्भर होता हुआ पायेंगे; जैसे कि पारिवारिक परामर्शदाताओं पर निर्भर होना और स्वच्छतापूर्वक आयोजित विभिन्न सम्मेलनों पर निर्भर होना इत्यादि; क्योंकि आपको पता चल जायेगा कि परमेश्वर ने किस प्रकार आपके खातिर उसकी इच्छानुसार व्यक्तिगत रूप से उन उपयुक्त प्रतिज्ञाओं को उसके वचन में निर्धारित कर रखा है। इसके पश्चात्, आप स्वयं में अंतःनिवास करनेवाले पवित्र आत्मा के सामर्थ से प्रभु यीशु मसीह की स्पष्ट आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम हो जायेंगे।

समय - समय पर, मेरे उपदेश देने के बाद, कलीसिया का एक नम्र सदस्य मुझे यह कह कर प्रोत्साहित करने का प्रयास करता हैः ''आपने सचमुच मुझे कुछ ऐसा दिया है, जिसके बारे में मैं सोच सकता हूँ''। जब मैं यह सुनता हूँ, तब मुझे यह मालूम हो जाता है कि मेरी आशा के अनुरूप

मेरे प्रवचन या उपदेश ने अपने उद्देश्य को वास्तव में पूर्ण नहीं किया है! परमेश्वर के वचन का एक बौद्धिक उत्प्रेरक होने के नाते सराहनीय होने तथा एक जीवन - परिवर्तक सत्य के रूप में उसके लागू किये जाने के बीच एक अंतर होता है। सचमुच, विभिन्न प्रवचनों और उपदेशों को लोगों को ऐसी चीज़ प्रदान करना चाहिये, जिसके अनुसार वे कार्य करें न कि सिर्फ सोचें!

इसी प्रकार, अगर इकट्ठे समय बिताना, विश्वास और / अथवा आज्ञाकारिता, पाप के अंगीकार या आराधना की एक अवस्था का एक सक्रिय प्रत्युत्तर देने की ओर अगुवाई नहीं करता है, तो वह एक फलदायी या फलवंत साथ समय बिताना साबित नहीं होता है!

दूसरी ओर हम यह देखते हैं कि जब कभी परमेश्वर के किसी संतान का सिर उसके वचन के ज्ञान से भर जाता है और उसका हृदय पवित्र आत्मा की कोमल गति के साथ धड़कता है या हलचल करता है, तब वह उद्धारकर्ता की जीवित संगति का सचमुच आनंद उठायेगा। यहाँ तक कि आज जब कभी मैं एक अतिथि प्रवक्ता के रूप में विभिन्न बाइबल कॉलेजों में जाता हूँ, तब मैं अपने विद्यार्थियों को यह बताता हूँ:

आप यहाँ सिर्फ बाइबल को जानने के उद्देश्य से बाइबल का अध्ययन करने के लिये नहीं आये हैं! आप यहाँ बाइबल के परमेश्वर को जानने के उद्देश्य से बाइबल का अध्ययन करने के लिये आये हैं!

विखासियों में आत्मिक आपरिपक्वता कुछ दक्ष वाक्याशों और बाइबल संबंधी रूप रेखाओं की दुर्बलता की मूक गवाही है। जब आप किसी भी बात को परमेश्वर को और खुली बाइबल को हटाकर परमेश्वर

के साथ व्यक्तिगत तौर पर अकेले रहने के अद्‌भुत व अद्वितीय अनुभव की जगह लेने देते हैं तब वह परमेश्वर के साथ आपकी घनिष्ट और व्यक्तिगत संगति को समाप्त कर देगी - और यहां तक संभव है कि नष्ट कर देगी।

परमेश्वर के साथ सच्ची संगति उसी समय पायी जाती है, जब मसीही व्यक्ति परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति के पारदर्शक प्रकाश का प्रत्यक्ष सामना करता है। ऐसा प्रकाश अत्याधिक प्रकट या प्रकाशित करने वाला होता है और इसे आपके तथा आपके स्वर्गीय पिता के बीच खुले संचार की एक सच्चाई एवं निर्भीकता की आवश्यक्ता होती है। अगर परमेश्वर के वचन को पढ़ने पर, आपका हृदय, परमेश्वर के सत्य के प्रति आज्ञाकारिता के साथ उत्तर देता है, तो वह सत्य आपके प्राण के लिये पोषण अर्थात् पोषक तत्व बन जायेगा और आप अपने परमेश्वर के ज्ञान एवं उसकी बुद्धि में आगे बढ़ेंगे। भजन संहिता का लेखक यह गवाही देता हैः तेरे प्रकाश में, हम प्रकाश देखते हैं (भजन संहिता 36:9)। यह पुरानी कहावत अब भी सत्य है:

> ज्योति की आज्ञा मानना, अपेक्षाकृत अधिक प्रकाश लाता है;
> ज्योति की आज्ञा नहीं मानना, अपेक्षाकृत अधिक गहरी अंधेरी
> रात लाता है।

मैं इस बात के प्रति निश्चित् हूँ कि जैसा मैंने जान लिया है, वैसा ही आपने भी जान लिया है कि अपने निजी सुझाव पर कार्य करने की अपेक्षा किसी दूसरे व्यक्ति को सुझाव देना अधिक आसान है। तथापि, प्रभु यीशु, जिसका वर्णन यशायाह ने एक अद्‌भुत युक्ति करने वाले अर्थात् सलाह देने वाले के रूप में किया है (यशायाह 9:6), अद्वितीय है; क्योंकि

वह न सिर्फ़ सुझाव देता है; परंतु वह हमें उस सुझाव पर कार्य करने की क्षमता प्रदान करनेवाला भी बनता है।

प्रत्येक सुबह आपका ''साथ समय बिताना'' आपको इस बात के खातिर तैयार करने में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है कि आप उन बातों को सामना करें, जो शेष दिन में आपकी प्रतीक्षा करती हैं। जब परमेश्वर के वचन को पढ़ने के माध्यम से वह आपको अपना सुझाव देता है, तब आप भी इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं, कि आपके सामने जो कुछ आये, उसके लिये प्रभु यीशु भी आपकी अंतःनिवासकरने वाली पर्याप्ति और आपका अगुवा होगा।

आत्मिक जाँच - पड़ताल

1.बाइबल पढ़ने पर, क्या मेरा हृदय उतनी ही तत्परता से उत्तर देता है, जितनी तत्परता से मेरा सिर उत्तर देता है?

2.क्या मेरे प्रार्थना करने के दौरान, मैं परमेश्वर के साथ सचमुच दो - तरफ़ा संचार करता / करती हूँ?

3.क्या मेरे आत्मिक जीवन में, मैं प्रथम सम्मति किसी व्यक्ति से प्राप्त करता / करती हूँ या परमेश्वर से (उसके वचन के माध्यम से)?

(चेतावनी : वे उसकी युक्ति के लिये नही ठहरें (भजन संहिता 106:13)।

4.क्या मेरी मसीही सेवा में, दूसरों के लिये मेरा सुझाव एक ऐसे हृदय से आता है, जो परमेश्वर के प्रेम से प्रज्वलित है और एक ऐसे मस्तिष्क या मन से आता है, जो उसके वचन से भरपूर है? (चेतावनीः वे उसके विरुद्ध युक्ति करते गाए ... (भजन संहिता 106:43)।

इस तरह के पाप

मैं अनगिनत पापों का अंगीकार करता हूँ;
अत्याधिक पाप से
पूर्ण जीवन का आराधना के समय सांसारिक चिंताएँ;
महान् कार्य में स्वार्थपूर्ण उद्देश्य;
जब परमेश्वर पास से गुजर रहा हो, तब घमंड;
जब अंधकार में आत्माएँ मर रही हों, तब आलस्य;

परमेश्वर की अच्छाई का स्वाद चखना,
तब विषैले भोजन के लिये दांत कुतरना,
आसमानों की आधारशिला पर
जीवों को प्राप्त करने की लालसा करना।

इस तरह के पाप मेरे हृदय को धोखा देते हैं,
तुम - जो केवल उन्हें जानते हो, दुःखी होते हो!
ओह, मैं कितनी हल्की नींद सोया,
प्रतिदिन की गलतियों के लिये पश्चाताप के बिना,
पवित्र परिश्रम के लिये तरोताजगी से जागा;
मेरे शरीर में पीड़ा के दाग के साथ;
फिर भी तुम्हारा विश्राम असफ़ल नहीं होता है,
अब तक तुम्हारा चंगाई देने वाला स्पर्श निरर्थक है,
हे प्रभु, आपके लिये मेरे दुःख पर दृष्टि करें,
ओह मुझ पर दया कर।
हे पिता, अपने पुत्र के द्वारा क्षमा कर,
आपके पवित्र आत्मा के विरूद्ध, जो पाप मैं ने किये हैं ।

- विलियम मेक्लेर्डी बंटिंग (1805-1866) आर.ए.बी. द्वारा लिया गया।

अध्याय 3

प्रार्थनापूर्ण तैयारी

जब पहली बार, मेरा हृदय परिवर्तन हुआ था, तब मुझे बाइबल का बहुत थोड़ा ज्ञान था। परंतु मैं ने शीघ्र ही जान लिया कि जब मैं ने इसके पन्ने पलटे; तब वास्तव में, मैं **परमेश्वर का वचन** पढ़ रहा था। मैं आज भी इस बात से आनंद महसूस करता हूँ कि जब मैं प्रभु यीशु के वचन को पढ़ता हूँ, तब प्रभु यीशु मेरे हृदय से बात करना जारी रखता है।

यहाँ तक कि एक नया मसीही होने के नाते भी, मुझे यह शिक्षा दी गयी थी कि जब मैं अपनी बाइबल खोलूं, तब पवित्र आत्मा उसे मेरे हृदय के लिये जीवित बनाने की इच्छा रखता है। इसलिये, मैं प्रायः अपने ''साथ समय बिताने'' का प्रारंभ एक छोटी प्रार्थना करने के द्वारा करता था, जिसे मैं ने एक कोरस के रूप में सीखा थाः

हे परमेश्वर का पवित्र आत्मा, तू मेरा शिक्षक हो,
प्रभु यीशु मसीह से संबंधित बातों को मुझ पर प्रकट कर,
मेरे हाथ में अद्‌भुत चाबी रख
जो मुझे खोले और आज़ाद कर दे।

प्रभु यीशु मसीह ने स्वर्ग में अपने पिता के पास जाने के लिये अपने चेलों को छोड़ने से पहिले उनसे यह प्रतिज्ञा कीः जब वह अर्थात् सत्य का

आत्मा आयेगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बतायेगा; क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा; परंतु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आनेवाली बातें तुम्हें बतायेगा (यूहन्ना 16:13)। अंततः, केवल एक शिक्षक है - पवित्र आत्मा।

यदि पवित्र आत्मा हमारे जीवन में कार्य करने के लिये आज़ाद नहीं है, तो हमारा, परमेश्वर के वचन को पढ़ना नीरस और रिक्त रहेगा।

जॉन वेस्ली (जिसे परमेश्वर ने अठ्ठारहवीं सदी के दौरान सामर्थ के साथ ब्रिटिश जागृति उपयोग किया था) भी अपने साथ समय बिताने'' का मूल्य जानते थे। उन्होंने बुद्धिमानी के साथ यह पाठ सीख लिया था कि हम सब प्रतिस्पर्धा करने के लिये अच्छा कर सकते हैं। वेस्ली ने संध्याकाल में जल्द ही बिस्तर पर सोने के लिये अपने आपको अनुशासित कर लिया था; ताकि वे सुबह हर संभव जल्द से जल्द उठ सकें। हाल ही में, मैं ने अकेले घुटने पर, उसी प्रार्थनास्टूल पर प्रार्थना की, जिस पर वेस्ली अपने प्रभु से 4.00 बजे सुबह भेट करते थे! मैं उस कक्ष में भावुक हो उठा, जब मैं ने उनकी डायरी से निम्नलिखित उद्धरण पढ़ाः ''मैं अकेला बैठता हूँ... केवल परमेश्वर यहाँ है। उसकी उपस्थिति में, मैं खोलता हूँ मैं उसकी पुस्तक पढ़ता हूँ। और मैं जो पढ़ता हूँ, वही पढ़ाता हूँ।''

प्रेरित यूहन्ना ने पुनः जन्म पाये हुए विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिये, परमेश्वर के वचन के माध्यम से उनके हृदय को स्पर्श करने के लिये पवित्र आत्मा की भरपूरी के बारे में उन्हें आश्वासन दिया कि यदि पवित्रशास्त्रों को समझने में उनकी मदद करने के लिये उनके पास दूसरे में उनकी मदद करने के लिये उनके पास दूसरे लोग न भी हों; तौभी पवित्र आत्मा उनकी मदद करेगा। उसने उन्हें यह लिखाः और तुम्हारा वह

अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुममें बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं, कि कोई - तुम्हें सिखाए) वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हे सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीः और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो (1 यूहन्ना 2:27)। जब आप परमेश्वर की पुस्तक को पढ़ते हुए पवित्र आत्मा के प्रकाशन पर जानबूझकर निर्भर रहते हैं, तब वह आपके हृदय के लिये उसके सत्य को जीवित बनायेगा।

यदि आप एक अत्याधिक परिपूर्ण तथा नियमित साथ समय बिताने की सचमुच इच्छा रखते हैं, तो एकांत जगह पर जाने का प्रयास करें और अपनी बाइबल खोलकर परमेश्वर के साथ परस्पर बात करने के लिये एक विशिष्ट समय अलग निर्धारित कर लें। यद्यपि परमेश्वर के साथ अकेले इस प्रकार समय बिताने की संभावना, बहुधा आपके हृदय को आनंदपूर्ण अपेक्षा में रोमांचित करेगी; तौभी ऐसे दिन भी होंगे या आयेंगे, जब आपका परिवार या आपका व्यवसाय अर्थात् व्यापार अथवा अन्य रूचिकर बातें अपेक्षाकृत बड़े होने की चेष्टा में आपका ध्यान आकर्षित करेंगे और परमेश्वर के साथ अकेले में समय बिताना आपके लिये कठिन बना देंगे। यदि आप प्रभु यीशु मसीह के प्रेम और ज्ञान में विकसित होना चाहते हैं या बढ़ना चाहते हैं, तो उन ऐसे दिनों में आपको सच्चे अनुशासन की आवश्यक्ता होगी। यह स्मरण रखें कि नज़र अंदाज़ की गयी बाइबल ठीक वैसी ही निरूपयोगी है, जैसे कि मानो आपके पास एक बाइबल नहीं थी।

जिस प्रकार, इस्त्राएलियों के प्रतिज्ञा किये हुए देश में जाने के दौरान, उन्हें अपने शारीरिक पोषण एवं सुरक्षा के खातिर परमेश्वर के द्वारा स्वर्ग से प्रदान किये गये मन्ना को एकत्र करने या बटोरने के लिये प्रति दिन तैयारी करना पड़ता था, उसी प्रकार हमें परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने के लिये स्वयं को तैयार करना आवश्यक है।

पहला: जब आप परमेश्वर के साथ अकेले रहने के लिये अपनी बाइबल खोलते हैं, तब वास्तव में, आपके घुटनों पर झुकना आपके लिये सहायक हो सकता है।

दूसरा: जब आप उसके पास आते हैं, जो अनंत प्रकाश है, तब उसकी पवित्र उपस्थिति में आपके हृदय को खोलना हमेशा अनिवार्य होता है। आप उससे कुछ नहीं छिपा सकते हैं; इसलिये छिपाने का प्रयास क्यों करें?

एक बार, जब आपने स्वयं को परमेश्वर के साथ आमना - सामना करने के लिये तैयार कर लिया है, तब बाइबल दिव्यमान सच्चाई के साथ सजीव होगी और आप यह जानना आरंभ करेंगे कि परमेश्वर का वचन आपके सिर से आपके हृदय तक किस प्रकार जाता है।

अपने घुटने टेकें

जीवित संगति एक अहंकारी आत्मा के साथ नहीं रह सकती है।

हम बाइबल में ऐसे अनेक भक्त लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जिन्होंने परमेश्वर के प्रति अपने श्रद्धायुक्त भय और अधीनता को घुटने टेकने की दशा या अवस्था में होकर प्रकट किया है। यद्यपि विधिवत् आराधना करने वाले मसीही एवं अभ्यारत् मुस्लिम लोग अपनी सार्वजनिक प्रार्थनाओं में घुटने टेकने की आदत डालते हैं, तौभी ऐसी अवस्था परमेश्वर के साथ एक जीवित संगति का संकेत अनिवार्य रूप से नहीं देती है। तथापि, जब हम अपने अनंत परमेश्वर और सृष्टिकर्ता के समीप आते हैं, तब अगर हम उसके सामने घुटने टेकते हैं, तो हमारे दिमाग और दिल की प्रवृत्ति को बहुत मदद मिल सकती है।

जब प्रभु यीशु मसीह, गतसमनी के बगीचे में, अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने की भयावह घड़ी पर पहुंच रहे थे, तब उन्होंने यह देखा कि उसके चेले गहरी नींद में सो रहे थे। उनसे कुछ दूर चले जाने के बाद, यीशु ने घुटने टेके और प्रार्थना की (लूका 22:41)। यीशु अपने स्वर्गीय पिता के साथ अकेला था। वहां उसने प्रार्थना करने के लिये **घुटने टेके**। इसी तरह, जब हम परमेश्वर के साथ अकेले में होने के लिये स्वयं को अपने मित्रों और अपने परिवार से अलग करते हैं, तब हम भी परमेश्वर के प्रति अपने श्रद्धायुक्त भय तथा उसकी इच्छा के प्रति अपने समर्पण को प्रकट करने के लिये प्रार्थना के दौरान घुटने टेकने से सहायक पा सकते हैं।

जब पौलुस प्रेरित, अपनी सार्वजनिक सेवकाई को समाप्त करने जा रहा था, तब उसने उस कलीसिया को अलविदा करने के लिये सतर्कता बरती, जिसे उसने इफ़िसुस में स्थापित किया था। हमने अभी पढ़ा कि उसने घुटने टेके और उन सबके साथ प्रार्थना की (प्रेरितों के काम 20:36)। एक दूसरे समय पर समुद्र के किनारे, पौलुस ने शिष्यों और उनकी पत्नियों तथा बच्चों को अलविदा कहा। पवित्र शास्त्रों में यह वृतांत लिखा है कि उन्होंने समुद्र के किनारे घुटने टेककर प्रार्थना किया (प्रेरितों के काम 21:5)। आज अनेक लोग यह सोचते हैं कि सार्वजनिक स्थान पर महिलाओं और बच्चों का घुटने टेककर प्रार्थना करने का हृदय दर्शकों को ग़लतफ़हमी में डालेगा अर्थात् दर्शक उसका ग़लत अर्थ लगायेंगे। एक दिन जब हमें कट्टर पंथी होने के आरोप से डर लगता है, तब हम भी प्रायः किसी निजी प्रार्थना सभा में सामान्य शांति या विश्राम पाने का प्रयास करते हैं। यह स्पष्ट है कि पौलुस के दिनों में महिलाओं और बच्चों के साथ शिष्यों को घुटने टेकने में ऐसी कोई समस्या नहीं थी। चाहे हम किसी सार्वजनिक प्रार्थना सभा में हैं अथवा। परमेश्वर के साथ अकेले हैंः हमें भी

सार्वजनिक जगह पर घुटने टेककर प्रार्थना करने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिये।

तथापि, यह याद रखना चाहिये कि प्रार्थना करने समय चाहे हम खड़े हों, बैठे हों या चलते हों; परमेश्वर के साथ हमारी निजी संगति के बारे में हमारे मन या दिमाग की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण है। हाँ, जब हम प्रार्थना करते हैं, तब बाइबल के अनुसार हमें सही मानसिक प्रवृत्ति अपनाना चाहिये; क्योंकि परमेश्वर तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है। इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आयेगाः (याकूब 4:6-8)।

कुछ शारीरिक समस्याओं के कारण, कुछ लोगों के लिये लम्बे समय की लम्बी प्रार्थना में घुटने टेकना, असंभव हो सकता है। यह खुशी की बात है कि परमेश्वर हम में से प्रत्येक के हृदय को देखता है। निश्चय ही, उसके लिये उसके लिये हमारी दशा या अवस्था की अपेक्षा हमारे हृदय की प्रवृत्ति अधिक महत्वपूर्ण है। परंतु जो हृदय की प्रवृत्ति अधिक महत्वपूर्ण है। परंतु जो लोग सक्षम हैं, उनके लिये घुटने टेकना, इस तथ्य से संबंधित हमारी समझ को पैना एवं तीक्ष्ण बनाने का एक अत्याधिक सहायक तरीका है कि जब हम प्रार्थना करते हैं, तब जिस तरह एक मित्र अपने दूसरे मित्र के साथ प्रार्थना करता है, उसी तरह, हमें अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ बातचीत करने का आदरयुक्त सुअवसर प्राप्त होता है! हम में से प्रत्येक के लिये बाइबल संबंधी सबसे अधिक महत्वपूर्ण आदेश यह हैः परमेश्वर की दृष्टि में स्वयं को दीन और नम्र बनाओ और जब हम इस आज्ञा का प्रत्युत्तर देते हैं, तब परमेश्वर एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा को जारी रखता हैः तो वह तुम्हें शिरोमणि बनायेगा (याकूब 4:10)।

अपना हृदय खोलें

जीवित संगति हमेशा परमेश्वर की दया के सिंहासन में आरंभ होती है, जिसे नये - नियम के शब्दों में कहते हैं कि उस क्रूस पर जहाँ यीशु मरा था।

हाँ, यहाँ तक कि क्रूस पर प्रभु यीशु के मरने से पहले, परमेश्वर ने अपनी महान दया और अपने महान् प्रेम में, पाप की चुकायी गयी कीमत के रूप में अपने निर्दोष पुत्र की मृत्यु को ग्रहण करने का चयन कर लिया था; ताकि हठी मनुष्य जाति उसके साथ अपनी संगति को पुनः नयी बनाने में सक्षम हो सके। इसलिये, हमारे उद्धारकर्त्ता के क्रूसीकरण के बहुत समय पहिले, परमेश्वर ने यह घोषित किया कि वह अपने संतानों के साथ दया के सिंहासन पर मुलाकात करेगाः और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएँ मुझको तुझे देनी होंगी, उन सबके विषय में प्रायश्चित के ढ़कने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षी पत्र के संदूक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूंगा (निर्गमन 25:22)।

आज, हमारे पाप के खातिर बलिदान, इतिहास का भाग है; प्रभु यीशु मसीह का बहुमूल्य लोहू हमारे बदले में हमारे खातिर बहाया गया है और इस प्रकार यीशु की मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर के साथ परस्पर बातचीत करने के लिये हमारे खातिर एक नया और जीवित मार्ग प्रदान किया गया। परमेश्वर का अपरम्पार प्रेम हमें आनंद के साथ आश्चर्य करने के लिये सक्षम बनाता हैः इसलिये आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यक्ता के समय हमारी सहायता करे (इब्रानियों 4:16)।

दया का अर्थ है कि परमेश्वर हमें वह नहीं देता है, जो

हमें मिलना चाहिये; अनुग्रह का अर्थ है कि परमेश्वर हमें वह देता है, जिसे पाने के योग्य हम नहीं है। दया और अनुग्रह के हमारे परमेश्वर के साथ संगति में चलना कितना अद्‌भुत है।

प्रत्येक तूफ़ानी हवा से, जो बहती है,
दुःख के प्रत्येक उठने वाले ज्वार से, वहां एक शांति है,
एक निश्चित् एकांत आश्रम है;
उसके नीचे दया का सिंहासन पाया जाता है।

ऐसी एक जगह है, जहाँ यीशु ने लोहू बहाया,
एक ऐसी जगह है,
जो मेरे लिये मीठी और प्यारी है;
वह है, लोहू से खरीदा गया दया - सिंहासन।

वहाँ एक जगह है, जहां आत्माएँ मिश्रित होती हैं,
जहाँ एक मित्र अपने मित्र यीशु के साथ संगति करता है;
यद्यपि वे दूरी पर अलग - अलग हैं, तौभी विश्वास से वे मिलते हैं।
एक सामान्य दया - सिंहासन के आसपास।

आह! हम बिखरकर मदद के लिये उड़ सकते हैं,
जब हम परीक्षा में हैं, अकेले हैं, निराश हैं;
अथवा नर्क का स्वामी कैसे पराजित होगा,
क्या दुःख सहने वाले संतों के लिये दया - सिंहासन नहीं था?

वहाँ हम गिद्ध के पंखों पर बैठकर उड़ते हैं,
और समय एवं बोध का कोई अस्तित्व मालूम नहीं पड़ता हमारी
आत्माओं का अभिवादन करने के लिये स्वर्ग नीचे उतरता है,
और दया के सिंहासन को महिमा मुकुट पहनाती है

एच. स्टोवेल

एक अशुद्ध विवेक के साथ जीवित संगति नहीं रह सकती है।

एक बालक, जो किसी परिवार में पैदा होता है अर्थात् जन्म लेता है, वह अपने माता - पिता का पुत्र सदा बना रहता है। वह कभी ''बिना जन्म'' नहीं रह सकता है। परंतु अगर वह बालक नटखट है, तो ऐसे समय आयेंगे, जब उसके माता - पिता के साथ उसका खुला संचार टूट जायेगा। संबंध बरकरार या स्थायी रहता है; परंतु संगति निश्चय ही नष्ट हो जाती है! यह एक बड़ी दुःखद बात है।

इस बात के ज्ञान से सराबोर होना, हमारे लिये एक अद्भुत बात है कि जिस क्षण हमारा पुनः जन्म हुआ था, उस क्षण हमारे स्वर्गीय पिता के साथ हमारा एक अनंत संबंध स्थापित हुआ था। यदि हम सच्चाई के साथ प्रभु यीशु मसीह को अपने हृदय में ग्रहण करते हैं, तो हम परमेश्वर के संतान बन जाते हैं; एक ऐसा संबंध, जो अनंतकाल तक बना रहेगा। तथापि, जब हम पाप करते हैं, तब हमारे स्वर्गीय पिता के साथ हमारी संगति दुःखद रीति से नष्ट हो जाती है।

हम अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण, हमारे जीवन पर परमेश्वर की मुस्कान की समान आशीष को फिर कभी महसूस नहीं करेंगे, जिसका आनंद हमने पहले उठाया था। इसके साथ ही यह पारदर्शक संगति टूट जाती है, चाहे वह थोड़े समय के लिये हो अथवा लम्बे समय के लिये हो, निश्चय ही परमेश्वर या उसकी फ़िक्र की कमी के लिये आरोप के रूप में नहीं लगायी जा सकती है। दरार हमेशा हमारे अशुद्ध और भष्ट विवेक के कारण पड़ती है; परमेश्वर के साथ संगति में आने वाली किसी भी बाधा या अवरोध का कारण एकमात्र हम हैं।

एक अशुद्ध विवेक : एक बार जॉन बनियान ने कहाः ''पाप मुझे

बाइबल से अलग करेगा, और बाइबल मुझे पाप से अलग करेगी''। जब किसी व्यक्ति ने पवित्र आत्मा को दुःखित किया है और अपने जीवन में जानबूझकर पाप को अपना लिया है या ग्रहण कर लिया है, तो वह परमेश्वर के वचन के खातिर अपनी भूख को भी गँवा देगा। किसी, मसीही के लिये दृढ़ और अपेक्षित विश्वास के खातिर एक शुद्ध विवेक रखना बिल्कुल अनिवार्य है। खासकर उस समय, जब वह परमेश्वर के वचन के प्रति अपना मन फिराता है। बाइबल यह बताती हैः और विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिये कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफ़ल देता है (इब्रानियों 11:6)।

परंतु अगर हम अपने पाप को नज़रअंदाज़ करने में लगे या अड़े रहते हैं, तो जब हम बाइबल पढ़ेंगे, तब हमारा विश्वास तृप्त होगा; क्योंकि हमारा विवेक पवित्र आत्मा की आवाज की ओर कभी ध्यान नहीं लगायेगा।

एक शुद्ध विवेक : हमारे पाप करने के बाद, परमेश्वर के साथ संगति को पुनः नयी बनाने के लिये यह आवश्यक है कि हमारा अपराधी एवं पाप के बोझ से दबा विवेक शुद्ध हो जाये। उसे अपराध के इस बोझ से आजाद करने के लिये, एक भ्रष्ट मसीही को परमेश्वर के सामने अपने पाप के अंगीकार में अपना हृदय खोलना चाहिये। प्रेरित यूहन्ना ने लिखाः

> ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है (1 यूहन्ना 1:9)।

अपनी बाइबल के उस भाग में, मैं ने एफ. डब्लू. क्रूमेकर के द्वारा की गयी एक प्रार्थना को लिखा है। जब मैं अपनी निजी असफ़लता और

अपने पाप के प्रति सजग होता हूँ, तब मैं परमेश्वर की दया के सिंहासन के सामने उन विशिष्ट पापों को नाम देने अर्थात् उनकी नाम सहित गणना करने का प्रयास करता हूँ। उसके बाद, मैं परमेश्वर के लिये अपने निजी अंगीकार के आधार पर, कभी - कभी क्रूमेकर की प्रार्थना करता हूँः

> हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मैं ने आपके विरूद्ध नया पाप किया है और मैं उसके कारण दुखित हूँ। मैं खुद पर आरोप लगाता हूँ और खुद को दोषी ठहराता हूँ; परंतु आपकी दया महान् है और इस कारण मैं भरोसा करता हूँ। पश्चाताप के बलिदान के यीशु के लोहू को मेरे विवेक पर छिड़किये और विश्वास के द्वारा मुझे मेरे पाप के खातिर उस कष्ट के लिये उपयुक्त या अनुरूप बनने में मेरी न मदद करें, जिसे आपने मेरे लिये सहा है।

हम बंडलों या पुलिंदों में पाप नहीं करते हैं; अतः हमें उन्हें अपराध के एक सामान्य अंगीकार के रूप में मानने का प्रयास क्यों करना चाहिये?'' हमारे सभी पापों'' के लिये एक ही बार में परमेश्वर से क्षमा मांगना, पश्चाताप की एक सच्ची अभिव्यक्ति करने और परमेश्वर की इच्छा में कदम पीछे - करने के बजाय अपने घमंडी हृदय के खातिर आसान मार्ग ढूंढ़ने के समान है। इस प्रकार सब बातों अर्थात् गलतियों को लपेटने वाला अंगीकार, विवेक को उसमें मौजूद अपराध को सचमुच साफ़ करने में बहुत थोड़ी मदद करता है। जब पवित्र आत्मा, दिमाग में कोई ऐसी बात को लाता है, जिसे पाप के रूप में जाना जाता है, तब हमें अनाज्ञाकारिता के उस कार्य को विशिष्ट नाम देना चाहिये, जिसे बाइबल में एक पाप का वर्णन या उल्लेख करने के लिये प्रयुक्त किया जाता है - सफेद झूठ नहीं; परंतु एक झूठ; कल्पना करनेवाला एक मन नहीं; परंतु हिंसक या प्राणधातक घृणा से भरा हुआ एक हृदय।

क्योंकि हमारी समस्या यथार्थ अपराध है न सिर्फ़ एक अपराधी भावना। जब हम परमेश्वर की उपस्थिति के प्रकाश में आते हैं, तब वहां किसी प्रकार का मनोवैज्ञानिक दोहरा वार्तालाप या मानवीय बहाना नहीं होना चाहिये। जब आप नम्रतापूर्वक और सच्चाई के साथ परमेश्वर के सामने अपने पाप का नाम लेते हैं, तब वह अपनी महान् दया में आपके अंगीकार का प्रत्युत्तर देगा। परमेश्वर का अद्‌भुत अनुग्रह ऐसा है।

दाऊद के द्वारा उसके निजी दुःखद पाप का अंगीकार होने या करने के बाद, वह इस बात पर ध्यान देते हुए आनंदित हुआः हे परमेश्वर अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे (भजन संहिता 51:1)। भजन संहिता 51 में लिखा वृतांत यह दर्शाता है कि जब दाऊद ने परमेश्वर की दोहाई दी, तब यह टूटा हुआ और हृदय - उद्विग्न व्यक्ति न सिर्फ़ अपने अंगीकार में सच्चा था; परंतु वह अपने पश्चाताप में भी सच्चा था। यदि आप पश्चाताप करते हैं (यह स्वीकार करते हैं कि आपने परमेश्वार के मार्ग पर चलने के बजाय अपना मार्ग ले लिया है, और अब उसके शुद्ध एवं पवित्र मार्ग पर लौटने की इच्छा रखते हैं) तथा इसके बाद, अपने जाने - पहचाने पापों का नम्र और सच्चा अंगीकार करते हुए परमेश्वर के सामने उन्हें विशेष नाम देते हैं, तो आप भी उसकी करूणा की बहुतायत में आनंद मनायेंगे। सिर्फ़ तभी आपका विवेक शुद्ध होगा; ताकि आप एक बार फिर पवित्र परमेश्वर के साथ संगति को पुनः स्थापित करने के योग्य हो सकें।

जब आपका विवेक प्रेमी परमेश्वर के दयापूर्ण कार्य के कारण शुद्ध किया गया है, तब आप यह पायेंगे कि आपके पास प्रार्थना में एक नयी निर्भीकता है :

> इसलिये हे भाइयो, जबकि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नये और

> जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है तो आओ; हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं (इब्रानियों 10:19, 22)।

हाँ, परमेश्वर के सामने सच्ची निर्भीकता एक शुद्ध विवेक से प्रवाहित होती है। तत्पश्चात् एक पारदर्शी सच्चा हृदय, ऐसे निर्भीक विश्वास को मुक्त करेगा, जो परमेश्वर के साथ जीवित संगति का पूर्ण आनंद उठाने के लिये एक वास्तविक पूर्व शर्त है।

जब आप यह जानते हैं कि आपका हृदय शुद्ध है तो अतीत के पाप की दीन-हीन करने वाली स्मृति आपके विवेक को फिर कभी परेशान करने के योग्य नहीं होगी। वास्तव में, शैतान आप पर दोष लगाने का प्रयास करेगा; परंतु अपने प्रबल आक्रमणों से विघ्न डालने के लिये उसके प्रति आपका उत्तर आपके अपराधी विवेक के प्रति परमेश्वर के उत्तर के समान होना चाहिये; वही यीशु के बहुमूल्य लोहू का सामर्थ है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, संत लोग, जिन पर शैतान ने पापों का आरोप लगाया था, उन्हें परमेश्वर ने क्षमा किया था तथा उन्हों ने उस बहुमूल्य लोहू के प्रबल सामर्थ को समझा था। उनके बारे में, यह लिखा गया हैः और वे **मेम्ने के लोहू** के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण, ''उस'' पर जयवंत हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली (प्रकाशितवाक्य 12:11)। (यहाँ ''उस'' शब्द का तात्पर्य शैतान से है, जो भाइयों पर दोष लगानेवाला है)। उन्होंने न सिर्फ़ शुद्ध विवेक की आशीष का आनंद उठाया; परंतु उन्होंने एक शांत विवेक का रहस्य भी जान लिया था। हालिलूय्याह!

प्रायः यह एक छिपा हुआ कारण है कि लोगों में परमेश्वर के वचन का पोषण प्रदान करने वाले दूध को प्राप्त करने की इच्छा क्यों नहीं पायी

जाती है? क्या आपको कभी ऐसा ज्वर था जिसके कारण आपकी भूख खत्म हो गयी हो? चाहे भोजन कितना भी स्वादिष्ट रहा हो, उसे खाने में आपकी कोई रूचि या दिलचस्पी नहीं थी। जिस प्रकार पोषक तत्वों से पूर्ण भोजन आपके लिये आपकी बीमारी के दौरान आकर्षक नहीं हो सकता है, उसी प्रकार अगर आपकी आत्मिक भूख ग़लत धारण से तृप्त होती है, तो बाइबल के प्रति आपको कोई मोह या आकर्षण महसूस नहीं होगा।

यद्यपि पतरस हमें परमेश्वर के वचन के पोषक तत्वों से पूर्ण दूध के लिये इच्छुक होने हेतु प्रोत्साहित करता है (1 पतरस 2:2); तौभी वह हमें उन प्रवृत्तियों के प्रति चेतावनी देता है जो परमेश्वर के पोषक तत्वों के खातिर हमारी इच्छा को नष्ट कर देंगी। यदि स्पष्ट शब्दों में कहा जाये, तो वह यह भी लिखता है कि पोषक तत्वों से भरपूर साथ समय बिताने के लिये इन अवरोधों के साथ समस्या सुलझाने का एकमात्र एक उपाय या मार्ग है। पूर्ण आत्मिक भूक के लिये आने वाली प्रत्येक रूकावट को पृथक रख दिया जाये। अस्वस्थ्य धारणा को मौलिक रूप से परिवर्तित करना आवश्यक है - यदि हम एक स्वस्थ्य भूख को पुनः स्थापित करना चाहते हैं - यह ''पश्चाताप करो'', यह कहने का एक अन्य तरीका है!

> इसलिये सब प्रकार का **बैर भाव** और **छल** और **कपट** और **डाह** और बदनामी करे दूर करके, नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो; ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ (1 पतरस 2:1-2)।

पवित्रशास्त्र महत्वपूर्ण ढ़ंग से यह बताता है कि जब तक पहले बताये गये आत्मिक रोग - जो हमारी आत्मिक भूख को नष्ट करते हैं - का मामला सुलझाया नहीं जाता, तब तक हम सचमुच परमेश्वर के वचन

के शुद्ध दूध को पाने की इच्छा कभी नहीं करेंगे। आइये, हम उन्हें बारी - बारी से समझने का प्रयास करें:

मलीनता या बैरभाव: दूसरों के द्वारा हमारे साथ जो बुरा व्यवहार किया गया है, उसके प्रति आक्रोश या क्रोध एक अक्षमाशील आत्मा रखना।

कोरी टेन बूम ने रेवेन्सब्रक नाज़ी कॉन्सन्ट्रेशन कैंप के कुख्यात एक्सटर्मिनेशन सेंटर में अकथनीय कष्ट उठाया। उसके लिये इससे भी अधिक भयंकर या भयावह चीज अपनी सगी प्यारी एवं भक्त बहन के जीवन को अपनी आंखों से उस कैंप की अमानवीय एवं दर्दनाक पीड़ादायी परिस्थितियों में डूबते हुए अर्थात् समाप्त होते हुए देखना था। कोरी टेन बूम ने उन क्रूर पहरेदारों के बारे में बाद में बताया, जो ऐसी क्रूरता के लिये जिम्मेदार थे कि उसने किस प्रकार सचमुच क्षमा कर दिया था:

''क्षमा, इच्छा की एक प्रक्रिया है; और इच्छा हृदय के तापक्रम की ओर ध्यान दिए बिना ही कार्य करने का चयन कर सकती है।''

यदि आप किसी व्यक्ति के प्रति एक अक्षमाशील आत्मा रखेंगे - चाहे आपको उस व्यक्ति के हाथों कितनी भी तकलीफ़ क्यों न उठानी पड़ी हो - आपकी क्षमा का अभाव, उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचायेगा; परंतु यह निश्चित् रूप से आपके आत्मिक जीवन का गला घोंट देगा। केवल तब आप वह प्रार्थना कर सकते हैं, जिसे हमारे प्रभु ने हमें सिखाया है: हमारे पापों को क्षमा कर; क्योंकि हम भी उस प्रत्येक व्यक्ति को क्षमा करते हैं, जो हमारा अपराधी है (लूका 11:4)। यदि आप अपने हृदय में मलीनता (अक्षमाशीलता) के आत्मा को जानते हैं, तो उस व्यक्ति या उन लोगों को परमेश्वर के साथ अकेले में अपना समय बिताने के दौरान,

क्षमा करने का निर्णय लें। तब आप बिना किसी पाखंड के उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करने में सक्षम होंगे!

कपटः अपने पाप का अंगीकार करने के बजाय अपनी असफ़लता को छिपाना सच्चाई के बजाय धोखे का एक अस्तित्व जीना।

पाखंडः ग़लत प्रभाव डालने के लिये एक अहंकारी इच्छा में खुद की प्रत्यक्ष या स्पष्ट गलत प्रस्तुति या प्रतिनिधित्व प्रदान करना - वह दिखाने का प्रयास करना, जो हम नहीं हैं। स्वीकृति या पुष्टि पाने की एक इच्छा - चाहे एक पास्टर से, माता - पिता से, मित्र से या कार्यस्थल पर - सभी प्रकार के पाखंड का मूल कारण है।

ईर्ष्याः दूसरे व्यक्ति की आशीषों के प्रति संदेहपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त करना - दूसरे की वस्तु का लालच करना।

बुराई या निंदा करनाः दूसरे व्यक्ति को दुःख पहुंचाने के लिये अपनी जीभ का उपयोग करना; या दूसरे का चरित्र हनन करने वाली किसी भी बात की ओर अपने कान लगाना - किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन के पापों की ओर अंगुली उठाने के द्वारा अपने निजी व्यक्तिगत अपराध को कम करने का प्रयास करना।

अगर हम सचमुच परमेश्वर के वचन से आत्मिक पोषण प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें इन बातों को स्वयं से अलग रखना होगा। तदोपरांत, ठीक जिस प्रकार एक नवजात शिशु को जीवनदायक दूध की तलाश करने के लिये राजी या सहमत करने की जरूरत नहीं होती है, उसी प्रकार जब आपको अपनी बाइबल खोलने का एक अवसर मिलता है, तब

आपको परमेश्वर के वचन के शुद्ध दूध को प्राप्त करने की इच्छा होगी; ताकि आप उसके द्वारा बढ़ते जायें (1 पतरस 2:2)।

जीवित संगति एक आत्मकेंद्रित जीवन के साथ नहीं रह सकती है।

हाल ही में, मैं एक महिला मिशनरी से आये हुए पत्र को पढ़ रहा था। वह महिला कई वर्षों से जापान में मिशनरी के रूप में सेवकाई कर रही है। वह ऐसे लोगों के बीच में सेवकाई करती है, जिन तक दूसरे लोग नहीं पहुंच सकते हैं - सरकारी नौकरी करनेवाले लोगों में और कूटनीतिज्ञ तथा उच्च वर्गीय समाज में। उसने लिखीः

> खुद का इंकार करने और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाने की शिक्षा के बारे में जो कुछ भी हुआ हो, जब मैं ने मसीही जीवन से संबंधित पुस्तकों को खोजा, तब मेरे ध्यान में कुछ आया। मैं ने पिछले बीस या उससे अधिक वर्षों में विभिन्न शीर्षकों की किताबों को एकत्र किया और उनमें यह बात पायी कि मसीही जीवन के खातिर वृद्धि के उद्देश्य से ''खुद काम करने'' के लिये परिश्रम करो। परंतु मुझे याद है कि मेरे आरंभिक मसीही जीवन की पुस्तकें स्वयं का इंकार करने, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाने, पवित्र जीवन जीने, मसीह में रहने और अपने माध्यम से उसे जीवित रहने की अनुमति देने के बारे में है। क्या वे शिक्षाएँ धीरे - धीरे अदृश्य हो रही हैं अथवा क्या मैं उसकी कल्पना कर रही हूँ?
>
> संभव है कि हाँगकाँग में एक चीनी अगुवा ने जब यह लिखा, तब उनका तात्पर्य थाः ''पश्चिम में या संपूर्ण आजाद संसार में, मैं कलीसिया को यीशु के पुनरूत्थान की शक्तिशाली विजय के

साथ अपेक्षाकृत अधिक सदृश्य और अनुरूप देखता हूँ। वे उस तरह का संबंध चाहते हैं। वे पुनरूस्थित पुत्र की सफलता, संपन्नता और अच्छी बातों के लिये इच्छुक हैं। कुछ लोग मसीह के कष्ट या दुःखों की संगति में भागीदार होते हैं। तथापि, मैं एशियाई कलीसिया में, खासकर उन देशों में जहाँ परिस्थितियाँ सीमा के भीतर नियंत्रित है; विपरीत बातें देखता हूँ। ये विश्वासी लोग मसीह के दुःखों के साथ संगति के लिये अधिक इच्छुक हैं। उनके लिये, यीशु के दुःखों की संगति अपेक्षाकृत अधिक बड़ा प्रतिफ़ल और सुअवसर है''।

उसकी मृत्यु के प्रति अनुभव

पौलुस प्रेरित ने स्वयं प्रार्थना कीः

मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ (फिलिप्पियों 3:10)।

अमोस प्रभु यीशु के साथ संगति करने के लिये इस उत्तम अभिप्राय की उपयोगिता को समझने में हमारी मदद करता है, जैसा कि पौलुस के द्वारा यह मांगते समय अभिव्यक्त किया गया हैः क्या जब तक दो लोग सहमत न हों, साथ - साथ चल सकते हैं? (आमोस 3:3)। यदि हम उसके पुनरूत्थान के सामर्थ में चलने की इच्छा रखते हैं, तो हमें इसके दुःखों की संगति में भागी होने के लिये भी अवश्य ही सहमत होना चाहिये। एक आधा समझौता, सचमुच कोई समझौता नहीं होता है!

पौलुस ने एक अन्य स्थल पर अपने उन नये विश्वासी मसीहियों को यह लिखते हुए अप्रतिशोधपूर्ण प्रेम की गहरी पीड़ा व्यक्त की है, जो उसकी प्रेरिताई के अधिकार का अपमान करने लगे थेः मैं तुम्हारी आत्माओं के लिये बहुत आनंद से खर्च करूंगा, वरन् आप भी खर्च हो जाऊँगाः क्या

जितना बढ़कर मैं तुमसे प्रेम रखता हूँ, उतना ही घटकर तुम मुझ से प्रेम रखोगे? (2 कुरिन्थियों 12:15)। एक अन्य स्थल पर उसने सच्चे प्रेम का विश्लेषण किया है और जोरदार ढ़ंग से यह घोषित किया हैः प्रेम धीरजवंत है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं .. वह अनरीति नहीं चलता वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता (1 कुरिन्थियों 13: 4-5)।

ऐसा पवित्र प्रेम, जो धैर्यवान और स्थार्थहीन दोनों है, का प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अद्‌भुत रीति से व्यक्तिकरण किया गया है। जब प्रभु यीशु एक प्रेमरहित संसार में आया, तब उसने परमेश्वर के प्रेम को मानवीय रूप में बिल्कुल ठीक या सिद्ध रीति से प्रदर्शित किया। उसके कार्य, उसके वचन, उसके अंतःकरण के विचार, उसका अनंत समर्पण (जो उसके स्वर्गीय पिता की इच्छा के प्रति था) - सबकुछ उस प्रेम के एक सूक्ष्म चित्र में चित्रित किया गया है, जो कभी स्वार्थपूर्ण नहीं था। अगर दूसरे शब्दों में कहा जाये, तो प्रभु यीशु ने अपने जन्म लेने के समय के क्षण से लेकर क्रूस पर चढ़ाये जाने के क्षमा तक अपनी व्यक्तिगत निजी मानवीय सिद्धता के आत्मविभोर करनेवाली सुविधाओं का अपने निजी व्यक्तिगत लाभ प्राप्ति के लिये अभ्यास करने अर्थात् उसे प्रयुक्त करने से प्रेम पूर्वक इंकार कर दिया।

इसके अनुसार ही, प्रभु यीशु ने इस पृथ्वी पर तैंतीस वर्षों के दौरान, लगातार अपने जीवन का त्याग किया; (यूहन्ना 3:16) ताकि दूसरे लोगों की भलाई हो सके। फिर जब उसने क्रूस की पीड़ा का सामना किया, तब हम पढ़ते हैंः

फ़सह के पर्व से पहले, जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह

> घड़ी आ पहुँची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अंत तक वैसा ही प्रेम रखता रहा (यूहन्ना 13:1)।

हाँ, यीशु के प्रेम ने निश्चित् रूप से लम्बे समय तक कष्ट सहा। इसलिये, अगर हम सचमुच अपने उद्धारकर्त्ता के साथ संगति करेंगे, तो हमें स्वयं से अभी हृदय खोजी प्रश्न पूछना चाहियेः

क्या मैं जीवन के उन विभिन्न लाभ का उपयोग करता हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने मुझे मेरे निजी लाभ और विकास के लिये प्रदान किया है, या क्या मैं दूसरे लोगों के लिये सच्चे प्रेम में अपना प्राण देने के लिये तैयार हूँ; चाहे इसमें कितना भी कष्ट क्यों न उठाना पड़े?

हाँ, परमेश्वर का प्रेम, हमारी ''मैं पहले'' वाली वर्तमान उस पीढ़ी के साथ के विरोधाभास के चित्रित करता है जो निर्भीकतापूर्वक यह घोषित करती है कि आत्मा - प्रेम एक गुण है तथा दूसरों की भलाई की अपेक्षा हमारे अधिकार अधिक महत्वपूर्ण हैं। ऐसी आत्मा - आराधना को पवित्रशास्त्रों में अंतिम दिनों के चिंहों में एक चिंह के रूप में प्रकट किया गया हैः क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निंदक, माता - पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतध्न अपवित्र, विश्वासघाती, ढ़ीठ, घमंडी और परमेश्वर के नहीं वरन् सुख विलास ही के चाहने वाले होंगे (2 तीमुथियुस 3:2,4)।

तब इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि अलेक्जैंडर मैंक्लेरेन ने इस बात पर जोर दिया कि उन्नत आत्मिक सौंदर्य का मार्ग घायल आत्म - प्रेम के रक्तरंजित पदचिंहों से दागदार है।

पाप, जिसे चाहे कार्य के माध्यम से अभिव्यक्ति किया गया हो अथवा विचार में प्रकट किया गया हो, आत्मचेतना और आत्म - केंद्रीकरण की हमारी विरासती व्यवस्था की गवाही देता है। ओसवाल्ड चैम्बर्स इस स्वार्थी पक्षपात को इस प्रकार परिभाषित करता है: ''मेरे लिये मेरे अधिकार के खातिर मेरा दावा'' और यह घोषित करता है कि ''चाहे इसे आदरणीय नैतिकता के साथ किया गया हो या इसे हिंसक अनैतिकता के साथ किया गया हो, यह समान रूप से खतरनाक है''।

डकैती और अत्याचार के स्वार्थीपन और क्रूरता को देखना आसान है; परंतु हमें यह महसूस करने की आवश्यक्ता है कि मनुष्य का पापमय आत्म - केंद्रीकरण अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म ढ़ंग से इसी तरह अभिव्यक्त किया गया है।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रत्येक घरेलू समस्या एवं सामाजिक तनाव के बीच में और यहाँ तक कि अधिकांश कलीसियाई समस्याओं के केंद्र में यह कपट भरा दावा होता है कि मेरे लिये - मेरा समय, मेरा पैसा, मेरा मार्ग, मेरी इच्छा, मेरी लालसा - मेरा अधिकार। सचमुच, ऐसी कोई भी चीज़ जो परमेश्वर के प्रेम को प्रकाशित एवँ परावर्तित नहीं करती है, जो अपने खातिर अपनी भलाई की खोज नहीं करती है; वह मनुष्य की विरासती स्वार्थी प्रभृत्ति की एक अभिव्यक्ति है।

मेरी स्वर्गीय दृष्टिकोण

आत्म-केंद्रीकरण को वास्तविक तौर पर, हम सिर्फ एक उपाय से पहचान सकते हैं और वह यह है कि हम अपने आपको परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखें। जे.बी. फिलिप्स ने अपने पत्र ''लेटर्स टू यंग चर्चेस'' में

कुलुक्से की कलीसिया में लोगों के लिये पौलुस की प्रार्थना को इस प्रकार लिखा हैः

> इसीलिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते हैं कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ रहित **परमेश्वर की इच्छा** की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ (कुलुस्सियों 1:9)।

केवल जब हम पौलुस के उदाहरण का पालन करेंगे और परमेश्वर के खातिर अपनी आत्मिक आखों को खोलने के लिये प्रार्थना करेंगे, तब हम अपने व्यक्तिगत जीवन की ''सच्ची'' परिस्थितियों को देखना आरंभ करते हैं, हमारे आत्म केंद्रित अस्तित्व की आंखों के माध्यम से नहीं; परंतु परमेश्वर के स्वर्गीय दृष्टिकोण से। और केवल इस तरह से, हम अपने आत्मिक समपार्श्व के माध्यम से अपने जीवन की सच्चाईयों पर दृष्टि डाल सकते हैं।

एक रात, डॉरथी और मेरी लम्बे समय की मित्र मिसिस साइलेंस ने बड़ी राहत महसूस की, जब उन्होंने एक स्वर्गीय दृष्टिकोण से चल रही पारिवारिक समस्या का सामना प्रार्थना और आज्ञाकारिता के साथ किया। सुबह 2.00 बजे के समय उनके फ़ोन की घंटी ने उन्हें नींद से जगा दिया। पुलिस आफिसर ने फ़ोन में पूछाः ''क्या आपको मालूम है कि आज रात आपकी कार कौन चला रहा था''? उन्होंने उत्तर दियाः हाँ, युवा बाइबल सम्मेलन से लौटते हुए मेरे दो पुत्र कार चला रहे हैं ''पुलिस अफ़सर ने कहाः हाँ, मेरे पास आपके लिये एक दुःखद समाचार है - ड्राइवर को नींद आ गयी और आपकी कार सड़क के किनारे एक पेड़ से टकरा गयीं। ड-इवर की मौत हो गयी है और दूसरे युवक के बचने की कोई आशा नज़र नहीं आती!'' इस आघात पहुंचाने वाले समाचार ने उस भौंचक्की और

घबड़ायी हुई उस माता को चकित कर दिया, जिसका हृदय हमेशा अपने बच्चों के लिये कोमल प्रेम से भरा रहता था।

मिसिस सायलेंस ने फ़ोन नीचे रखकर, अपने स्वर्गीय पिता की दोहाई दीः ''हे परमेश्वर, ऐसे समय में एक माता क्या कर सकती है?'' सौभाग्यवश, उसने प्रार्थना करना सीखा था और वह बाइबल के आधार पर सोचना जानती थी। बाद में, उसने मुझे बताया कि वह सिर्फ किसी बात पर ध्यान दे सकती थी, तो वह था पवित्र वचन, जिसमें यह आज्ञा दी गयी हैः हर बात में परमेश्वर को धन्यवाद दो (1 थिस्सलुनिकियों 5:18)। मिसिस सायलेंस ने परमेश्वर को दोहाई देना जारी रखाः ''परंतु प्रभु, आप जानते हैं कि मेरा हृदय आभारी अर्थात् धन्यवाद से भरा नहीं है। यह ठंडा और चकित तथा खाली है; परंतु इस भयानक रात्रि में, मैं आपके वचन का पालन करूंगी। जब मैं ऐसा करती हूँ, तब कृपया मेरे हृदय में एक आश्चर्यकर्म करें। जब मैं आपकी आज्ञा मानती हूँ और आपको धन्यवाद कहती हूँ, तब आपको उसे सच या यथार्थ बनाना होगा; क्योंकि इस दुःखद घड़ी में, मैं बिल्कुल आभारी महसूस नहीं करती हूँ''। इस तरह मिसिस सायलेंस ने अपने विश्वास का उपयोग और क्रियान्वय किया और प्रार्थना करना आरंभ किया।

नाजुक या कोमल हृदय वाली इस माता ने मुझे बताया कि जब उसने पहले यह कहाः ''हे पिता आप जो हैं, उसके लिये आपको धन्यवाद'', तब उनका चकित हृदय ठंडा और खाली दोनों बना रहा। परंतु जब उन्होंने अपने आभार को दोहराना विश्वासपूर्वक जारी रखा, तब पवित्र आत्मा ने अपना व्यक्तिगत अद्भुत आश्चर्य कर्म किया! उसने उसके हृदय को राहत और सच्चे धन्यवाद या आभार से भर दिया। हाँ, रात्रि के उन लम्बे अंधेरे घंटों के दौरान, परमेश्वर को शांतिदाता पवित्र आत्मा ने मिसिस सायलेंस के विश्वास और उनकी आज्ञाकारिता का

प्रत्युत्तर दिया। उसने उन्हें दोनों और उनके परिवार परमेश्वर के अपरिवर्तनशील प्रेम का पुनः निश्चय दिलाया। जब सुबह हुई, तब निसंदेह, उनकी आंखों में अब तक आंसू थे; लेकिन उसी समय उन्होंने परमेश्वर के अवर्णनीय राहत का अनुभव किया; उनके हृदय में परमेश्वर की शांति का शासन स्थापित हुआ।

यह परमेश्वर के अनुग्रह की एक अद्भुत गवाही है, जिसमें उसने अपने अनंत प्रेम की गोद में एक दुखित और विलाप करने वाली माता को लपेट कर भर लिया। मिसिस सायलेंस ने गहरे और शांत आत्म विश्वास के साथ कहा कि किस प्रकार उस अंधेरी रात में, परमेश्वर की शांति (जो मानवीय समझ से परे है) ने उनकी आत्मा को अपने ज्वार से भर दिया था।

जब आप भी परमेश्वर के साथ एक परस्पर घनिष्ट संगति का आनंद उठाते हैं, तब आप यह महसूस करेंगे कि आभार प्रदर्शन और विश्वास हमेशा आपस में संबंधित होते हैं। जब सच्चे विश्वास का आभार प्रदर्शन आपके हृदय को भरता है, तब परमेश्वर आपको आपके जीवन की परिवर्तन शील परिस्थितियों को देखने के योग्य बनायेगा - वे बाहर से अच्छी दिखाई - देती हैं अथवा बुरी - उसके दृष्टिकोण से। एक ऐसे स्वर्गीय दृष्टिकोण से, परमेश्वर निश्चित् रूप से आपके दुखित हृदय को पुनः आश्वस्त करेगा कि हम जानते हैं, जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये हुए हैं (रोमियों 8:28)। इस पद की शांति के लिये ठंडी, खाली और प्रायः उद्धरित की जाने वाली सच्चाई बने रहना आवश्यक नहीं है। परमेश्वर ने हमें यह अद्भुत प्रतिज्ञा प्रदान की है, जो हममें से प्रत्येक के हृदय में अद्भुत सच्चाई के साथ गूंज या बज सकती है। इसलिये जब आप महसूस करें कि आपको परमेश्वर

की प्रशंसा करनी चाहिये, तब आप करें! परमेश्वर की प्रशंसा करें, जब आप ऐसा नहीं करना चाहते हैं! आपके और मेरे जीवन में कभी ऐसी परिस्थिति नहीं आयेगी, जब परमेश्वर की प्रशंसा करना, हमारे लिये असमयोचित हो।

हाल ही में, डॉरथी और मैं ने उन मिशनरियों से एक पत्र प्राप्त किया, जिन्होंने एक मध्यपूर्वी देश में अवरोधित एवं नियंत्रित अर्थात् प्रतिबंधित परिस्थितियों में मसीह के लिये विश्वासयोग्यता और सफ़लता के साथ फलवंत सेवकाई की है। स्टान ने अपने पत्र में लिखाः ''मैं अपने आराम के आधार पर नहीं; परंतु परमेश्वर के चरित्र के आधार पर परमेश्वर की प्रशंसा कर सकता हूँ और मुझे करनी चाहिये''। कोरी टेन बूम्स के क्षमा के बारे में दिये गये वक्तव्य को विस्तृत करते हुए, हम भी कह सकते हैं कि परमेश्वर की प्रशंसा करना, इच्छा की एक प्रक्रिया होने के कारण, इच्छा हृदय के तापक्रम की ओर ध्यान न देते हुए परमेश्वर की प्रशंसा करने का चयन कर सकती है! इसके बाद, परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिये हमारे द्वारा चुनाव करने पर, वह अवश्य ही हमें अपनी शांति की आंतरिक दमक प्रदान करेगा और हमारी परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, वह अपने अपरिवर्तनशील प्रेम का साथ रहने वाला आश्वासन हमें प्रदान करेगा।

इस बात का ध्यान रखें कि हमें प्रत्येक बात या चीज़ के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिये नहीं कहा गया है; परंतु उसे हर बात में धन्यवाद देने के लिये कहा गया है।

यथार्थ या सच्चा आभार प्रदर्शन, जो हमारे स्वर्गीय दृष्टिकोण की पहचान से प्रवाहित होता है, विश्वास की एक ऐसी सामग्री है, जो दुःख को आत्मः सहानुभूति से अलग करती है।

याद रखें, चाहे हम चर्च में हों या अस्पताल में हों, यह सच है! यहां तक कि जब जीवन के तूफान आक्रमण करते हैं, यद्यपि पृथ्वी से बंधा एक हृदय, ''आत्मसहानुभूति'' की प्रवृत्ति की ओर ध्यान देना अधिक आसान समझेगा; तौभी मसीह पर केंद्रित एक हृदय प्रभु की प्रशंसा करेगा।

> हममें से अधिकांश लोग, पीड़ी की पहली पकड़ में ही गिरकर खत्म हो जाते हैं; हम परमेश्वर के उद्देश्यों के द्वार पर बैठ जाते हैं और आत्म - सहानुभूति भी सिर्फ प्रक्रिया को उत्प्रेरित करेगी। वह अपने पुत्र के भेदे या छेदे हुए हाथ की पकड़ के साथ आता है और कहता है - ''मेरे साथ संगति में प्रवेश करो; उठो और चमको''। यदि परमेश्वर अपने टूटे हुए हृदय के द्वारा अपने उद्देश्य को इस संसार में पूर्ण करने के लिये ला सकता है, तो उसे आपका हृदय तोड़ने के लिये धन्यवाद दें (ओसवाल्ड चैंबर्स, माय अटमोस्ट फॉर हिज़ हायेस्ट, भावानुवादित)।

हमारे जीवन में सभी बातों ''के पीछे परमेश्वर के प्रेमपूर्ण कारण पर ध्यान दें। ठीक अगला पद यह प्रकट करता है कि उनके पास उद्देश्य था; ताकि हम ''उसके पुत्र के स्वरूप या प्रतिरूप के सदृश्य हों'' (रोमियों 8:29)।

हाँ, यदि हमें यह समझना है कि परमेश्वर ने हमें किस तरह हमारे अस्तित्व से एक महिमायुक्त आज़ादी प्रदान की है, तो यह आवश्यक है कि हम अपने जीवन को एक स्वर्गीय दृष्टिकोण से देखना सीखें।

किसी आत्म-केंद्रित जीवन के लिये परमेश्वर का प्रत्युत्तर न तो विकास है और न शिक्षा; **परँतु मृत्यु**! जब हम पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान, आत्म-जीवन के गुरूत्वाकर्षण खिंचाव का सामना करते हैं, तब

सच्चा विश्वास, परमेश्वर के अनंत सत्य में आनंद मनाने में सक्षम होगाः क्योंकि तुम मर गये और तुम्हारा जीवन परमेश्वर में मसीह के साथ छिप गया है (कुलुस्सियों 3:3)।

चूंकि हम मरने, गाड़े जाने और पुनः जी उठने की प्रक्रिया के द्वारा **परमेश्वर में मसीह के साथ छिप गये हैं** (रोमियों 6:2-4) - इसलिये हम पृथ्वी से बंधे अपने अस्तित्व और उसकी आत्म केंद्रित चिंताओं से मौलिक तौर पर कठोर या सख्त हो चुके हैं। अब हम क्रूस के पुनरूत्थान वाले पक्ष पर, जीवन के बारे में हमारे नये दृष्टिकोण का आनंद उठा सकते हैं!

मैं मसीह में मरा, मैं मसीह में जी उठा,
मैं मसीह में ही अपने शत्रुओं पर जयवंत हुआ,
मैंने स्वर्ग में अपनी जगह मसीह में ली,
और स्वर्ग ने नर्क की पराजय पर आनंद मनाया।

सच्चा मसीही, जो पुरानी सृष्टि अर्थात् पुराने मनुष्यत्व के लिये मृत है, परमेश्वर की नयी सृष्टि का भाग बन गया है। यही हमारा उद्धार है।

जैसा कि हम मसीह के साथ अपने सह - क्रूसीकरण को समझते हैं, पृथ्वी पर हमारा दैनिक जीवन आत्म - केंद्रित अस्तित्व से मसीह केंद्रित एक अनुभव में परिवर्तित होगा। परंतु उसके साथ ऐसी परस्पर घनिष्ट संगति का निरंतर आनंद उठाने के लिये, हमें यह जानना चाहिये कि आत्म - जीवन अर्थात् पृथ्वी पर की अपनी समस्या को निरंतर किस प्रकार सुलझायें!

मेरी संसारिक समस्या

अब हमें हृदय - खोजी प्रश्न करना चाहियेः ''क्या पृथ्वी पर मेरा जीवन सचमुच मसीह - केंद्रित है अथवा वह अब तक आत्म - केंद्रित है?''

एक आत्म - केंद्रित जीवन, निश्चय ही उसकी सुरक्षा, उसके अहम् या आत्म सम्मान, उसके आराम या उसके सुख - विलास के आतंकित होने पर, किसी व्यक्ति का शत्रु या विरोधी हो जायेगी अथवा किसी परिस्थिति में क्रोंधित हो जायेगा। जी. कॅम्पबेल मोर्गन इस प्रकार कहते हैंः आत्म - केंद्रीकरण, पाप का मूल सार या कारण है; शत्रुता का प्रमुख केंद्र है; ऐसा पदार्थ या सामग्री है, जिससे नर्क को बनाया गया है'' (होशै - द हार्टएण्ड होलीनेस ऑफ गॉड)।

एक संध्या, एक प्रार्थना सभा में, मैं ने एक महिला को असामान्य सच्चाई के साथ प्रार्थना करते हुए सुना। जब वह प्रार्थना कर रही थी, तब वह स्पष्ट रूप से एक नये और जीवन - परिवर्तित करने के ढ़ंग में परमेश्वर से मुलाकात कर रही थीः ''प्रभु यीशु मेरे चारों ओर प्रेम की अपनी बाहें फैला, मुझे क्रूस से लपटे ले और मृत्यु तक मुझे प्यार कर। मैं इसे इस तरह चाहती हूँ कि अब मैं नहीं; परंतु यीशु मुझ में जीवित रहता है''! उसकी प्रार्थना ने मुझे अत्याधिक प्रभावित किया।

यद्यपि इस महिला को मालूम था कि मृत्यु और पुनरूत्थान की प्रक्रिया के माध्यम से उसने छुटकारा प्राप्त कर लिया है, ताकि मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में रह सके; इसके बावजूद, वह इस बात के लिये सजग और चिंतित थी कि उसका शरीर अब तक बहुतायत से इस संसार में था! जब उसने प्रार्थना किया, तब वह स्पष्ट तौर पर, यहाँ पृथ्वी पर अपने

शरीर के स्वार्थपूर्ण कर्मों और वचनों के लिये परमेश्वर का समाधान ढूँढ रही थी। ऐसी अर्थपूर्ण प्रार्थना, निश्चय ही उसके प्रभु के साथ एक अधिक घनिष्ट संगति के लिये उसकी तीव्र इच्छा को अभिव्यक्त करती थी। जब बाद में, मैं ने इस प्रार्थना पर ध्यान दिया, तब मैं ने ऐसी एक हृदय विदारक विनती के लिये पौलुस के द्वारा यह लिखने के दौरान दिये गये बाइबल संबंधी आधार को महसूस कियाः क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे'' (रोमियों 8:13)।

मेरे कुछ पाठक, इस पद की महत्ता पर गहराई से मनन करते समय अगले विचारों को सहायक पायेंगे; जबकि यह संभव है कि दूसरों के लिये परवर्ती पैराग्राफ़ अर्थात् बाद के पैराग्राफ़ का उदाहरण अधिक सहायक और व्यवहारिक हो। जो लोग ग्रीक भाषा के साथ अधिक परिचित हैं, वे हमें इस पद में पाये जाने वाले स्वतंत्र करने वाले सत्य की पूर्ण समझ भी देते हैंः

> ''क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे'' (रोमियों 8:13)।

पहलाः मौलिक या मूल ग्रीक में (you) शब्द अर्थात **''तुम''**, वाक्यांश (मारोगे) का कर्त्ता है और इसे **क्रिया वाच्च** में लिखा गया है।

बाइबल संबंधी तथ्यः यदि मुझे मेरे शरीर के कर्मो से छुटकारा प्राप्त करने की आवश्यक्ता है (मेरा आत्म - केंद्रित जीवन), तो मुझे सक्रिय एवं सकारात्मक रूप से परमेश्वर के साथ सहयोग करना चाहिये।

दूसराः यह पद हमें यह भी बताता है कि यह **पवित्र आत्मा के द्वारा**

(परमेश्वर के ईश्वरीय अधिशासक के द्वारा) है; कि वह पृथ्वी पर के हमारे स्वार्थी कार्यों पर विजय के लिये अपना निजी अद्‌भुत प्रबंध करता है।

बाइबल संबंधी तथ्यः यद्यपि मुझे प्रार्थनापूर्वक और सक्रिय रूप से प्रक्रिया में शामिल होना चाहिये; तौभी मैं स्वयं अपने स्वार्थी कार्यों को समाप्त नहीं कर सकता अर्थात् मार नहीं सकता हूँ! इस संसार में मेरे रहने के दौरान, एकमात्र पवित्रात्मा ही है, जो मेरे आत्म केंद्रित कार्यों से मौलिक तौर पर अलग कर सकता है।

तीसराः अवलोकन करने के लिये यह भी दिलचस्प है कि यह पद वर्तमान काल में लिखा गया है। व्यवहारिक शब्दों में, इस काल का प्रयोग यह संकेत करता है कि परमेश्वर के साथ मेरा प्रार्थनापूर्ण और सक्रिय सहयोग निरंतर रूप से क्रियांवित होना चाहिये।

बाइबल संबंधी तथ्यः हालांकि यह एक परिवर्तनकारी अनुभव हो सकता है; इसलिये कोई मसीही पहली बार पवित्र आत्मा से मांगता है कि वह उसके आत्म - जीवन को मृत्यु चाहता है। यह कोई ऐसी बात नहीं है, जिसे सिर्फ एक बार किया जाये। नहीं, जब कभी आत्म-जीवन अपना कुरूप सिर ऊपर उठाता है, तब हमें पवित्र आत्मा के छुटकारा दिलाने वाले कार्य के साथ सहयोग करने के लिये विशेष प्रार्थना करनी चाहिये। इसके बाद, जब हम पवित्रात्मा के द्वारा हमारे आत्म जीवन को मृत्यु देने की सेवकाई पर निर्भर रहते हैं, तब हमारे स्वार्थी कर्मो को सचमुच मौत प्रदान की जायेगी।

परमेश्वर यह चाहता है कि हमारे पक्ष में विश्वास की यह प्रवृत्ति एक निरंतर, आगे बढ़नेवाला हमेशा मौजूद रहने वाली अर्थात् स्थायी अनुभव होना चाहिये!

इसकी व्याख्या करने के लिये, हम एक अदालत के कक्ष की कल्पना करें। वहां हत्या का आरोपी एक व्यक्ति मौज़ूद है। गवाह से छानबीन की जा चुकी है, उस व्यक्ति का अपराध साबित किया जा चुका है, और अब दंड सुनाने की अकेली जिम्मेदारी न्यायाधीश की है। जज के उठने और यह कहने पर अदालत कक्ष पर चुप्पी छा गयीः ''इस व्यक्ति को हत्या का दोषी पाया गया है और इसलिये इसे मृत्यु दंड दिया जाता है।''

इस उदासीन वक्तव्य के साथ जज का कार्य पूर्ण हो चुका है। तथापि, यदि जज़ खुद ही मृत्यु दंड की इस सजा को क्रियांवित करने के प्रयास में अपनी बेंच के नीचे से पिस्तौल निकालकर हत्यारे के गोली मारता है, तो जज स्वयं ही हत्या का अपराधी बन जायेगा!

जज, मृत्युदंड की घोषणा करने के बाद, अपराधी व्यक्ति को ''प्रांत के जल्लाद'' के हाथ में सौंप सकता है। वह सिर्फ़ इतना ही कर सकता है।

इसी तरह, हमारा आत्म-जीवन कुछ नहीं कर सकता है; परंतु अपने स्वार्थीपन को पहचान सकता है और उसका अंगीकार कर सकता है। अदालत कक्ष में जज की तरह ही, हमें हमारे स्वार्थी कार्यों पर मृत्यु दंड की घोषणा करनी चाहिये। लेकिन जिस प्रकार जज हत्यारे का जीवन कभी नहीं ले सकता था, ठीक उसी प्रकार हम अपनी आत्मकेंद्रित दशा में, यह अधिकार नहीं रखते हैं कि आत्म-जीवन के कार्यों को मारें। परंतु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने एक ईश्वरीय मृत्युदाता या ईश्वरीय जल्लाद-पवित्र आत्मा-प्रदान किया है, और वह पवित्र आत्मा है, पाप हमारे जीवन के क्षमतापूर्ण स्वार्थीपन को निष्क्रिय या अकार्यकर बनाने अर्थात् करने का अधिकार है।

हाँ, परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, यह पवित्र आत्मा के माध्यम से है कि हम ''शरीर के कार्यों'' को मृत करने के योग्य बनाये जाते हैं। जब हम एक निरंतर और जबरदस्त आधार पर, स्वयं को इस अद्‌भुत प्रबंध का हितसाधक बनाते हैं, तब, हम एक ऐसे जीवन के छुटकारा देने वाले आनंद के अनुभव तक पहुंचेंगे, जो सचमुच मसीह - केंद्रित है।

पवित्रशास्त्र संबंधी ऐसी स्पष्ट शिक्षा के कारण और ऐसी सच्ची प्रार्थनाओं के भावनात्मक पाठों के कारण, जैसा कि मैं ने उस प्रार्थना सभा में महिला के ओठों से सुना था, मैं ने भी कई बार ऐसी ही प्रार्थना की हैः

हे प्रभु, अपने पवित्र आत्मा के द्वारा मुझे क्रूस के आलिंगन में ले और मेरे आत्म जीवन को मृत्यु देना पसंद कर। मैं चाहता हूँ कि अब मैं नहीं; परंतु मसीह मुझमें जीवित है!

यह सोचना आसान है कि हमारे अस्तित्व का परमेश्वर के वचन के साथ पालन - पोषण के खातिर अंतरिम उद्‌देश्य यह है कि हम व्यक्तिगत निजी संतोष के एक जीवन के लिये परिपक्व हो सकें। ऐसा नहीं है! पुराने - नियम के पुरोहित ने अपनी झुंड का सर्वोत्तम ढ़ंग से पालन-पोलण क्यों किया? सिर्फ इसलिये कि उसे प्रदर्शन के लिये सबसे अधिक सूक्ष्म कुशल और आकर्षक नमूना या प्रतिरूप प्राप्त हो सके? इसके विपरीत, जैसा कि विलियम स्टिल बताते हैं, वे विशेष भेडें थी, जो वध के लिये आवश्यक थीं! उनके जन्म से ही उनसे लिये एक ही उद्‌देश्य रखा गया था कि उन्हें बलिदान होना है!

प्रायः मसीही लोग यह ग़लत निष्कर्ष निकालते हैं कि जब वे इवेंजलिकल दर्शकों की एक भीड़ के सामने, स्वर्ण पदक प्राप्त करने का प्रयास करते हुए संगीत अथवा व्याखान या वाक्‌चातुर्य से संबंधित अपनी योग्याताओं से मसीह को किसी तरह प्रसन्न कर लेंगे! जब परमेश्वर अपने

वचन से प्रेमपूर्ण प्रबंध से हमारा पालन - पोषण करता है, तब उसका उद्देश्य यह नहीं होता है कि हम मंच पर बेहतर दिखाई दे सकें; परंतु यह कि हमारे जीवन का प्रत्येक पहलू बलिदान की उसकी (परमेश्वर की) वेदी पर चढ़ाया जाये। इससे पहले कि हम इन सबके प्रति जीवित या सज़ग हो जायें कि वह अर्थाह् परमेश्वर है; इन सबके लिये पहले मृत्यु आवश्यक है कि हम खुद में हैं - हमारी आत्म - सहानुभूति, हमारी आत्म पर्याप्त, हमारा आत्म - केंद्रीकरण, हमारा खुद को प्रसन्न करना, हमारा स्वयं को या खुद को निर्दोष ठहराना... सूची आगे बढ़ती ही जाती है।

पौलुस प्रेरित ने दुःखित हृदय के साथ यह बताया कि उसने तीमुथियुस के अलावा, ऐसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं पाया, जो कुलुस्से में कलीसिया की ''देखरेख'' करेगा। क्योंकि उस नगर के अनेक मसीही अपने निजी अनुभव से यह नहीं जानते थे कि ''प्रेम अपने स्वार्थ की खोज में नहीं रहता है''। हम पढ़ते हैं कि पौलुस ने किस प्रकार दुःखी होकर कहा हैः ''क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की'' (फिलिप्पियों 2:21)।

आज ऐसे मसीही कहाँ हैं, जो विश्व के विभिन्न भागों में कष्ट सहती हुई कलीसिया की **सचमुच** फ़िक्र करते हैं? क्या हम अपने जीवन में इतने अधिक व्यस्त हैं कि उसके कारण हमारे पास ऐसे लोगों से प्रेम करने के लिये वक्त नहीं है, जिनकी कोई फ़िक्र नहीं करता है? इसके अतिरिक्त हमें यह याद रखना चाहिये कि वह सिर्फ परमेश्वर का प्रेम है, जो अपने स्वार्थ की खोज में नहीं रहता है और लम्बे समय तक कष्ट सहता है। जिस प्रकार सिरके से भरे प्याले की कड़वाहट को पहले दूर करते हैं; ताकि उसे मीठे और सुगंधित संतरे के रस की तरह उपयोग में लाया जाये, उसी तरह, हमारे आत्म जीवन को मृत होना चाहिये। इससे पहले कि हम

परमेश्वर के प्रेम से भरपूर हों। परमेश्वर की महिमा हो कि ये दोनों सेवकाई हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के अनुग्रहकारी कार्य का भाग हैं। हम सबके लिये यह कितना आवश्यक है कि हम अपने आत्म-जीवन के कार्यों से एक मौलिक अलगाव के द्वारा मृत्यु लाने के लिये पवित्र-आत्मा से कहें। और इसके बदले में उससे यह मांगें कि वह हमें परमेश्वर के प्रेम से भरपूर करे। ''क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है'' (रोमियों 5:5)।

जब आपके द्वारा ''साथ समय बिताने'' के दौरान, आपके हृदय में सभी सच्चाईयाँ हलचल मचाना शुरू करती हैं, तब पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन से ताजे सत्य को खोलेगा।

यह सही कहा गया है कि प्रत्येक विश्वासी को ''परमेश्वर के साथ संक्षिप्त या छोटा हिसाब - किताब रखना चाहिये''। आइये हम, इस बात को निरंतर तौर पर निश्चित् जानें कि जीवन में ऐसा कुछ नहीं है जो परमेश्वर के प्रति हमारी सजगता और उसके साथ हमारी घनिष्ट संगति का गला घोंट सके।

आत्मिक जांच पड़ताल

1.अपने प्रभु की उपस्थिति में, क्या मैं किसी बिना अंगीकार किये हुए पाप के बारे में जानता / जानती हूँ, जिसका मैं ने पश्चाताप नहीं किया है?

2.क्या मुझे किसी अक्षमाशील आत्मा से कोई समस्या है?
-क्या मैं लोगों से प्रेम करना, पसंद नहीं करता हूँ?
-एक अच्छा प्रतिरूप प्रस्तुत करने के लिये लोगों को धोखा देता हूँ?
-किसी दूसरे व्यक्ति के वरदान या धन दौलत का लालच करता हूँ?
-क्या मैं निंदा और आलोचना करता हूँ?

3.क्या मैं एक अपेक्षित विश्वास का पालन कर सकता हूँ; क्योंकि मेरे विवेक को शुद्ध किया गया है?

4.क्या पृथ्वी पर मेरा जीवन सचमुच मसीह केंद्रित है अथवा वह अब तक आत्म केंद्रित है?

अब; अगर आप चाहें तो विलियम मैंक लेडी बंटिंग (पृष्ट 46) की प्रार्थना पर पुनः ध्यान दे सकते हैं और तब शांतिपूर्वक चुपचाप विचारमग्न होकर आप स्वयं उस प्रार्थना को फिर कह सकते हैं।

जब हम परमेश्वर के साथ चलते हैं
उसके वचन की ज्योति में,
वह हमारे मार्ग पर कितनी महिमा बिखरेता है!
जब हम उसकी उत्तम इच्छा के अनुसार काम करते हैं,
वह अब भी हमारे साथ रहता है
और इन सबके साथ,

कौन उस पर भरोसा रखेगा और उसकी आज्ञा मानेगा,
कोई प्रतिच्छाया उत्पन्न नहीं हो सकती है,
आसमानों में कोई बादल नहीं है,
किंतु यह मुस्कान शीघ्र ही लुप्त हो जाती है;
कोई शक नहीं, कोई डर नहीं, कोई आह नहीं,
कोई आंसू नहीं कोई भरोसा और आज्ञा
पालन करते हुए बना रह सकता है।

किंतु हम यह कभी साबित नहीं कर सकते हैं
उसके प्रेम की खुशी को जब तक कि
हम वेदी पर सबकुछ नहीं चढ़ा देते हैं;
क्योंकि वह कृपा दर्शाता है
और वह आनंद प्रदान करता है
क्या हम भरोसा रखने वाले और आज्ञा मानने वालों के लिये हैं
तब मधुर संगति में
हम उसके चरणों में बैठेंगे
अथवा हम उसके साथ मार्ग में चलेंगे;
वह जो कहेगा, हम करेंगे,
वह जहाँ भेजेगा, हम वहाँ जायेंगे -
कभी मत डरो, सिर्फ़ भरोसा रखो और आज्ञा मानो

- जॉन एच. सेमीस

अध्याय 4

साथ - साथ समय

जब आप उसके बारे में सोचते हैं कि घमंड की कुछ बड़ी अभिव्यक्तियाँ हैं अथवा आप यह सोचते हैं कि खुली बाइबल और एक खुले हृदय के साथ प्रभु यीशु मसीह की पर्याप्ति को प्राप्त किये बिना ही, दिन की चुनौती का सामना करने के लिये आप योग्य और सक्षम हैं।

दाऊद ने उस अंकुरित बीज को पहचाना, जो एक आत्मिक रूप से उत्पादक जीवन में विकसित होगा। उसने कहा कि जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन पर ध्यान या मनन करता है, वह ऋतु या मौसम आने पर फल उत्पन्न करेगा... इसलिये जो कुछ वह पुरूष करता है, वह सफ़ल होता है (भजनसंहिता 1:3)।

परमेश्वर ने कैसे व्यक्ति के सफ़ल होने की प्रतिज्ञा की है? ऐसा व्यक्ति, जो परमेश्वर की व्यवस्था पर प्रसन्न होता है; और दिन व रात उसकी व्यवस्था पर ध्यान करता है (भजन संहिता 1:2)।

कभी - कभी मैं ऐसे लोगों से कहता हूँ, जिन्होंने हाल ही में प्रभु यीशु को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण किया है: ''एक दिन में एक अध्याय शैतान को दूर रखता है''! प्रतिदिन आपके लिये निर्धारित

पवित्रशास्त्र के भाग को पढ़ें और उसे दोबारा फिर से पढ़ें जब आप ऐसा करते हैं, तब आप पदों के अनुसार क्रमगत रूप से उस पर मनन करने में सक्षम होंगे। क्या आपने कभी किसी खेत में एक गाय को उसका पागुर चबाते हुए देखा है? घास चबायी जाती है, निगल ली जाती है और फिर चबाने के खातिर गाय के मुंह में वापस लायी जाती है; ताकि तब तक चबायी जाये जब तक उसमें से कभी पोषक तत्व अवशोषित न हो गयें। यह परमेश्वर के वचन का सच्चा मानना क्या है, इस बारे में एक उत्तम उदाहरण है!

मैं एक ऐसे पुरूष को जानता हूँ, जिसके सत्तरवें (70) जन्मदिन में उसका हृदय - परिवर्तन हुआ था। उस समय वह बाइबल के बारे में बहुत थोड़ा जानता था। मसीह में नया जीवन प्राप्त करने से पहले, वह चर्च जाने वाला व्यक्ति भी नहीं था; और न ही उसकी निपुणता में शैक्षणिक योग्यताएँ शामिल थीं। इसके बावजूद उसके पुनः जन्म के अनुभव के बाद, उसकी इच्छा हुई कि वह प्रभु यीशु के प्रेम और ज्ञान में इस तरह बढ़े और वह इतना बढ़ा कि जब तिरासी (83) वर्ष की आयु में वह स्वर्ग गया, तब तक उसने बाइबल को शुरू से लेकर अंत तक तेरह बार पढ़ लिया था। चाहे आपकी आयु अथवा शैक्षणिक पृष्ठभूमि जो भी हो, आप भी प्रतिदिन बाइबल पढ़ सकते हैं।

एक खुली बाइबल, एक शुद्ध हृदय, एक दीन आत्मा और दाऊद की प्रार्थनाः मेरी आंखें खोल ताकि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूं (भजन संहिता 119:18), परमेश्वर के साथ एक फलदीयी समय के लिये मार्ग तैयार करेंगे।

जैसा कि हमने पहले ध्यान दिया है कि कुछ लोग यह महसूस नहीं करते हैं कि साथ समय बिताना, सचमुच एक दो - तरफ़ा वार्तालाप है।

परमेश्वर, हमारे द्वारा बाइबल के पदों को पढ़ने के दौरान जब हम उन पर मनन करते हैं, तब हमसे बातचीत करता है। दुर्भाग्यवश, कई लोग यह समझने में असफ़ल हो जाते हैं कि परमेश्वर के द्वारा प्रेमपूर्वक नम्र होकर हमारे हृदय से बात करने के बाद, वह हमारे लिये प्रतीक्षा करता है कि हम प्रार्थना में उसे प्रत्युत्तर दें। जब हम परमेश्वर के वचन पर **ध्यान** करते हैं, तब वह वचन हमारी **सोच** का भाग बन जाता है। जब हम प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर के वचन पर कार्य करते हैं, तब वह हमारे **जीवन** का भाग बन जाता है।

इस बात पर आप शायद यह पूछ सकते हैंः ''जब मैं बाइबल पढ़ता हूँ, तब परमेश्वर कैसे बात करेगा?'' मैं ने व्यक्तिगत तौर पर, प्रत्येक पद पर मन में कुछ प्रश्नों के साथ पढ़ते हुए मनन करना, मेरे लिये सहायक साबित होता है। उनमें से कुछ के बारे में, मुझे कई वर्ष पहले सुझाव दिया गया था। जब मैं अपने प्रभु के साथ प्रार्थनापूर्वक संगति करता हूँ तब मैं इन प्रश्नों को मेरी अगुवाई करने की अनुमति देता हूँ। मैं आपको यह सुझाव देना चाहता हूँ कि जब आप परमेश्वर के वचन पर मनन व ध्यान करते हैं, तब आप अपनी सोच या धारणा को ऐसी ही शैली की ओर ले जायें। क्योंकि मैं कई वर्ष तक इन प्रश्नों पर निर्भर रहा हूँ; वे मेरे लिये दूसरा स्वभाव बन जाते हैं, जब मैं परमेश्वर और पवित्रशास्त्रों के साथ होने के लिये अलग चला जाता हूँ।

आप यह ध्यान देंगे कि अगले कुछ प्रश्नों को आज्ञाकारिता की प्रक्रिया की जरूरत होगी; दूसरे प्रश्नों के लिये विश्वास का एक प्रत्युत्तर अनिवार्य होगा; इसके बावजूद, परमेश्वर के सामने आराधना और प्रशंसा के आपके जाने का परिणाम अन्य प्रश्न होंगे; और अंत में कुछ प्रश्न आपके शत्रु की धूर्त युक्तियों की निर्धारित करने में आपकी मदद करेंगे।

आपका यह शत्रु है, शैतान और ये प्रश्न आपको यह समझने के लिये भी योग्य बनायेगा कि किस तरह शैतान पर मसीह की विजय, आपकी विजय बन सकती है।

आज्ञाकारिता की एक प्रक्रिया

हमने यह पहले ही समझ लिया है कि अगर हमें बाइबल पढ़ते समय पवित्र आत्मा की आवाज़ के साथ सूक्ष्मता पूर्वक लभ या समन्वय स्थापित करना है, तो हमें परमेश्वर के साथ छोटा या संक्षिप्त हिसाब-किताब रखना चाहिये। परंतु प्रत्येक बार जब पवित्र आत्मा हमारे हृदय से बात करता है, तब उसकी कही हुई बातों को मानना भी आवश्यक होता है।

जब आप परमेश्वर के साथ अपना समय बिताते समय बाइबल पढ़ते हैं, तब पूछना अच्छा हैः क्या इस पद में -

मानने के लिये कोई आज्ञा है?
न करने के लिये कोई पाप है?
अनुकरण करने के लिये कोई अच्छा उदाहरण है?
नज़र अंदाज करने के लिये कोई बुरा उदाहरण है?

क्या आप देखते हैं कि ऐसे प्रश्न किस प्रकार आपको, अपके प्रभु के साथ दो-तरफ़ा व्यक्तिगत संबंध की ओर ले जाते हैं? वे आपको निश्चय ही, आपके द्वारा पढ़े हुए सत्य के बारे में केवल सोचता हुआ नहीं छोड़ेंगे। जब आप परमेश्वर की उपस्थिति में, इन प्रश्नों का उत्तर देते हैं, तब आप पायेंगे कि परमेश्वर ने जो कुछ कहा है, उसका सक्रिय प्रत्युत्तर देना आपके लिये आवश्यक है।

यह हमेशा याद रखें कि जब आप परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं, तब पवित्र आत्मा स्वयं आपके साथ है, और अगर आप उस पर निर्भर होते हैं, तो वह परमेश्वर के वचन को आपके सिर से आपके हृदय तक नौ इंच नीचे तक की गहराई में धकेल दगा!

हम सब संकटमय खतरनाक दिनों में जी रहे हैं, जबकि यह संसार विद्रोह और परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति उदंडता में आगे दौड़ता जा रहा है। मसीह को ठुकराने वाली एक पीढ़ी को प्रभावित करने लिये हमें आज्ञाकारी और पूर्ण हृदय से समर्पित होना चाहिये। हमारे द्वारा उन सच्चाइयों मानने की शुरूआत करने पर ही, जिन्हें परमेश्वर हमें दर्शाता है, हम इस जरूरतमंद संसार के लिये हमारे माध्यम से उसके सामर्थ को प्रवाहित होने के लिये खुलापन प्रदर्शित करेंगे।

हाल ही में, मेरी पत्नी और मैं ने ओस्वाल्ड चैंबर्स की पुस्तक से एक पठन ''माई अटमोस्ट हिज़ हाइयेस्ट को पढ़ा। हमने जो पढ़ा, उसमें से यह एक रूपांतर हैः।

> परमेश्वर आपको जो दिखाता है, उसमें उसकी आज्ञा मानें और स्वतः ही तुरंत अगली बात या चीज़ खुल जाती है.. ''मैं अनुमान करता हूँ कि किसी दिन मैं उसे समझूंगा!'' आप कहें। परंतु एक मिनट ठहरें; आप उसे अभी समझ सकते हैं! वह अध्ययन नहीं है, जो विशेष प्रेरणा लाता हैः वह आज्ञाकारिता है। यहाँ तक कि आज्ञाकारिता का सबसे छोटा भाग भी स्वर्ग की खिड़कियाँ खोलेगा; ताकि परमेश्वर की सबसे अधिक महत्वपूर्ण सच्चईयाँ आपके खातिर वहाँ मौजूद होंगी । परंतु परमेश्वर अतिरिक्त सत्य को (स्वयं के बारे में) तब तक प्रकट नहीं करेगा, जब तक आपने उन बातों को माना है, जिन्हें आप पहले से जानते हैं।

यह सूचना दी गयी है कि एक रात दो मिशनरी चार्ल्स टी. स्टड और हडसन टेलर ऊपर के एक कमरे में ठहरे हुए थे। प्रातः काल, भोर के समय टेलर यह पता लगाने के लिये जाग गये कि उसका साथी एक खुली बाइबल पढ़ रहा था। जो एक मोमबती के प्रकाश से चमक रही थी। उन्होंने पूछा कि वह वहां कितनी देर से हैं। स्टड ने टेलर के प्रश्न का उत्तर देते हुए यह अंगीकार कियाः

''मध्यरात्रि को मैं अपने मन में प्रभु यीशु के वचनों के साथ जाग उठाः यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15)। मैं ने स्वयं से पूछा, क्या मैं ने संपूर्ण आज्ञाकारिता के द्वारा प्रभु यीशु के प्रति अपने प्रेम को साबित किया था? अपनी बाइबल को पकड़े हुए, मैं ने शेष रात्रि सुसमाचारों को पढ़ने में गुजार दी। वहां मैं ने प्रत्येक आज्ञा की तलाश की, जिसे प्रभु ने अपने शिष्यों उसकी आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी रहा था। मैं ने अपनी बाइबल में एक छोटा चिंह बनाया और हालेल्लूयाह! शब्द लिख दिया। जहाँ कही मैं ने आज्ञा नहीं मानी थी, मैं ने वहाँ अपने पाप का अंगीकार किया था और उसके क्षमता, देने वाले अनुग्रह के द्वारा मैं ने एक बार फिर स्वयं को उसकी आज्ञा मानने के लिये समर्पित किया है और इस प्रकार मैं ने साबित किया है मैं समुचच उससे प्रेम करता हूँ।''

प्रिय पाठकगण, एक बार जब आप सचमुच ''परमेश्वर के वचन के प्रकाश में उसके साथ चलते हैं'', तब आप भी गीत के लिखने वाले कवि के साथ यह गवाही देने के लिये शामिल हो जायेंगे कि भरोसा करने और आज्ञा मानने के अलावा और कोई दूसरा मार्ग नहीं है''।

विश्वास का एक प्रत्युत्तर

बाइबल, परमेश्वर के प्रति विश्वास का निर्माण करनेवाली है! और जब विश्वास में हमारा निर्माण हो जाता है - जो प्रभु यीशु पर निर्भरता है और उसके प्रति आज्ञाकारिता है - तब हम इस बात को स्वीकार करेंगे कि ''मैं नहीं कर सकता हूँ; परंतु वह कर सकता है''!

इसलिये प्रभु के साथ आपके इकट्ठे समय बिताने के दौरान, यह पूछना अच्छा हैः क्या इस पद में:

- दावा करने के लिये एक प्रतिज्ञा है?
- ध्यान देने के लिये एक चेतावनी है?

बाइबल प्रतिज्ञाओं से भरी हुई है। जब हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान - मनन करते हैं, तब परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करना अनिवार्य है। तथापि, उसी समय हमें उसकी उदासीन चेतावनियों का भी अवलोकन करना चाहिये। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर ध्यान देने के लिये, जबकि हम यह मानते हैं कि परमेश्वर की चेतावनियों को नज़र अंदाज करना ''विश्वास के द्वारा जीना नहीं है'', के बजाय ''विश्वास करने के द्वारा मरना है''!

जब आप प्रतिदिन बाइबल पढ़ते हैं, तब परमेश्वर की प्रत्येक प्रतिज्ञा पर ध्यान दें और तब प्रत्येक के लिये दावा करें मानो वे आपकी निजी प्रतिज्ञा है। जब आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के लिये अनुरूप और उपयुक्त हैं, तब प्रभु यीशु मसीह की क्षमता प्रदान करने वाली पर्याप्ति आज्ञाकारिता के प्रत्येक नये कदम को आपके निजी व्यक्तिगत अनुभव की सच्चाई में बदलने के लिये आपके लिये आवश्य पूर्ण शक्ति अर्थात् सामर्थ होगी।

परमेश्वर के साथ आपके चालचलन में अर्थात् आपके चलने में ''जीवित'' सच्चाई बनने के लिये आपको परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ दी गयी हैं। जब आप इन प्रतिज्ञाओं पर निर्भर होते हैं, तब आपका विश्वास लगातार दृढ़ बनता जायेगा; क्योंकि हमें यह बताया गया है: सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है (रोमियों 10:17)।

क्या आपने कभी यह सोचा है कि विश्वास का विलोम या विरोधी क्या है? जैसा प्रतीत होता है, वैसा उत्तर उतना आसान नहीं है। यह कहना कि आविश्वास, विश्वास का विलोम या विरोधी है, सचमुच इस प्रश्न की पूर्ण उपयोगिताओं को नज़रअंदाज करता है। यह कल्पना करें कि आपके पास अगर तीन जीवनदायक ''भोजन'' हैं। पहला विश्वास है, दूसरा निर्भरता है और तीसरा दीनता है। अब तीन ऐसे भोजन के बारे में सोचें, जो मृत्यु देते हैं। पहला अविश्वास है, दूसरा आज़ादी है और तीसरा घमंड है।

विश्वास का एक पुरूष, ऐसा पुरूष है, जो उसे करने करने के लिये प्रभु यीशु मसीह पर निर्भर होता है, जिसे वह अपने खातिर कभी नहीं कर सका। बाइबल को पढ़नेवाला सच्चे विश्वास वाला व्यक्ति ध्यान देगा और उसके बाद व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की अटूट प्रतिज्ञाओं को हस्तगत करेगा।

प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: क्योंकि तुम मेरे बिना कुछ नहीं कर सकते हो (यूहन्ना 15:5)। हाँ, इससे पहले कि कोई व्यक्ति परमेश्वर की क्षमता प्रदान करने वाली सामर्थ के माध्यम से आत्मिक गुण एवँ मान्यता के बारे में कुछ करने के लिये उस पर भरोसा रख सके, उसे इस बात के प्रति निश्चित् होना चाहिये कि वह अपनी निजी सामर्थ से ऐसा कुछ नहीं कर सकता है, जिसकी गणना और महत्ता अनंतकाल के लिये हो। इस प्रकार का निर्भर रहने वाला हृदय सिर्फ़ किसी नम्र व दीन हृदय में

उत्पन्न होता है। तब ऐसा व्यक्ति पौलुस प्रेरित के साथ यह कहने के योग्य होगाः ''मसीह जो मुझे सामर्थ देता है, मैं उसमें सबकुछ कर सकता हूँ'' (फिलिप्पियों 4:13)।

दूसरी ओर **अविश्वास करने वाला व्यक्ति,** एक ऐसा व्यक्ति है, जो खुद को इतना अधिक आज़ाद समझता है कि उसे सचमुच में परमेश्वर की मदद की कोई जरूरत नहीं होती है। यह कहते हुए दुःख होता है कि आज ऐसे लाखों लोग हैं, जो अपने उद्धार के लिये प्रभु यीशु मसीह पर निर्भर नहीं होंगे। इतना ही दुःखद यह तथ्य है कि कई मसीही उन्हें मसीही जीवन जीने के लिये योग्य बनाने के खातिर अंतः निवास करने वाले मसीह पर निर्भर नहीं रहते हैं। मानवीय आज़ादी का कोई भी रूप एक अहंकारी, अधीन न होने वाले हृदय में उत्पन्न होता है।

इसलिये हम यह कह सकते हैं कि विश्वास का विरोधी या विलोम घमंड है, जबकि अविश्वास का विरोधी या विलोम दीनता है। लोकप्रिय धारणा के बावजूद, आत्म विश्वास और आत्म पर्याप्ति हमेशा हृदय को विश्वास की एक अच्छी खुराक के विरूद्ध टीका लगाते हैं।

प्रत्येक सांसारिक प्रभाव, जो आत्म अहम् को उसकाने या फुलाने के तैयार किया जाता है, उसी समय किसी व्यक्ति के पुनरूत्थित मसीह की अलौकिक शक्ति में दृढ़ भरोसे को नष्ट कर देगा, परमेश्वर असीमित स्त्रोत उस प्रत्येक प्रतिज्ञा के पीछे है, जो उसने कभी की थी और उसने हमें जीवन के द्वारा यात्रा के लिये हमारी निजी युक्तियों या चतुराई के सहारे नहीं छोड़ा है।

जी. के. चेस्टरटन (1874-1936) ने चतुराई और विचारशीलता के साथ आत्म - पर्याप्त घमंड के विरोधभास पर अपनी अंगुली रखते हैं। उन्होंने यह लिखा हैः

> हम आज जिस कष्ट का सामना करते हैं, वह ग़लत जगह में सुशीलता और नम्रता है। सुशीलता, दृढ़ निश्चय के अंग पर व्यवस्थित हो चुकी है, जहाँ उसे कभी नहीं होना चाहिये था। मनुष्य को खुद के बारे में शक्की होना चाहिये था; किंतु सत्य के बारे में नहीं; यह बिल्कुल उल्टा हो गया है।

कोई मसीही, जो परमेश्वर में भरोसा रखने के बजाय, अर्थात् दूसरे लोगों की मानवीय सलाह पर निर्भर बना रहता है, वह परमेश्वर की आशीष की भरपूरी में कभी प्रवेश नहीं करेगा। जिस प्रकार जल हमेशा सबसे निचले स्तर में प्रवाहित होता है, ठीक उसी प्रकार पवित्रात्मा, जिसका यीशु ने जीवन के जल या जीवित जल के रूप में वर्णन किया है, उस व्यक्ति में से प्रवाहित नहीं होगा, ''जिसका प्राण या मन... फूला हुआ है... वह एक अहंकारी पुरूष है'' (हबक्कूक 2:4-5)।

तथापि, पवित्र आत्मा ऐसे किसी विश्वासी के हृदय से बहुतायत से प्रवाहित होगा, जो नम्रतापूर्वक मसीह की सामर्थ या क्षमता प्रदान करने वाली शक्ति की अपनी आवश्यक्ता को पहचानता हैः

> फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीये। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है कि उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी (यूहन्ना 7:37-38)।

आप प्रतिदिन यीशु के चरणों में गिर सकते हैं और उस जीवन जल से पी सकते हैं। जब आप ऐसा करेंगे, तब आपके जीवन की व्याख्या करने अर्थात् उसे समझाने के लिये आपको योग्यताओं और प्रशिक्षण की कोई आवश्यक्ता नहीं होगी। इसके बजाय, आपका जीवन, आपके

अंतःकरण से बहुतायत से प्रवाहित होने वाले परमेश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा परिलक्षित होगा।

यह याद रखें कि पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में, हमारे पुनरूत्थित प्रभु ने नया जन्म पाये हुए प्रत्येक विश्वासी के शारीरिक रूप के साथ स्वयं को ढ़ंकने के लिये नम्र और दीन बना लिया है। वास्तव में, आज एक विश्वासी एक ईश्वरहीन संसार में प्रभु यीशु की योजनात्मक परियोजना का सिरा है। पवित्र आत्मा प्रत्येक उपलब्ध मसीही के द्वारा दूसरे लोगों के जीवन में अपने बचानेवाले अर्थात् उद्धार देने वाले कार्य को प्रसारित या विस्तृत करना जारी रखता है।

> क्योंकि हम तो जीवने परमेश्वर के मंदिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसूंगा और उनमें चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:16)।

हाँ, हम परमेश्वर के मंदिर हैं जिनके माध्यम से वह अपनी व्यक्तिगत पवित्रता और महिमा को प्रदर्शित करने की इच्छा रखता है!

पौलुस, इस अचंभित करने वाले तथ्य को पहचानते हुए, यह शिक्षा देना जारी रखता हैः इसलिये हे प्यारो, जबकि ये प्रतिज्ञाएँ मिली हैं, तो आओ, हम अपने आपको शरीर और आत्मा की सब मलीनता से शुद्ध करें और परमेश्वर का भय रखते हुए, पवित्रता को सिद्ध करें (2 कुन्रिथियों 7:1)।

आराधना में वास्तविकता

पियानो बजाने वाले और उसकी धुन को ठीक करने वाले व्यक्ति के लिये एक ट्यूनिंग फोर्क अर्थात् अर्थात् औजार, जो पियानो की धुन ठीक करता है, विश्वव्यापी औजार है। ट्यूनिंग फोर्क के स्थायी एवं निर्धारित

स्तर (स्वर का स्तर) से बेसुरा हो चुका कोई पियानो सही लय या धुन पर पुनः लाया जा सकता है अर्थात् सुधारा जा सकता है।

इसी तरह, बाइबल मानवीय हृदय के दुःखद खिंचाव और तनाव को स्वर्ग के संगीत और तालमेल के साथ लय या धुन में लाने के खातिर परमेश्वर का औजार है। जब परमेश्वर का वचन उसकी महिमा, पवित्रता और उसके प्रेम के लिये ताजी प्रेरणाएँ लाता है, तब आप अपनी आराधना और प्रशंसा के द्वारा लगातार फिर से नये होते जाते हैंः आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो (इफ़िसियों 5:19)।

परमेश्वर के साथ अपना इकट्ठा वक्त बिताने के दौरान अपने मन में इस बात को ध्यान में रखते हुए यह पूछना अच्छा हैः क्या इस पद में –

- पिता परमेश्वर के बारे में एक ताजा विचार है?
- परमेश्वर पुत्र के बारे में एक ताजा विचार है?
- परमेश्वर पवित्र आत्मा के बारे में एक ताजा विचार है?

यह अवलोकन करना उत्साहवर्द्धक है कि आज परमेश्वर के लोगों के बीच में परमेश्वर की सच्ची आराधना करने के लिये एक नयी इच्छा दिखाई देती है। प्रभु यीशु मसीह ने यह कहते हुए ऐसी आराधना को प्रोत्साहित कियाः परमेश्वर आत्मा है और उसकी आराधना करने वालों को आत्मा और सच्चाई से आराधना करना आवश्यक है (यूहन्ना 4:24)। इसे हम दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि सच्ची आराधना, पवित्र आत्मा के अभिषेक के अंतर्गत और परमेश्वर के वचन के सत्य के अनुसार

होना चाहिये। केवल इस प्रकार की आराधना ही हमारे पिता के हृदय को आनंद प्रदान करेगी।

जब पवित्र आत्मा परमेश्वर के व्यक्तित्व के आश्चर्य कर्मों - उसके प्रेम, उसके अधिकार और सामर्थ, उसकी पवित्रता, उसकी महिमा, उसके अनुग्रह, उसके अच्छाई तथा उसकी सुंदरता के किसी अन्य पहलू - की ओर हमारा ध्यान खींचती है, तब हमारे हृदय परमेश्वर के प्रति आराधना और प्रशंसा के एक नये गीत में मोहित हो जाते हैं। जब हम परमेश्वर के पास प्रार्थना में आते हैं, तब घुटने टेक कर झुकने की अवस्था मन की उचित प्रवृत्ति उत्पन्न करने में निश्चय ही हमारी सहायता कर सकती है। परंतु आप मेरे साथ यह मालूम कर सकते हैं कि आपके जीवन में वे कुछ विशिष्ट निजी क्षण हैं, जब घुटनों पर झुकना, परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम और आपकी अधीनता को प्रकट करने के लिये आपके खातिर पर्याप्त रूप से निम्न या निचला स्तर मालूम नहीं पड़ता है।

यह ध्यान देना रूचिकर है कि जब यूहन्ना, पतमुस द्वीप पर महिमायुक्त मसीह की उपस्थिति में आया, तब उसने गवाही दी कि उसने सिर्फ़ घुटने नहीं टेके थे; परंतु उसने परमेश्वर को देखाः जब मैं ने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर यह कहा कि मत डर; मैं प्रथम और अंतिम और जीवता हूँ (प्रकाशितवाक्य 1:17)।

तथापि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि जब कभी किसी विश्वासी के लिये कोई चीज़ बहुमूल्य होती है, तब प्रायः एक खतरनाक नकल निकट होता है! प्रभु यीशु मसीह ने न सिर्फ़ सच्ची आराधना के लिये निर्देश दिया; बल्कि उसने एक ऐसी गतिविधि से संबंधित एक सख्त चेतावनी भी दी, जिसे कुछ लोग हालांकि आराधना कहते हैं, परंतु वास्तव में। वह सच्ची चीज़ की एक नकल है। जिस समय उसने सामरी स्त्री को आत्मा

और सच्चाई में आराधना करने के लिये प्रोत्साहित किया, उस समय प्रभु यीशु ने सूक्ष्मता से यह अवलोकन कियाः तुम जिसे **नहीं जानते** हो, उसकी आराधना, करते हो (यूहन्ना 4:22)।

आराधना, भावना से कहीं अधिक बढ़कर हैः इसका केंद्र प्रभु यीशु मसीह का व्यक्तित्व होना चाहिये। यदि आराधना का उद्देश्य लोगों को प्रोत्साहित करने के बजाय उन्हें प्रसन्न करना है, तो झूठी आराधना, सच्ची आराधना को विस्थापित कर देती है। परमेश्वर को उस समय निश्चय ही अधिक आत्मिक उत्साह की आवश्यक्ता होती है, जब हमें हमारे परमेश्वर के लिये प्रशंसा से भरपूर होना आवश्यक होता है।

सच्ची आराधना, सर्वोच्च और जीवित प्रभु यीशु मसीह पर, जैसा कि उसे परमेश्वर के वचन में व्यक्त या प्रकट किया गया है, नम्रतापूर्वक मन और हृदय को केंद्रित करना है। जब कभी ऐसा होता है, तब समर्पण और प्रशंसा दोनों के साथ उसके सामने आंतरिक रूप से दंडवत प्रणाम करना या गिरना होगा।

विरोधी या शत्रु के प्रति सर्तक

हां, परमेश्वर, आपके ''साथ समय बिताने'' को आशीष देता है। अब आपका विवेक शुद्ध है। इस बात को पहचानते और स्वीकार करते हुए कि यीशु ने क्रूस पर आपके लिये क्या किया है, आपने अपने प्रति स्वयं के अधिकार, अपनी प्रतिष्ठा, अपने अभिप्राय और अपनी संपत्ति को त्याग दिया है। अब आप परमेश्वर के प्रति अपनी आराधना और प्रशंसा की एक नयी दिशा में व्यस्त और शामिल हो गये हैं। इसलिये क्या आप अपने साथ समय बिताने के खातिर आशीष से संबंधित परमेश्वर के उद्देश्यों के शिखर पर हैं? अच्छा, पूरी तरह नहीं!

बाहर एक शत्रु है, जो अत्याधिक क्रोधित है। हाँ, शैतान क्रोधित है, क्योंकि परमेश्वर ने एक मार्ग प्रदान किया है, जिसके माध्यम से वह आपके पाप न्यायपूर्वक क्षमा कर सकता है; परंतु शैतान प्राणदंड - स्थगन की बिना किसी संभावना के आग की झील में डाल दिया गया है। इसलिये स्वर्ग के आपके मार्ग में, वह आपके कदमों को पथभ्रष्ट करने के लिये हर संभव प्रयास करेगा, वह परमेश्वर के प्रति आपकी भक्ति को विचलित करने और आपकी गवाही को नष्ट करने के लिये हर संभव रूकावट डालेगा अथवा प्रयास करेगा।

इस कारण परमेश्वर के साथ आपके ''साथ वक्त बिताने'' में यह पूछना उचित हैः क्या इस पद में

- शैतान के व्यक्तित्व में कोई ताजी प्रेरणा है?
- उसके क्रूर उद्देश्यों में एक ताजी प्रेरणा है?
- उसकी धूर्त युक्तियों में एक ताजी प्रेरणा है?

एक बार मुझे एक छोटे बालक के बारे में बताया गया जो संडे स्कूल से अपने घर लौटा था। एक रात उसकी माता ने उसे उसके पलंग के किनारे घुटने टेके हुए देखा। उसने पूछाः ''तुम क्या कर रहे हो''? बालक ने तुरंत उत्तर दियाः'' मैं शैतान को थरथरा रहा हूँ। हमने आज संडे स्कूल में एक नया गीत गया है - जब शैतान संत जनों को उनके घुटनों पर देखता है, तब वह थरथराता है; इसलिये मैं शैतान को कपकंपाने के लिये अपने घुटनों पर झुक गया!''

दुर्भाग्यवश, शैतान को थरथराने के लिये घुटनों पर झुकने की गतिविधि से बढ़कर कहीं अधिक करने की आवश्यक्ता होती है! शैतान सिर्फ तब थरथराता है, जब प्रभु यीशु के नाम में उसे आपके जीवन में रहने

के लिये जगह देने से इंकार कर दिया जाता है तथा जब उसी यीशु के सर्वसामर्थी नाम में पवित्र आत्मा आपका उपयोग अनेक बहुमूल्य जीवन को शैतान के प्राणघातक पंजों या जकड़ से खींच कर बाहर निकलने के लिये करता है।

कई मसीही यह महसूस करते हैं कि अगर वे शैतान का अकेला छोड़ देंगे, तो वह उन्हें अकेला छोड़ देगा। परंतु दुःख की बात यह है कि वे भ्रम में पड़े हुए हैं अर्थात् बहक गये हैं। उदाहरणार्थ, जब आप प्रार्थना में परमेश्वर के पास आते हैं, तब क्या आप खुद को अतीत की असफ़लताओं के दुख पर कभी - कभी ध्यान देते या गौर करते हुए पाते हैं; हालांकि उनका अंगीकार किया जा चुका है और उनके खातिर क्षमा प्राप्त की जा चुकी है? शैतान आपको उस पाप के लिये दोषी ठहराने के लिये हमेशा ढूंढ़ेगा, जिसका आपने सच्चाई के साथ क्रूस पर समाधान कर लिया है।

जब शैतान आपको आपके अतीत का स्मरण दिलाता है, तब आप शैतान को उसके भविष्य का स्मरण दिलायें। यद्यपि परमेश्वर ने उन पापों को स्मरण नहीं करने का चयन किया है, जिन्हें उसने क्षमा कर दिया है; तौभी शैतान चाहता है कि आप उनमें से प्रत्येक पाप पर पुनः ध्यान केंद्रित करें; ताकि आप परमेश्वर की प्रेमपूर्ण क्षमा की सच्चाई पर प्रश्न करना आरंभ करें।

परमेश्वर के साथ आपके चाल चलन में शैतान के द्वारा मध्यस्थता करने के प्रयास के विशिष्ट लक्षण हैंः अनिश्चय, संकोच, डर, संदेह और निराशा।

हाँ, शैतान आपसे आपका आनंद और संतोष तथा आपकी शांति छीनने के लिये कुछ भी करेगा। परंतु जब आप बाइबल पढ़ेंगे, तब परमेश्वर आपको यह निर्धारित करने के योग्य बनायेगा कि शैतान ने आपके जीवन

में रहने के लिये कहाँ जगह पा ली है। तब परमेश्वर के द्वारा प्रदान किये गये हथियारों के साथ आपको उस प्रत्येक द्वार को बंद करना चाहिये, जिन से शैतान की निर्ल्लज और अशिष्ट प्रविष्टि हो सकती है।

मानवीय युद्ध में, बचाव करने वाली और उग्र युक्तियाँ दोनों होती हैं। कोई भी युद्ध कभी भी सिर्फ़ सुरक्षा या बचाव करने वाली घुड़सेना से नहीं जीता गया है। ठीक इसी तरह, आत्मिक युद्ध में अतिक्रामक और उग्र युक्तियाँ, दोनों ही अनिवार्य होती हैं। दोनों में परमेश्वर के वचन की सेना आवश्यक होती है। फल-दायी या फलवंत साथ वक्त बिताने के विकास के कई प्रोत्साहक पहलुओं में से एक पहलू या है कि जब आप प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर शैतान का सामना करते हैं, तब आप पवित्रशास्त्र से वचन उद्धरित करने में सक्षम होंगे और बाइबल के अनुसार प्रार्थना करने की योग्यता प्राप्त करेंगे।

यह जानना एक आद्भुत बात है कि जब आप परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रार्थना करते हैं, तब आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं! शैतान पर विजय और आपके आत्मिक जीवन को पथभ्रष्ट करने के उसके प्रयासों को जानना, आपके लिये परमेश्वर की इच्छा है।

अतिक्रामक आत्मिक युद्धः क्या आपको यह याद है कि शैतान ने कब प्रभु यीशु की परीक्षा ली थी? मैं यह कल्पना करना या सोचना चाहता हूँ कि यीशु अभी - अभी व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पढ़ते हुए अपना साथ समय बिताने की गतिविधि में व्यस्त था। यह निश्चित् बात है कि शैतान के विरूद्ध, उसने जिन पवित्र वचनों को प्रयुक्त किया था। उद्धारित किया था, वे इस पुस्तक में पाये जाते हैं। हमारे प्रभु ने परमेश्वर के वचन से तीन बार वचन उद्धरित कियाः यह लिखा है.. यह लिखा है... यह लिखा है (मत्ती 4:4, 7, 10)। प्रभु यीशु की यही

परीक्षा थी, जिसने प्रभु यीशु को भजन संहिता के लेखक की लिखी इस बात को समझने में सक्षम बनायाः ''मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर दंडवत् करूंगा और तेरी करूणा तथा सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तूने अपने वचन को अपने बड़े नाम से अधिक महत्व दिया है'' (भजन संहिता 138:2)। हाँ, परमेश्वर के वचन की शक्तिशाली सेना ने शैतान को यीशु से दूर भगा दिया!

इसी प्रकार, अगर आप शैतान पर जयवंत होना चाहते हैं, तो आपको भी यह सीखना चाहिये कि बाइबल को आपके अतिक्रामक युद्ध के हथियार के रूप में कैसे संभालना और प्रयुक्त करना चाहिये। जब शैतान आपके दिमाग में ग़लत और झूठे सुझावों को डालता है, तब आपका स्त्रोत हमेशा परमेश्वर का वचन होना चाहिये। एक अनुरूप के साथ समय बिताना, इस बात का आश्वासन या निश्चय देगा कि ऐसी घड़ी के लिये परमेश्वर का वचन आपके हृदय में जीवित रहता है।

आगे दी गयी कविता, ''शैतान की युक्तियाँ'' एक अनजान लेखक अर्थात् कवि के द्वारा लिखी गयी है। यह इफ़िसियों के अध्याय 6 में लिखे इस सत्य पर आधारित है।

शैतान की युक्तियाँ

आज मैं ने एक दहकता अर्थात् अग्निदाहक युद्ध किया,
प्रार्थना करने की मेरी जगह के अंतर्गत।
मैं परमेश्वर के मिलने और बात करने गया था,
लेकिन मैं ने वहाँ शैतान को पाया।
उसने फुसफुसाकर कहा, ''तुम सचमुच प्रार्थना नहीं कर सकते हो;''
तुम बहुत पहले खो चुके हो, भटक चुके हो,
जब तुम अपने घुटनों पर हो, तब तुम शब्द कह सकते हो,

परंतु तुम जानते हो कि तुम प्रार्थना नहीं कर सकते हो,
इसलिये तब मैं ने अपना हेल्मेट (टोप) नीचे रख दिया
कहीं दूर से मेरे कानों पर;
मुझे उसकी आवाज सुनने में मदद मिली,
जिससे मुझे अपना डर भगाने में मुझे मदद मिली
मैं ने अपने दूसरे हथियारों को भी जांचा,
शांति में मेरे पैरों में जूते थे,
सच के साथ मेरे सिंह घिरे हुए थे
मेरी तलवार; परमेश्वर का वचन
मेरा धर्मी झिलम अब तक लगा हुआ था
मेरे हृदय का प्रेम सुरक्षित रखना चाहता था,
विश्वास का मेरा कवच बिल्कुल दुरूस्त था,
उसके आग के गोले पीछे उछल गये
मैं ने यीशु के नाम में परमेश्वर को पुकारा,
और बहुमूल्य लोहू से विनती की,
जैसे कि शैतान शर्म में चोरी से भाग गया हो
मैं परमेश्वर से मिला और बातचीत किया!

उग्र आत्मिक युद्धः इन सबके बावजूद पूरी विजय के लिये अतिक्रामक युक्ति के अलावा अन्य कई बातों की आवश्यक्ता होती है! बाहर एक दुःखी संसार है। यह उन करोड़ों बहुमूल्य लोगों का घर है, जिनके खातिर मसीह ने अपना प्राण दिया। हर जगह पुरूष और महिलाएँ दुःखी हैं, कई लोगों को शैतान ने अंधा बना दिया गया है और अपनी गुलाम बना लिया है। मेरे विचार के अनुसार, शैतान को यह मालूम है कि उसका समय थोड़ा है और इस कारण वह भयभीत होकर डरपोक की तरह मरते हुए लोगों के खातिर एक ईश्वरहीन अनंतकाल को सुरक्षित बना रहा है।

यद्यपि हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने शैतान और असके, दृष्टात्माओं के लिये आग की एक झील तैयार की है; तौभी हमें यह याद रखना चाहिये कि परमेश्वर ने उस आग की झील को मनुष्य जाति के लिये तैयार नहीं किया है। नहीं, वास्तव में, यह उन सब भटके हुए लोगों के लिये है, जिनके खातिर यीशु मरा। तथापि, सब लोगों के प्रति शैतान के क्रोध और उसकी घृणा में यह पवित्र और उत्तम है; वह अपने साथ अधिक से अधिक लोगों की आत्माओं को उस अनंत कष्ट में उसके साथ शामिल होने के लिये ले जाना चाहता है। भटकी हुई आत्माओं की उसकी इस लड़ाई में, मसीह उन मसीहियों के द्वारा लगातार ढूंढ़ता और बचाता है (लूक 3:10), जो स्वयं को उसके लिये उपलब्ध बनाते हैं।

क्या आपने यह कभी सोचा है कि चतुर और बुद्धिमान लोग सुसमाचार के सामान्य संदेश को क्यों नहीं समझ सकते हैं? हमें बाइबल में बताया गया है कि उनकी सोच को भ्रम में डालनेवाला कौन है और कुछ विश्वासियों के लिये विश्वासी बनना, इतना अधिक कठिन क्यों हैः

> परंतु यदि हमारे सुसमाचार पर पर्दा पड़ा है, तो यह नाश होने वालों के लिये ही पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है; ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके (2 कुरिन्थियों 4:3-4)।

परमेश्वर के प्रेम और सत्य के प्रकाश को किसी अविश्वासी के मन में गहराई तक जाने से कौन रोकता है? शैतान! जब आप पुरूषों और स्त्रियों के उद्धार के लिये प्रार्थना करते हैं, तब क्या आप इस बात की ध्यान में रखते हैं? जब हम प्रार्थना करते हैं, तब हमें उन लोगों के मन को शैतान के भ्रम से यीशु का सामर्थी नाम लेकर आज़ाद करना चाहिये,

जिनका अब तक हृदय - परिवर्तन नहीं हुआ है। यह वह अद्भुत, सामर्थी और जयवंत नाम है, जिसके बारे में चार्ल्स वेस्ली ने लिखा हैः

यीशु ! सब नामों में ऊँचा नाम है,
नर्क में, या पृथ्वी में अथवा आसमान में;
उसके सामने स्वर्गदूत और मनुष्य सब गिरते हैं,
और दुष्टात्माएँ डर कर भागती हैं।

हाँ, शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की सेना पर विजय को कलवरी के क्रूस पर अनंत रूप से सुरक्षित कर लिया गया थाः जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से हैं, क्योंकि शैतान आरंभ ही से पाप करता आया है परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रकट हुआ है कि शैतान के कार्यों को नाश करे (1 यूहन्ना 3:8)। हालेल्लूयाह! हम एक ऐसा युद्ध नहीं लड़ते हैं, जिसमें हमने पराजय का सामना किया हो। अवश्य ही नहीं। हम हर उस विजय के साथ लौटते हैं, जिसे हमारे खातिर दो हजार वर्ष पहले अपरिवर्तनीय रूप से प्राप्त कर लिया गया था।

शतरंज के खेल में, यह संभव है कि आप अपने विरोधी के विरूद्ध विजय की एक युक्तिपूर्ण अपरिवर्तनीय चाल चलें। उस दृष्टिकोण से उसकी पराजय या हार निश्चित् है। परंतु अगर आपका विरोधी हठी या जिद्दी है, तो उसकी पराजय को उलटने का कोई मार्ग नहीं बचने के बावजूद भी, वह उस समय या क्षण को लाने में विलंब कर सकता है, जिसमें वह हराया या पराजित किया जायेगा।

यही शैतान के साथ होता है; यद्यपि उसके युद्ध को जीतने के लिये कोई संभव मार्ग शेष नहीं रहता है, फिर भी परमेश्वर के द्वारा उसकी स्वतः अतंतः समाप्ति के पूर्व निर्धारित समय में विलंब कराने कह वह हर संभव प्रयास करता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि शेष बचे थोड़े समय में,

उससे पहले कि शैतान जंजीरों में जकड़ा जायेगा या बांधा जायेगा, वह न सिर्फ़ एक पराजित शत्रु है, बल्कि वह एक ऐसा शत्रु भी है, जिसका पता लग चुका है। बाइबल हमें यह बताती है किः शैतान का हम पर दांव न चले; क्योंकि हम उसकी युक्तिओं से अनजान नहीं हैं (2 कुरिन्थियों 2:11)। शत्रु की युक्ति को जानना, युद्ध में लाभ प्राप्त करना है!

प्रेरित यूहन्ना शैतान पर संत जनों की विजय का उल्लेख किया है और बताया है कि परमेश्वर की विजय उनकी विजय बन गयीः और वे मेम्ने के लोहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर (शैतान पर) जयवंत हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली (प्रकाशितवाक्य 12:11)। हम नहीं चाहते हैं कि हमारे जीवन की मृत्यु हो; क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है (रोमियों 6:6)।

हाँ, यह लोहू के द्वारा शुद्धीकरण, हमारे होठों का अंगीकार और मसीह के साथ हमारा सह - क्रूसीकरण है, जो नर्क की शक्तियों पर यीशु में विजय के खातिर हमारे विशेष कार्य को बताते हैं। हालेलूयाह!

मेरे साथ आनंद मनाओ; प्रभु यीशु ने हमारे परिपक्व, ''जयवंत'' मसीही बनने के लिये हर प्रबंध किया है। परंतु ठीक इसी समय हमें यह जानना चाहिये कि अगर परमेश्वर से संबंधित बातों में शिक्षा पाने में किंडर गार्डन कक्षा से अधिक ऊपर जाने की इच्छा नहीं है, तो परमेश्वर हम पर आत्मिक परिपक्वता को जबरदस्ती कभी नहीं थोपेगा। उसके प्रति हमारी आत्मिक क्षमता समय के संदर्भ में निर्धारित होती है, जिस दौरान हम पृथ्वी पर हैं तथा इस बात के अनुसार निर्धारित होती है कि हम प्रभु में कितने परिपक्व बनते हैं, इस क्षमता का आनंद हम उसके साथ हमेशा के लिये खुले और घनिष्ट संबंध में तब उठायेंगे, जब हम स्वर्ग पहुंचेंगे।

आत्मिक जांच - पड़ताल

1.जब मैं सोने जाता हूँ; तब मैं क्या सोचता हूँ?

2.बाइबल पढ़ने के दौरान, क्या मैं परमेश्वर से सुनने की अपेक्षा रखता हूँ?

3.बाइबल पढ़ते समय, क्या मैं परमेश्वर की कही हुई बातों पर कार्य करने के लिये इच्छुक रहता हूँ?

4.क्या मेरे जीवन में अब तक ''मुझे'' के संदर्भ में व्याख्या की जाती है अथवा क्या इसकी व्याख्या ''मसीह जो मुझ में जीता है'' के संदर्भ में व्याख्या की जाती है (गलातियों 2:20)?

5.क्या मैं एक आजाद व्यक्ति हूँ? यदि हाँ, तो क्या मैं अपने घमंड का त्याग करने के लिये तैयार हूँ तथा परमेश्वर पर पूरी निर्भरता का पालन करने के लिये इच्छुक हूँ?

6.क्या मैं यह महसूस करता हूँ कि मेरे परमेश्वर की प्रशंसा सर्वोच्च गतिविधि है, जिसमें मैं शामिल हो सकता हूँ?

7.क्या शैतान ने मेरे जीवन में रहने के लिये एक जगह पा ली है?

8.क्या मुझे शैतान पर मसीह की विजय को व्यक्तिगत रूप से हस्तगत करने की आवश्यक्ता है?

मेरे विश्वास ने विश्राम करने की एक जगह पा ली है,
युक्ति में नहीं, और न ही विश्वास वचन में:
मैं हमेशा जीवित रहने वाले पर भरोसा करता हूँ,
मेरे खातिर उसके घाव, विनती करेंगे।

मेरा हृदय शब्द पर झुक रहा है,
परमेश्वर का लिखित वचन,
मेरे उद्धारकर्त्ता के नाम के द्वारा उद्धार,
उसके लोहू के द्वारा उद्धार।

मुझे किसी दूसरे तर्क की जरूरत नहीं है,
मुझे किसी दूसरी विनती की जरूरत नहीं है,
यह पर्याप्त है कि यीशु मरा,
और वह मेरे खातिर मरा,

- लिडी एच. एडमंड्स

अध्याय 5

विश्वास का एक तत्व

आप अपने दिमाग में एक पुरूष का चित्र खींचे अर्थात् कल्पना करें, कि जिसे उपद्रवी नदी को पार करके नदी की दूसरी ओर अर्थात् दूसरे किनारे पर अपने मित्र से मिलने के लिये जाना है। उसके पास नाव नहीं हैं उसके पास सिर्फ़ एक पतंग है और धागे के कई टुकड़े हैं, हर धागा पिछले धागे से अधिक मजबूत है, जब तक कि अंतिम धागा रस्सी की तरह मजबूत नहीं होता है। वह व्यक्ति सबसे अधिक पतले धागे का उपयोग करते हुए अपनी पतंग उड़ाता है; ताकि वह नदी के दूसरे किनारे पर खड़े उसके मित्र के हाथों में पहुंच सके। पतंग के मूल धागे से, अब वह व्यक्ति धागे का एक अपेक्षाकृत अधिक मजबूत अगला टुकड़ा जोड़ता है और उसके बाद जब तक अंतिम धागे अर्थात रस्सी की बारी नहीं आ जाती, वह धागे के मजबूत टुकड़ों को जोड़ता है और अंत में रस्सी को जोड़कर उस दुर्गम नदी के दूसरे किनारे तक फैलाता है। रस्सी को एक वृक्ष की दोनों ओर बांधने के बाद, वह व्यक्ति अपने मित्र तक पहुचने के लिये नदी को सुरक्षापूर्वक पार करने में सक्षम होता है।

परमेश्वर के पुनः जन्म पाये हुए एक संतान होने के नाते, आपने अपने पापों के खातिर परमेश्वर के प्रेमपूर्ण स्थानापन्न पूरक के रूप में प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु में पहले विश्वास कर लिया है। परंतु जब आप

बाइबल पढ़ना आरंभ करते हैं, तब आपका विश्वास उसी तरह उतना ही कमजोर हो सकता है, परंतु इसके बावजूद, नदी पार करने के दौरान, पतंग के साथ अपने संपर्क को संतुलित रखने के लिये उसकी उतनी मजबूती पर्याप्त थी! तथापि, चूंकि विश्वास सुनने से आता है और सुनना मसीह के वचन से होता है (रोमियों 10:17), आपको यह पता चलेगा कि जब आप परमेश्वर के वचन को पढ़ना जारी रखते हैं और उसकी बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं का सहारा लेते हैं, तब आपका विश्वास अपेक्षाकृत अधिक मजबूत होगा। परमेश्वर यह उद्देश्य रखता है कि उसकी प्रत्येक संतान विश्वास में मजबूत हो, जिसके अंतर्गत परमेश्वर के संतान और उसके स्वर्गीय पिता के बीच एक निकट एवं साथ - साथ रखने वाला अर्थात् एक सूत्र में बांधने वाला घनिष्ट संबंध हो।

बाइबल में, यहूदा ने लिखा है कि बचाने वाले विश्वास की उस आरंभिक आधार शिला पर निर्माण करना, कितना अनिवार्य हैंः परंतु हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए... (पद 20)।

एम्लीफ़ाइड बाइबल में, इस धारणा को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया हैः

> परंतु हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में, अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में विश्वास करते हुए; अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में बनाये (नींव डालकर) रखो; **और अनंत जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो**। और उन पर जो शंका में हैं, **दया करो**। और बहुतों को आग में से **झपटकर निकालो**, और बहुतों पर भय के साथ दया करो; वरन् उस वस्त्र से भी घृणा करो, जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है (यहूदा पद 20-23)।

ये पद इस बात पर जोर देते हैं कि हमें बचाने वाले विश्वास की **निश्चित् आधार शिला पर प्रार्थना, प्रेम, जीवित आशा, सक्रिय दया और सच्चाई से आत्माओं को जीतने वाला एक जीवन विकसित करने के द्वारा आत्मिक रूप से निर्माण करना है।**

जिस प्रकार आपका उद्धार, विश्वास के द्वारा एक मुफ़्त वरदान के रूप में प्राप्त किया गया था, उसी प्रकार जब आप पुनरूत्थित प्रभु के पूर्ण पर्याप्त जीवन को विश्वास के द्वारा हस्तगत या सुपुर्द करते हैं, तब आप अंतःनिवास करनेवाले मसीह के द्वारा नियंत्रित किये जायेंगे। हाँ, धर्मी, विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा (रोमियों 1:17; गलातियों 3:11; इब्रानियों 10:38)। चाहे आप स्वर्ग में हों या पृथ्वी पर जब तक रहते हों, आपको विश्वास के द्वारा जीवित रहना चाहिये - परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखते हुए जीवन बिताना चाहिये तथा उसके द्वारा उसका कार्य करने के लिये उसके खातिर उपलब्ध रहते हुए जीवन बिताना चाहिये। यहां तक कि जब आप स्वर्ग पहुंचेंगे, तब आपका विश्वास शरणस्थान होगा, जहां आप परमेश्वर की अनंत प्रतिज्ञाओं और उसके प्रेम में प्रशंसा, प्रसन्नता और धन्यवाद के साथ आनंद मनायेंगे; जो आप के उद्धार पाये हुए मन की समझ से बाहर होगा, जिसे आप कभी समझने के योग्य नहीं होंगे।

आप जब तक इस पृथ्वी पर हैं, तब तक सच्चे विश्वास को उस कार्य को आप में करने के लिये और **आपके द्वारा** करने के लिये प्रभु यीशु मसीह पर लगातार निर्भर रहना चाहिये, जिसे आप अन्यथा कभी पूर्ण नहीं कर सकते थे। परमेश्वर के संतान होने के नाते, हम में से प्रत्येक के लिये विश्वास में बढ़ने की आज्ञा है; हमें हमारे जीवन दाता और हमारे दैनिक जीवन के आयोजक या संयोजक पर अधिक से अधिक निर्भर होना सीखना चाहिये।

इसके बावजूद, प्रायः हम अपनी मानवीय समझ पर निर्भर रहते हैं, जो यथार्थ विश्वास के लिये किसी भी संख्या में चीजों को स्थानापन्न पूरक बनाने का प्रयास करते हैं। हमारी मानवीय आजादी, विश्वास को परमेश्वर के खातिर जिज्ञासा पूर्ण और त्यागपूर्ण सेवा के द्वारा विस्थापित करने का प्रयास करेगी। इसके बावजूद, सच्चे जीवित विश्वास को किसी उपदेशक के प्रति उसके समर्पण के द्वारा किसी कार्यक्रम के लिये मसीही की सर्वभक्ति के द्वारा अनिवार्यतः प्रमाणित नहीं किया जाता है अथवा वह बाइबल की विषय - वस्तुओं के समझने योग्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिये उसके समर्पण के द्वारा अनिवार्य रूप से प्रमाणित नहीं होता है। यद्यपि विभिन्न प्रकार के ऐसे समर्पण कभी - कभी यथार्थ विश्वास को परावर्तित करते हैं; तौभी वे योग्य एवं निजी विश्वास के खातिर एक प्राणघातक आत्म चालित स्थानापन्न पूरक के रूप में जानबूझ कर अथवा अनजाने में भी प्रभुक्त किये जा सकते हैं।

सच्चा विश्वास, पुनरूत्थित प्रभु यीशु मसीह पर हमारी अपेक्षित निर्भरता से सीधे संबंधित होता है। दुर्भाग्यवश, अनेक मसीही यह सोचते हैं कि वे अपने जीवन में अपनी योग्यताओं और निपुणताओं का उपयोग करने के द्वारा अथवा अपने अत्याचारी व्यक्तियों को नौकरी में रखने के द्वारा अथवा बैंक के अपने खाते में उपलब्ध स्त्रोतों पर निर्भर रहने के द्वारा भी सफ़ल हो सकते हैं; परंतु बाइबल हमें यह स्पष्ट बताती है कि पुनः जन्म पाये हुए विश्वासी होने के नाते, हमारा जीवन पवित्र आत्मा के द्वारा नियंत्रित होना चाहिये। यदि हम परमेश्वर में निर्भर रहने वाले विश्वास का पालन नहीं करते हैं, तो पवित्र शास्त्र यह घोषित करता है कि हमारे सभी कार्य जिन्हें हम अत्याधिक मूर्खतापूर्वक उसकी क्षमता प्रदान करने वाली के खातिर स्थानापन्न पूरक बनाते हैं, धीरे - धीरे खत्म हो जायेंगे। मसीही होने

के नाते, हमारी प्रभावशीलता जो हम स्वयं करते हैं उसके प्रति हम कितने जिज्ञासु हैं, इसके द्वारा निर्धारित नहीं होगी; परंतु इस बात से निर्धारण होगी कि सच्चा विश्वास, हमारी सभी गति विधियों का उत्प्रेरक स्त्रोत रहा हैं अथवा नहीं।

परमेश्वर के प्रेम के अलावा आपके जीवन की कोई भी बात, जो आपको सुरक्षा या महत्ता की भावना प्रदान करती है - चाहे आपका पैसा हो, या आपकी शैक्षणिक योग्यता हो, या आपके मित्र हों, या आपका सामर्थ हो, या आपकी नौकरी हो, या यहां तक कि आपका शारीरिक रूपरंग हो - इस बात का एक संकेत है कि आप विश्वास के द्वारा नहीं जी रहे हैं। आपके जीवन में आपकी एकमात्र सच्ची सुरक्षा और महत्ता आपके परमेश्वर और आपके छुड़ाने वाले में प्राप्त होनी चाहिये। यदि आप पृथ्वी पर अपनी तीर्थयात्रा या जीवन यात्रा के दौरान, विश्वास के द्वारा जीवन नहीं बिताते हैं, तो आपको आपके जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति के निरंतर आनंद और आपके माध्यम से प्रेम की उसकी सेवकाई से वंचित होना पड़ेगा। ''क्योंकि जो विश्वास से नहीं है, वह पाप है (रोमियों 14:23)।

जी. कीथ ने विश्वास को उत्प्रेरित करने के लिये परमेश्वर के वचन से आत्मिक भोजन प्राप्त करने के महत्ता की अपनी समझ को अभिव्यक्त करते हुए यह सच कहा है।

एक आधार शिला कितनी दृढ़ है,
तुम परमेश्वर संतो,
जो तुम्हारे विश्वास के लिये रखा है
उसके उत्कृष्ट वचन में।

परमेश्वर की आवाज को अपने हृदय और जीवन में महसूस किये बिना आत्मिक वृद्धि के लिये आधार शिला नहीं रखी जा सकती है और इस आधार शिला के लिये कोई गारे का चूना या सिमेंट का मसाला तब तक नहीं होता है, जब तक उद्धारकर्त्ता के साथ अकेले में समय बिताने की स्वर्गीय योजना का पालन करते हुए उसके साथ घनिष्ट एकता और संगति में नहीं रहते हैं।

विश्वास प्रबल और सक्षम है जो परमेश्वर के साथ जीवित संगति को जन्म देता है अर्थात् उत्पन्न करता है।

कई वर्ष पहले, इंग्लैंड में, लगभग एक सौ पास्टरों के लिये जागृति के शीर्षक पर प्रचार करना, मुझे याद है। परमेश्वर हमारे बीच बड़े सामर्थ से और हृदय - खोजी ढ़ंग से कार्य कर रहा था। एक पास्टर ने हृदय विदारक टूटेपन और आंखों में आंसुओं की धार लिये खड़े होकर कुछ ऐसी प्रार्थना कीः ''हे परमेश्वर, मैं यह अंगीकार करता हूँ कि पहले समय में प्रायः जब मैं इन भाइयों के सामने प्रार्थना में अगुवाई करता तब मैं पवित्र आत्मा की उपस्थिति के बजाय उनकी उपस्थिति और ध्वनि व्यवस्था के प्रति अधिक सजग और संवदेनशील था...''।

हमारे हृदय इतने अधिक धोखा देने वाले हैं कि यहाँ तक कि जब हम प्रार्थना करते हैं, तब यह संभव है कि अपने स्वर्गीय पिता के सामने अपने हृदय की सच्ची जरूरतों को प्रकट या व्यक्त करने का सच्चा प्रयास करने के बजाय हम अपने निजी शब्दों के पीछे छिपते हैं। किसी प्रार्थना को दोहराना, अथवा अपनी प्रार्थनाएँ कहना'', जरूरी नहीं है कि इसका मतलब सच्ची प्रार्थना करना है। जब हमारे हृदय खुले तौर पर, परमेश्वर के अनंत प्रकाश और उसकी पवित्रता की पारदर्शिता में उसके साथ तन्मय हो जाते हैं, तब हमारा प्रभु संगति के हमारे समय से ईश्वरीय आनंद प्राप्त करता है।

सोचने के लिये यह एक भयानक विचार है कि एक जरूरतमंद पापी, पवित्र परमेश्वर के लिये किसी प्रकार के संतोष की भावना लाता है। परंतु बाइबल हमें यह बताती है कि परमेश्वर ने मनुष्य जाति की सृष्टि इस विशेष उद्देश्य से की थीः खुद को महिमा देने के लिये। चाहे हम पसंद करें या न करें, हममें से प्रत्येक व्यक्ति पवित्र परमेश्वर की महिमा के खातिर अपने अस्तित्व में रहता है!

ताकि तुम्हारा चालचलन प्रभु के योग्य हो और वह **सब प्रकार से प्रसन्न** हो और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे और परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ'' (कुलुस्सियों 1:10)। यह कुलुस्से की कलीसिया के लिये प्रेरित पौलुस की सच्ची इच्छा थी। बिशप हेंडली मूले ने ''वह सब प्रकार से प्रसन्न हो'' वाक्यांश को ''उसकी इच्छा के प्रति प्रत्येक अपेक्षा'' के रूप में अनुवाद किया है। संभवतः जब हम यह कहते हैं कि ''खुद को प्रसन्न करो'', तब शायद उसका यही अर्थ है। इस अभिव्यक्ति के माध्यम से, हम अपनी इच्छा से पहले, किसी दूसरे व्यक्ति की इच्छा के बारे में प्राथमिकता के लिये अपनी इच्छा का संचार करते हैं।

अपने परमेश्वर को प्रसन्न करने के बजाय खुद को प्रसन्न करने का प्रयास करने का मतलब है कि हमारे लिये प्रत्येक चट्टान पर पैर जमाना, प्रत्येक दीवार से सिर टकराना तथा जीवन के मार्ग पर आने वाले प्रत्येक अवरोध को पार करना निर्धारित हैं। परंतु जब परमेश्वर की संतान उसकी महिमा और उसके प्रेम के पारदर्शी प्रकाश में अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ वार्तालाप (परस्पर बातचीत) करता है, तब प्रत्येक विश्वासी के हृदय में और खुद परमेश्वर के हृदय में कितना अधिक आनंद होता है!

बाइबल सहायता के साथ यह प्रकट करती है कि ''विश्वास और

परमेश्वर को प्रसन्न करने के'' बीच में एक निश्चित् सम्पर्क है। नकारात्मक व्याकरण संबंधी संरचना, जिसमें अगला पद लिखा गया है, विश्वास और परमेश्वर को प्रसन्न करने के बीच के संपर्क को और भी अधिक महत्वपूर्ण बनाते हुए, उस पर जोर देती हैः परंतु विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है.. इसके बाद, यह पद एक ऐसे सकारात्मक वक्तव्य की ओर स्थानांतरित हो जाता है, जो प्रत्येक विश्वासी के लिये सचमुच अर्थात् निश्चय ही बड़ा प्रोत्साहन लाती है। यह हमें बताती है कि परमेश्वर के साथ संगति का परिणाम परमेश्वर की ओर से कई प्रतिफल हैं... और विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिये कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है (इब्रानियों 11:6)।

जो व्यक्ति अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु के साथ घनिष्ट संगति में रहता है, उसे परमेश्वर अनुग्रहकारी ढंग से जो आत्मिक प्रतिफल प्रदान करता है; वे अवर्णनीय हैं; उन्हें केवल व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने पर समझा जा सकता है। परमेश्वर के साथ जीवित संगति के लिये कुंजी है विश्वास, जो उसके लिये सुख और उसके संतानों के लिये बड़ा आनंद लाती है।

हाँ, विश्वास ऐसा वाहन है, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा पुनरूत्थित प्रभु की विजय को परमेश्वर के संतान के लिये प्रसारित करता है।

जैसा कि हमने ध्यान दिया है, यह दुःखद बात है कि हमारे लिये परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के प्रति खुद को खुला छोड़ना, काफ़ी संभव है - या तो किसी उपदेशक की बातों को सुनने के द्वारा या फिर परमेश्वर का वचन पढ़ने के द्वारा और इन सबके बावजूद इससे कोई आत्मिक लाभ

प्राप्त नहीं होता हैः क्योंकि हमें उन्हीं की नाई सुसमाचार सुनाया गया है, परंतु सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ नहीं हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा (इब्रानियों 4:2)।

केवल जब परमेश्वर का वचन विश्वास के मिश्रित करने वाले चम्मच से सिर से लेकर हृदय तक हिलाकर मिलाया जाता है, तब परमेश्वर के वचन को पढ़ना लाभदायक हो जायेगा। यही वह समय है जब पवित्र आत्मा, हमारे जीवन के लिये प्रभु यीशु मसीह के क्षमता प्रदान करने वाले अनुग्रह को लागू करता है; ताकि हम प्रभु की सेवा करने के प्रत्येक सुअवसर को पकड़ने और उसका लाभ उठाकर उसे अवशोषित करने के योग्य हो सकें और इस कारण जीवन की प्रत्येक समस्या का सामना करने के लिये उसकी क्षमता प्रदान करने वाली शक्ति को प्रमाणित कर सकें।

तथापि, एक बात निश्चित् है कि प्रत्येक सच्चा विश्वासी कठोर विपत्ति और परीक्षा के दिनों का अनुभव करेगा। शैतान स्वतः ही इस संसार और उस के युक्तिपूर्ण प्रस्तावों का उपयोग, हमारे परमेश्वर के साथ की प्रतिदिन की संगति के जीवन से हमें विचलित करने के लिये लगातार रूप से करेगा। शैतान के लिये परमेश्वर के उस संतान से अधिक जघन्य या घृणित कुछ भी नहीं है, जो अपने उद्धारकर्त्ता और परमेश्वर के साथ महत्वपूर्ण वार्तालाप करता है। इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह दुष्ट अर्थात् शैतान, पुनः जन्म पाये हुए मसीहियों को उनके सृष्टिकर्त्ता के साथ मित्रता को तोड़ने के लिये किसी भी हद तक जायेगा; ताकि वह उन्हें विश्वास का निर्माण करने वाले ''साथ समय बिताने'' के अनुभव से दूर रख सके।

किसी आत्मिक रूप से सीधे - सादे और सरल स्वभाव के व्यक्ति के लिये भौतिक जगत जीवन की एकमात्र सच्चाई प्रकट होता है। परंतु

इसके विपरीत जो है, वह सच है; वास्तव में, आत्मिक संसार है जो अंतिम सच्चाई को ग्रहण या स्वीकार करता है। क्योंकि जो कुछ संसार में है अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड, वह पिता की ओर से नहीं; परंतु संसार ही की ओर से है (1 यूहन्ना 2:16)। क्योंकि लोग इतनी अधिक आसानी से धोखा खा जाते हैं कि शैतान को किसी मसीही को मोहित करने के लिये अपनी डरपोक युक्तियों को नियुक्त करने में बहुत थोड़ी कठिनाई होती है।

बाइबल हमें यह बताती है कि हम शरीर की लालसा (बिना जिम्मेदारी का सुख) आंखों की लालसा (बिना जिम्मेदारी की धन संपत्ति) के कारण परीक्षा में पड़ते हैं। परमेश्वर ने हमारे लिये जो योजना बनायी है, उसमें मध्यस्थता करने या बाधा डालने की सभी युक्तियाँ शैतान जानता है। वह हमें परमेश्वर के साथ रहने से दूर करने के लिये कुछ भी करेगा। वह दुष्ट जानता है कि जब हम अपने परमेश्वर के साथ ऐसे घनिष्ट संपर्क में रहते हैं, तब हम आत्मिक तौर पर बढ़ेंगे और उसके परिणामस्वरूप हम अपने स्वर्गीय पिता के लिये बढ़ता हुआ सुख लायेंगे।

शरीर की लालसा: आज ऐसे वर्तमान कोलाहलपूर्ण अनैतिक संसार के द्वारा, जो यौन संबंधी प्रदूषण से स्पष्ट तौर पर संतृप्त अर्थात् भरपूर है, वह शैतान शरीर की लालसापूर्ण भूख को बताता है। हमारा शत्रु उन लोगों के जीवन तक पहुंचने का तैयार मागी पाता है, जो सेक्स संबंधी बातों, शारीरिक बातों और सांसारिक या भौतिक बातों में अवशोषित हो गये हैं। तथापि, जिन लोगों को शैतान के झूठे सुझावों के कारण धोखा हुआ है, वे शीघ्र ही यह जानेंगे कि पाप के सुख का बुलबुला फूट चुका है और उसने खालीपन तथा शर्म की भावना के अतिरिक्त कुछ नहीं छोड़ा है।

आंखों की लालसाः यदि हम वाणिज्य या व्यापार - घंधे के दक्ष एवं चालाक जगत के द्वारा आकर्षित है और दूसरों की संपत्ति से ईर्ष्या करते हैं, तो शैतान अपनी क्रूर वृद्धि करने में सक्षम रहता है। बड़ा धोखेबाज यह बुदबुदाता हैः ''यदि तुम्हारे पास एक नयी घड़ी होती, एक एकड़ जमीन होती या एक अधिक बड़ा घर होता, तो तुम खुश होते''। परंतु चूंकि ... मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परंतु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा (मत्ती 4:4) हम शीघ्र ही यह पता लगा लेते हैं कि हमारी सबसे नयी मन की लहर में हमारे व्यस्त या शामिल होने के बाद, हमारी वह नयी संपत्ति हमारे लिये कोई अंतिम संतोष नहीं लाती है।

जीवन का घमंडः शैतान की विनाशकारी योजनाओं के लिये द्वार हमारे घमंड, आत्म अहंकार और आत्म-पर्याप्ति की झूठी भावना के द्वारा हमेशा विस्तृत रूप से खुला हुआ है। परमेश्वर किसी भी रूप में घमंड से घृणा करता है!

अंततः, अपने भाग्य को नियंत्रित करने के लिये अपनी निजी योग्यता में भरोसा रखना, विश्वास के विरूद्ध है - क्योंकि विश्वास, प्रभु यीशु में भरोसा रखना है। जैसा कि हमने पहले ध्यान दिया है कि परमेश्वर ने कहाः जीवन के घमंड का एक मात्र उत्तर हैः परमेश्वर की दृष्टि, में अपने आपको दीन करो (याकूब 4:10)। नम्रतापूर्वक सर्व सामर्थी परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को पहचानना, शैतान के लिये द्वार बंद करने का एक रास्ता हो सकता है, जबकि वह धूर्ततापूर्वक यह सुझाव देता है कि तुम आत्म संतुष्ट या आत्मपर्याप्त हो। और तुम्हारी निर्भरता - जो विश्वास है - तुम्हें विजय प्रदान करेगी; क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है, हमारा विश्वास है (1 यूहन्ना 5:4)। इन शब्दों में प्रभु यीशु ने

अपने शिष्यों को संकेत देते हुए बताया है कि विश्वास दूसरे लोगों की प्रशंसा और हीन चापलूसी प्राप्त करने के लिये एक धूर्त इच्छा के साथ कभी नहीं रह सकता है। यह एक स्वीकृत - लालसा है, जो अनेक मसीही लोगों की एक बड़ी समस्या है। तथापि, मसीह को ठुकराने वाले एक समाज की स्वीकृति, यथार्थ या सच्ची मसीही शिष्यता का चिंह नहीं है।

जब आप अपना प्रतिदिन साथ समय बिताने का आनंद उठाते हैं, तब आपका विश्वास बढ़ता है। तब उसके बाद, जब आप जीवन की परीक्षाओं और उसके सुअवसरों का सामना करते हैं, तब आपको यह मालूम होगा कि उस सक्रिय और जयवंत विश्वास का पालन कैसे करें।

आत्मिक जांच - पड़ताल

1.क्या मैं प्रतिदिन की अपनी गतिविधियों में, कार्य करने वाले एक विश्वास का आनंद उठाता / उठाती हूँ?

2.क्या मैं प्रत्येक सुअवसर या किसी सुअवसर में किसी समस्या को देखता हूँ, जिससे प्रत्येक समस्या में मसीह की पर्याप्ति प्रमाणित हो?

3.क्या मैं परमेश्वर के कार्य का विकास चाहता हूँ या क्या यह मेरी इच्छा है कि मैं उसके कार्य का विकास करूं?

4.क्या मेरा जीवन उग्रता से पूर्ण है; क्योंकि मैं दिन प्रति दिन प्रभु पर निर्भरता परावर्तित करता हूँ?

हे प्रभु मुझ से बात कर, कि मैं बात कर सकूँ
मेरी आवाज के जीवित स्वरों में,
जैसा कि आपने खोजा, इसलिये मुझे खोजने दे
आपके अपराधी संतान, भटके हुए और अकेले

है प्रभु मुझे सिखा, कि मैं सिखा सकूँ,
उन बहुमूल्य बातों को, जो तू प्रदान करता है;
और मेरे शब्दों को उड़ा, कि वे पहुंच सकें
कई लोगों के हृदय की छिपी गहराईयाँ,

हे प्रभु, मुझे अपनी भरपूरी से भर दे,
जब तक कि मेरा हृदय छलकने न लगे,
प्रज्वलित विचार में और चमकते शब्द में
आपका प्रेम बतायें, आपकी प्रशंसा दर्शायें

- फ्रांसिस रिडली हावरगल

अध्याय 6

बताने का समय

अगली रात्रि को मैं एक आराधना सभा में उपदेश दे रहा था। एक पिता मेरे पास आये और उन्होंने मुझ से कहा कि क्या आप मेरे लिये प्रार्थना कर सकते हैं। परमेश्वर अपने असाधारण सामर्थ में हमारे साथ था। उस पिता ने मुझे बताया कि उनके सहकर्मियों और मित्रों को गवाही देने में उन्हें एक समस्या का सामना करना पड़ता है। जैसा कि मैं किसी की मदद पाने के लिये अक्सर यह करता हूँ, मैं ने चुपचाप प्रभु से सही समझ देने के लिये प्रार्थना की; ताकि मैं जान सकूं और समझ सकूं कि इस व्यक्ति के जीवन में सचमुच क्या जरूरत थी। मैं खुद को यह उत्तर देते हुए पायाः ''मैं नहीं सोचता हूँ कि वह सही और सच्ची समस्या है। क्या आप अभी मेरे साथ घुटने टेकेंगे और परमेश्वर से यह दिखाने के लिये कहेंगे कि गवाही देने में आपको तकलीफ़ या समस्या क्यों होती है?'' पिता ने बिना किसी संकोच के घुटने टेके और प्रार्थना की।

जब उन्होंने ऐसा किया, तब मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि स्वयं परमेश्वर एक गहरी समस्या को, उनके शांत होठों के बावजूद अर्थात् उनके शांत रहने के बावजूद प्रकट कर रहा है। बहुत टूटेपन के साथ मेरा मित्र प्रभु को बता रहा या कि उनके परिवार में वे कितने निरंकुश और अत्याचारी रहे थे

और विशेष रूप से अपने बच्चों के प्रति वे कितने अतिनायक थे। उन्होंने हृदय की गहराई से पश्चाताप के साथ परमेश्वर से क्षमा मांगी।

उस रात्रि, हमने गवाही देने में उनकी समस्या की कोई चर्चा नहीं की; क्योंकि यीशु ने इस पिता में स्वयं को एक नये और जीवित ढ़ंग में प्रकट किया था। अगली रात्रि को वे चमकते चेहरे के साथ सभा में आये और उन्होंने मुझे खुशी से बताया कि ''मैं दिन भर दूसरों को यीशु के बारे में बताने से चुप नहीं रह सका!''

बाइबल में हमें कहीं पर यह नहीं बताया गया है कि हमें उन लोगों के सामने ''उद्धार की एक अविश्कार की हुई योजना के बारे में न बतायें, जिनके हृदय परिवर्तित नहीं हुए हैं! तथापि, हमें प्रभु यीशु मसीह के साथ निरंतर संगति में चलने की शिक्षा दी गयी है; ताकि जब हम उन्हें सुसमाचार का संदेश सुनाते हैं, तब हमारे माध्यम से उसके प्रेम का अतिरिक्त प्रवाह उनके हृदय को परमेश्वर के वचन के सत्य को सुनने के लिये नम्र करके झुकायेगा।

तथापि, उन दिनों में, जब हमारे हृदय, जीवित संगति में उसके लिये तन्मय नहीं हैं, हम यह मालूम करेंगे कि हमारी गवाही अर्थपूर्ण ढ़ंग से प्रभावकारी और फलदायी **नहीं** है। वास्तव में, उन ऐसे दिनों में दूसरों को सुसमाचार बताने या परमेश्वर का वचन सुनाने से रोकने के खातिर हमारे होठों पर मुहर लगा दी जायेगी। और हम अपने आसपास मसीह को ठुकराने वाले जगत के लिये लगातार प्रभु को प्रकट करने में अक्षम और अयोग्य हो जायेंगे।

एक महत्वपूर्ण ''साथ समय बिताने'' में परमेश्वर के साथ प्रति दिन की शुरूआत करना, उन अवरोधों से आपको बचाने या दूर करने के लिये मदद करने में पहला कदम है, जो उस समय आसानी से प्रवेश करते

हैं, जब आपको अपरिवर्तित हृदय वाले लोगों को प्रभु यीशु मसीह के बारे में **सुनाने** का सुअवसार प्राप्त होता है। एक ईश्वरहीन जगत में सचमुच आत्मिक रूप से फ़लदायी जीवन का अनुभव करने और ''सुसमाचार बेचने वाला एक व्यक्ति बनने में एक बड़ा अंतर पाया जाता है! नहीं, किसी विश्वासी को कुछ शब्द कहने के लिये जगत में खड़े होने की आज्ञा नहीं दी गयी है, जो मसीह के लिये गवाही देते हुए प्रतीत होते हैं। इसके बजाय, पुनःजन्म पाया हुआ मसीही इस बात से आश्वस्त किया जा सकता है कि वह मसीह में पहले से है और उस स्थिति या ओहदे से वह प्रसन्नतापूर्वक यीशु के बारे में बात करेगा।

जैसा कि प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहाः मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो, जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें वह बहुत फल फलता है; क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते हो (यूहन्ना 15:5) प्रभु के साथ बने रहना और दूसरों को उसके बारे में बताना आपके उत्तरदायित्व हैं; फल उसका अर्थात् परमेश्वर का उत्तरदायित्व है!

पेंतिकुस्त के बाद, शिष्य लोग अपने पुनरूत्थित प्रभु के साथ व्यक्तिगत रूप से चलने और बात करने के बाद, अपने जोश और आनंद पर नियंत्रण नहीं रख सके। वे जहां कहीं गये, वहाँ उन्होंने लोगों को - यहाँ तक कि ऐसे लोगों को भी बताया, जो यीशु के व्यक्तित्व के विरूद्ध थे - परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के बारे में बताया (प्रेरितों के काम 2:11)। उनसे सुनने वालों की जिज्ञासा बढ़ गयी थी और उसके परिणाम स्वरूप, प्रभु यीशु के प्रभुत्व के शीर्षक पर पतरस का सार्वजनिक उपदेश सुनने के लिये हजारों लोग एकत्र हो गये थे। और जब उसने प्रचार किया, तब पूरी सभा पर व्यक्तिगत पाप का एक दृढ़ निश्चय आ पहुंचा। ठीक वही लोग, जो हाल ही में मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के जिम्मेदार थेः तब सुनने वालों

के हृदय छिद गये और वे पतरस तथा शेष प्रेरितों से पूछने लगे कि हे भाइयो हम क्या करें? (प्रेरितों के काम 2:37)। उस दिन, चेलों की व्यक्तिगत गवाही और पतरस का सार्वजनिक प्रचार ने मिलकर आत्माओं की एक बड़ी फ़सल काटी।

बाद में, एक विरोधी वातावरण में रहते हुए चेलों ने फिर से एक महत्वपूर्ण प्रार्थना सभा में परमेश्वर के साथ मुलाकात की। धार्मिक लोग, जिन्होंने चेलों और उनके संवाद दोनों को पसंद नहीं किया था, उन्होंने उन्हें यीशु के बारे में बात करने से रोक दिया था। इससे पहले, ऊपरौठी कोठरी में, प्रभु यीशु ने चेलों को व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार करने के एक पाढ्यक्रम के अंतर्गत ''गवाही कैसे दी जाये'' से संबंधित निदेश की कोई शिक्षा नहीं दी थी; तथापि, चूंकि वे पवित्र आत्मा से अब भर गये थे; इसलिये जोशीले मसीहियों ने स्वैच्छिक प्रत्युत्तर दियाः क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता है कि जो हमने देखा और सुना है, वह न कहें (प्रेरितों के काम 4:20)। वे फिर से परमेश्वर की उपस्थिति में चले गये थे! उनके हृदय पुनरूत्थित मसीह की सच्चाई के साथ प्रज्वलित हो रहे थे। वे चुप नहीं रह सके!

साठ के दशक के आरंभ में, डॉरथी और मैं ने उस समय के ''लोहे का पर्दे'' के पीछे सेवकाई की थी। राज्य के अंतर्गत पासबानी करने संबंधी कठिनाईयों के बारे में एक जांच का उत्तर देते, एक विश्वासयोग्य पास्टर ने उत्तर दियाः ''अब हम संख्या में कम हैं; परंतु कम से फम हम यह जानते है कि हम कौन हैं हममें से वे, जो पुनरूत्थित मसीह को जानते हैं और हम पर विजय नहीं पाई जा सकती । जीतने योग्य हैं।'' (मेरे कुछ पाठक ऐसी परीक्षाओं का अनुभव पहले कर चुके हैं; परंतु जिस रीति से ये बातें हो रही हैं; अगर प्रभु यीशु जल्द वापस नहीं आता है, तो हम शेष में से अधिकांश लोगों को भी मसीह के खातिर जोखिम उठाने के लिये उन विधियों से बुलाया गया है, जिन्हें हमने कभी संभव नहीं सोचा था)।

हाल ही में, डॉरथी ने अपने साथ समय बिताने की नोटबुक में लिखा हैः ''अगर पवित्र आत्मा मुझ में से होकर प्रवाहित होगा, तो उसकी मृत्यु का मूल्य प्रत्येक सांस के साथ महसूस किया जाना चाहिये।'' यह निश्चित् है कि आरंभिक चेलों ने अपनी निर्भीक गवाही के लिये एक बड़ी कीमत चुकायी थी। परंतु जब यीशु के बारे में बात करने के कारण उन्हें बंदीगृह में डालने की धमकी दी गयी, तब वे एक साथ मिलकर प्रार्थना करने के लिये एकत्र हुए। हम यह पढ़ते हैंः जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये और परमेश्वर का वचन हियाव अर्थात् साहस से सुनाते रहे (प्रेरितों के काम 4:31)।

प्रभावकारी सुसमाचार प्रचार कार्य पवित्र आत्मा के अतिरिक्त प्रवाह का परिणाम होता है - पवित्र आत्मा से भरपूर विश्वासी के जीवन से पवित्र आत्मा का अतिरिक्त प्रवाह - इस प्रकार अंतः निवास करने वाले मसीह की सच्चाई को दूसरों पर प्रकट करना।

जब हम नये - नियम को पढ़ते हैं, तब हम यह ध्यान देते हैं कि आरंभिक कलीसिया में, सुसमाचार - प्रचार - कार्य किसी खोज करने वाले व्यक्ति का केवल एकमात्र परिणाम नहीं था। अगर चेलों ने पहले से जाकर व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का प्रचार नहीं किया होता, तो पेंतिकुस्त के दिन पतरस के उपदेश सुनने के लिये कोई भीड़ नहीं होती (प्रेरितों के काम 2:11)।

जब प्रभु यीशु मसीह की पवित्रता, उसका जीवन और उसका प्रेम किसी विश्वासी के हृदय से निराश एवं उदासीन संसार की ओर प्रवाहित होते हैं, तो लोग नर्म या कोमल हो जाते हैं और परमेश्वर के सत्य को सुनने

के लिये तैयार किये जाते हैं। यही कारण है कि हमें परमेश्वर के वचन के प्रकाश में प्रत्येक दिन, उससे मुलाकात करने की आवश्यक्ता है; ताकि लगातार पवित्र आत्मा से भरपूर रहें (इफ़िसियों 5:18)।

अतिरिक्त प्रवाह वाला सुसमाचार - प्रचार

मेरे मसीही जीवन के आरंभिक दिनों में, मैं युवाओं की संगति का एक अंग या सदस्य था। हम निश्चित् रूप से ज्ञान के बजाय अधिक जोश रखते थे! इसके बावजूद भी, (अथवा संभव है कि इसके कारण!) परमेश्वर ने हमें हमारे उन मित्रों के बीच उपयोग करने के योग्य समझा, जिनके हृदय परिवर्तित नहीं हुए थे। मैं कुछ ऐसे अनुभवों के बारे में बताता हूँ, जिनमें हम युवा विश्वासियों के रूप में शामिल थे।

व्यवसायी जीवनः मेरे हृदय - परिवर्तन के समय, मैं टाऊन कौंसिल के सिविल इंजीनियर लोगों के ऑफ़िस में काम कर रहा था और अध्ययन कर रहा था। एक दिन मुझे टाऊन क्लर्क के प्लश ऑफिसों में भेजा गया! वहां मुझे कड़ी चेतावनी दी गयीः वहां के सबसे बड़े बॉस ने मुझसे उस अवसर पर कहा, जब हम सुसमाचार - प्रचार - कार्य संबंधी सेवाओं को अन्य युवा लोगों के साथ मिलकर समाप्त कर रहे थे कि ''मैं ने पढ़ाई के अतिरिक्त तुम्हारी गतिविधियों के बारे में सुना है।'' प्रत्येक रात्रि, सार्वजनिक घरों के बंद होने के बाद, हमने शहर में एक लोकप्रिय सभा में खुले आम सुसमाचार - प्रचार कार्य संबंधी सभा आयोजित की थी। आरंभ में हम देखते थे कि किनारे से गुजरने वाले लोग प्रचारक की बातों को सुनने के लिये ठहरने के खातिर तैयार नहीं होते थे; इसलिये हम प्रायः खुश हो जाते थे, जब कोई व्यक्ति प्रचारक की बातों को सुनने के लिये ठहरता था। एक नास्तिक व्यक्ति को समझाने में प्रचारक को कठिनाई हो रही थी, दूसरे

लोग भी प्रचारक के साथ शामिल थे; जबकि कुछ दूसरे लोग भी वहाँ एकत्रित हो गये थे। इससे पहले भी काफ़ी बड़ी भीड़ एकत्र होती थी, जिनके बीच हम प्रचार करते थे और कुछ रातों में एक अथवा दो लोग उद्धारकर्त्ता के पास आने के खातिर अपने पाप का अंगीकार करते थे! टाऊन क्लर्क ने मुझे चेतावनी दी कि टाऊन हॉल की व्यवसायिक प्रतिष्ठा के साथ धार्मिक कट्टरता संबंधित या जुड़ी हुई नहीं होनी चाहिये! उसने मुझे इन सब गतिविधियों को बंद करने की कड़ी चेतावनी दी। परंतु चूंकि वह खुली सभा फलदायी साबित हो रही थी; इसलिये हम सभी युवा लोगों को जारी रखने की अगुवाई महसूस हुई!

बाद में, जब मैं बाइबल कॉलेज में अध्ययन करता था, तब मुझे याद है कि हमारे कॉलेज के अध्यक्ष ने चैपल की साप्ताहिक सभा में कहाः ''यदि आप खुले में भीड़ का ध्यान अपनी ओर खींचकर नहीं रख सकते हो, तो किसी कलीसिया में कैदी श्रोताओं को न उकतायें!'' जब मैं ने यह सुना, तब मैं फिर से आभारी हो गया था कि हम युवा लोगों ने अपनी खुली हुई सुसमाचारीय - प्रचार - कार्य को जारी रखा था!

मेरे हृदय - परिवर्तन के तुरंत बाद, मैं ने मसीह में अपने नये विश्वास के बारे में अपने व्यवसायी सहकर्मियों को गवाही दी थी। परंतु तब मैं ने आफ़िस से संबंधित उस एक व्यक्ति को याद किया, जिसके सामने गवाही देने का मुझे मौका नहीं मिला था, यह वह महिला थी, जो प्रति रात्रि गंदे फ़र्श को रगड़कर साफ़ करने के लिये जाती थी। एक रात, मेरे सहकर्मियों के जाने के बाद, मैं ने शीघ्र ही रगड़वाले ब्रश और बाल्टियों का पता लगा लिया और शीघ्र ही फर्श साफ़ कर दिया तथा मैं साफ़ करने वाली उस महिला की प्रतीक्षा करने लगा। जब वह आई, तब मैं ने खुशी से चकित होकर कहा; ''तुम्हारा काम कर दिया गया है''। अचंभित करने वाली

चुप्पी के बाद, उसने मेरे साथ बैठकर एक प्याला चाय पीया। वास्तव में, मैं ने वार्तालाप के दौरान, मैं ने उसे यीशु के बारे में बताया था। जब हमने एक साथ मिलकर बातचीत की और प्रार्थना की, तब उसकी आंखों से बहने वाले आंसुओं को मैं हमेशा याद करता हूं।

सामाजिक जीवनः मैं अपना इक्कीसवां जन्मदिन भी याद करता हूँ, जो कि उन दिनों इंग्लैंड में हमेशा एक विशेष अवसर होता था। प्रायः ऐसी घटना को एक बड़े रात्रि - भोज और उसके बाद नाच के साथ मनाया जाता था। लेकिन जब तक मैं इक्कीस वर्ष का हुआ, तब तक परमेश्वर ने नाच को मेरे पैरों से ले जाकर मेरे हृदय में रख दिया था। इस प्रकार मैं ने अपने इक्कीसवें जन्मदिन की पार्टी देखी, जिसे मेरे माता - पिता ने प्रेम पूर्वक आयोजित किया था, (मसीह के लिये मेरे मित्रों को जीतने के लिये एक अन्य अवसर के रूप में)। इसके अनुसार ही, मैं ने एक प्रचारक को इस अवसर के लिये आमंत्रित किया था! मेरे उन सहकर्मियों और मित्रों को भेजा गया कार्ड, जिनके हृदय परिवर्तित नहीं हुए थे, इस बात की व्याख्या करता था कि भोजन के बाद मेरा एक मित्र भाषण देगा! ''आपकी उपस्थिति के लिये अनुरोध है न कि आपको इनाम के लिये।'' यह सरल चेतावनी उस कार्ड पर दी गयी थी। और उस रात्रि को, मेरे मित्रों में से एक का हृदय - परिवर्तन बड़ी अद्‌भुत रीति से हुआ!

बाद में, जब मैं लंदन के बेप्टिस्ट चर्च में सहायक पास्टर बना, तब युवा लोगों ने नदी तक नीचे जाने की योजना, देश भर का दौरा करने की योजना या खेल - कूद की संध्या का आयोजन इस प्रकार किया कि वह अवसर उन आमंत्रित मित्रों के लिये अत्याधिक आकर्षक प्रतीत न हो, जिनके हृदय परिवर्तित नहीं हुए थे। बिना किसी अपवाद के उन्होंने प्रत्येक ऐसी गतिविधि का अंत सुसमाचार की एक प्रबल प्रस्तुति के साथ किया।

क्यों नहीं? युवा लोगों ने यह पहचान लिया कि उनकी युवा संगति का प्रथम उद्देश्य प्रभु में अपना निर्माण करना था और दूसरा उद्देश्य यह देखना था कि उनके मित्र मसीह के प्रति अपना हृदय - परिवर्तन करते हैं। तब यह जानना थोड़े आश्चर्य की बात थी कि युवा लोगों की संगति परमेश्वर की आशीष के अंतर्गत वृद्धि करती है।

आत्मिक जीवनः मैं ने अपने हृदय - परिवर्तन से पहले अर्थात् उन्नीस वर्ष की आयु से पहले, गंभीरतापूर्वक बाइबल अध्ययन करने में कभी दिलचस्पी नहीं ली थी। इस कारण, उस उम्र में मैं परमेश्वर के वचन के बारे में बहुत थोड़ा जानता था। परंतु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता ग्रहण करने के बाद, प्रत्येक सोमवार की रात्रि को हम में से कुछ नये विश्वासी साथ मिलकर बाइबल का अध्ययन करने के लिये एक घर में एकत्र होते थे। हमारा जोशीला अभिप्राय यह था कि हम परमेश्वर के वचन को अपने सिर के माध्यम से अपने हृदय तक हरसंभव जल्द से जल्द उतार लें! यहां तक कि उन आरंभिक दिनों में, हमने मौलिक तौर पर बाइबल अध्ययन आयोजित किये, जिसका सुझाव मैं ने इस पुस्तक में पहले ही दे दिया है। नहीं, हमने परमेश्वर के वचन का अवलोकन उसे एक धार्मिक पाढ्यपुस्तिका सनझ कर नहीं किया है; परंतु इसके बजाय, उसे हमारे जीवन में अगुवाई देने के लिये एक दिशासूचक के रूप में मानकर किया है।

उन सामान्य बाइबल अध्ययन के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, कुछ अन्य युवा लोगों के हृदय परिवर्तित हुए और हमने साथ मिलकर सुसमाचार के संदेश को आगे अनेक क्षेत्रों तक ले जाने के विभिन्न उपाय आरंभ किये। चूंकि हम में से किसी के पास कार नहीं थी; इसलिये हमने बायसिकल को ट्रॉली बनाने का उपाय सोचा। एक अथवा दो मित्र, जो

मॅकैनिकल इंजीनियर थे, ने आवाज को प्रसारित करने वाले ग्रामोफ़ोन को तैयार किया। हमारे कुछ सप्ताहांतों में, हम सायकल से आसपास के ग्रामीण इलाकों के गांवों में, अपनी ट्रॉली और एम्लीफ़ायर को पीछे बांधकर जाते थे।

मैं एक विशेष गांव को अच्छी तरह याद करता हूँ, जहां मेथोडिस्ट चर्च बंद हो चुका था और उसके द्वार सुरक्षित रूप से बंद थे। सुसमाचार सुनाने के अपने जोश में, हमने उसके तालों की चाबियों का पता लगा लिया, इमारत का उपयोग करने की अनुमति प्राप्त कर ली, फर्श को पालिश कर दिया और तब अपनी प्रसारण व्यवस्था के साथ गांव की हरियाली की ओर आगे बढ़े। गांव के बाहर, हमने एक मंच तैयार किया और अमेरिकन गायक बेव शिया के एक बिल्कुल नये रिकॉर्ड को बजाते हुए, हमने युवक के साथ अभी - अभी इंग्लैंड की यात्रा की थी, जिसने देश में, पहलीं बार हाल ही में प्रवेश किया था। सुसमाचार के गीतों के बीच, हम सोप बॉक्स में अर्थात् मंच पर बारी - बारी गये और मसीह में उसके उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में अपने विश्वास की व्यक्तिगत गवाहियाँ दीं। थोड़े समय के बाद, हममें से कुछ लोगों ने इच्छुक तथा जिज्ञासु लोगों को उपदेश देने की कोंशिश की, जो गांव से निकलकर पास की हरियाली में हमारी बातें सुनने के लिये आये थे। गांव के लोग यह देखकर चकित थे कि परमेश्वर की इच्छानुसार सप्ताह के अंत में चर्च पूरी तरह भरा हुआ था। संडे स्कूल के आगामी शिक्षक ने मसीह को प्राप्त कर लिया था और बाद में उसकी बहन ने भी उद्धारकर्त्ता को ग्रहण कर लिया था। शीघ्र ही, चर्च के द्वार अब बंद नहीं थे और छोटा संडे स्कूल और चर्च की साप्ताहिक आराधना आरंभ हो गयी थी।

पौलुस ने तीमुथियुस को यह आज्ञा दीः ''तू वचन का प्रचार कर;

समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डांट और समझा... (2 तीमुथियुस 4:2)। अगर आज पौलुस सेवकाई करता, तो संभवतः उसने तीमुथियुस से इस प्रकार कहा होताः ''यदि परमेश्वर के वचन से सुनाने का एक सुअवसर है, तो ले लो; अगर कोई सुअवसर उपलब्ध नहीं है, तो उसे बनाओ! ऐसा कोई मौसम नहीं है, जो वचन का प्रचार करने के लिये असमयोचित है!'' मुझे निश्चय है कि पौलुस किसी भी प्रकार के औपचारिक बाइबल अध्ययन को प्रतिकूलता से देखता है, जिसमें विद्यार्थी के द्वारा प्राप्त ज्ञान बाद में विस्तृत नहीं होता है, प्रेम और साहसपूर्ण ढ़ंग से, उन लोगों के लिये, जिनके लिये कलीसिया के दरवाजे कभी बंद नहीं होंगे।

जब आपने परमेश्वर के वचन को अपने सिर से हृदय तक प्राप्त करने के रहस्य को प्राप्त कर लिया है, तब आपको मालूम होगा कि परमेश्वर के वचन को ''आपकी हड़िड़यों में आग'' बनने में अधिक समय नहीं लगेगा, जैसा कि यिर्मयाह ने कहा है।

दुर्भाग्यवश, यदि बाइबल सिर्फ आपके सिर में रहती है, तो दुःखद रूप से आपके लिये यह संभव है कि आप पवित्र आत्मा के व्यक्ति बनने के बजाय सिर्फ वचन के व्यक्ति बने रह जाते हैं। आपकी हड्डियों में कोई आग नहीं होगी! परंतु जब आप परमेश्वर से ''साथ वक्त बिताने'' के दौरान नियमित रूप से मिलते हैं, तब आप अधिक से अधिक महसूस करेंगे कि आपके लिये परमेश्वर के वचन का व्यक्ति बने बिना उसी समय पवित्र आत्मा का व्यक्ति बने रहना असंभव है!

हाँ, जब हम परमेश्वर के वचन से पढ़ते हैं, तब परमेश्वर हमसे बात करता है और वह हमसे जो कहता है, उसे दूसरों को बताने की अपेक्षा हमसे करता हैः ''इसलिये हे मनुष्य के संतान, मैं ने तुझे इस्राएल के घराने

का पहरूआ ठहरा दिया है; तू मेरे मुंह से वचन सुन-सुनकर उन्हें मेरी ओर से चिता दे (यहेजकेल 33:7)। परंतु जब तक हम पहले नहीं सुनते हैं, तब तक दूसरों से कहने का कोई उपयोग या लाभ नहीं है। इसके साथ हमें सुनकर व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के मुख से निकले हुए वचन का प्रत्युत्तर देना भी पहले आवश्यक है।

मसीही धर्म की वकालत करने वाले अनेक लोग हैं; परंतु दुर्भाग्यवश, बहुत ही कम लोग हैं, जो जीवित परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध की सच्ची गवाही देने में सक्षम हैं।

प्रेरित यूहन्ना ने बाद में, अपने निजी व्यक्तिगत अनुभव से मसीह के साथ अपनी जीवित संगति की सच्चाई की गवाही आनंदपूर्वक दी। इसलिये, जैसी हम आशा करते हैं, उसने इस घनिष्ट संगति में दूसरों को शामिल होने के लिये आमंत्रित कियाः... जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं; इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है (1 यूहन्ना 1:3)।

आत्मिक जांच - पड़ताल

1. क्या मैं दोनों जगह को पहचानता हूँ - वह जगह, जहां मैं काम करता हूँ और वह जगह, जहां मैं अपने निजी मिशन क्षेत्र के नाते रहता हूँ?

2. क्या मैं लोगों को हृदय - परिवर्तन के लिये प्रत्याशियों के रूप में देखता हूँ अथवा क्या मैं मसीह में नये जीवन के लिये उनसे प्रेम करने के खातिर प्रार्थनापूर्वक उनकी तलाश करता हूँ?

3. आखिरी बार, मैं ने व्यवहारिक रूप में किसी की मदद करने के द्वारा मसीह के खातिर गवाही देने का अधिकार कब प्राप्त किया था?

4. क्या मेरे होंठों पर यीशु के बारे में निर्भीकता पूर्वक बात करने से रोकने हेतु मुहर लगा दी गयी है अर्थात् वे बंद कर दिये गये हैं; क्योंकिः

- मेरे जीवन ने समझौता कर लिया है?

- मेरा घमंड नासरत के तिरस्कृत और ठुकराये हुए यीशु के साथ चलने के लिये इच्छुक नहीं है?

अनंत ज्योति

अनंत ज्योति! अनंत ज्योति!
प्राण कितना पवित्र होना चाहिये,
जब तेरी तलाश करने वाली दृष्टि के भीतर रखा जाता है,
यह सिकुड़ता नहीं है, किंतु शांत आनंद के साथ,
जीवित रह सकता है और तेरी ओर देख सकता है!

तेरे सिंहासन को घेरने वाली वे आत्माएँ
प्रज्वलित आशीष को उठा सके;
परंतु वह निश्चय ही सिर्फ उनकी है,
चूंकि उन्होंने कभी नहीं, कभी नहीं जाना है
इस प्रकार के पतित संसार को।

ओह, मैं क्या करूं, जिसका मातृ वृत
अंधेरा है, जिसका दिमाग क्षीण है,
रूपरंग के सामने,
और मेरा खुला आत्मा सहता है
बिना बनायी हुई किरण को?

मनुष्य के उठने के लिये एक मार्ग है
उस उन्नत या परम निवास स्थान तकः
एक बलिदान और एक चढ़ावा,
पवित्र आत्मा की अर्जाएँ,
परमेश्वर के साथ एक वकील

ये, ये दृश्य के लिये हमें तैयार करती हैं
ऊपर की पवित्रता के बारे मेंः
अज्ञान और रात्रि के पुत्र
अनंत ज्योति में रह सकते हैं,
अनंत प्रेम के माध्यम से!

- थॉमस बिन्नी (1798-1874)

अध्याय 7

फल अथवा आग

मेरा एक मित्र बेंग्त एक स्वीडिश - अमरीकी था, जो यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका में देशान्तर के पश्चात् रहने लगा था। वहाँ वह एक सफ़ल मसीही व्यापारी बन गया था। बेग्त, अपनी विभिन्न प्रकार की कई सेवकाई के बीच, मिशन क्षेत्रों में मिशनरी हवाई जहाजों को उनके गंतव्य स्थलों तक भेजकर बहुत प्रसन्न होता था। एक साल, उसे और उसके एक मित्र को मिशन एविएशन फैलोशिप (एम.ए.एफ) के लिए एक छोटा हवाई जहाज अलास्का ले जाने के लिये कहा गया। काफ़ी दूर की यात्रा तय करने के बाद, उसके मित्र ने उसे फ्रेंक बैंक्स हवाई अड्डे पर छोड़ दिया और बेंग्त ने यात्रा का आखिरी माग (चरण) अकेले ही तय करने का निर्णय लिया।

बेंग्त के मित्र ने जाने से ठीक पहले, एक छोटा आपात् बंडल या पुलिंदा छोटे हवाई जहाज में रखा दिया। उड़ान के इस अंतिम चरण में, अनापेक्षित रूप से एक तूफ़ान आ गया। अलास्का की पर्वत श्रेणियों मे खतरनाक हवाओं के कारण, वह छोटा हवाई जहाज नीचे चला गया। ऊपर - नीचे उचकते और लुढ़कते हुए वह जहाज उछला और पर्वत की चोटी के किनारे पर गिरा। अगले तीन दिनों तक, हिम वर्षा हुई; परंतु

परमेश्वर की अच्छाईयों के कारण, हवा ने जहाज के मध्य से बर्फ को हटा दिया; जिससे जहाज को बर्फ़ न ढ़ंक सकी। तथापि, जहाज के मध्य भाग के बर्फ से चारों ओर से घिरे होने के कारण, जब यू. एस. कोस्ट गार्ड ने हवाई जहाज से बचाव अभियान के लिये उड़ान भरी, तब बेंग्त के छोटे जहाज की ओर उनका ध्यान नहीं गया।

सेना के द्वारा अपने बचाव अभियान के दल को बुलाने पर, बेंग्त के पुत्र ब्रूस ने, जो एक विश्वासी युवक था, ने एम.ए.एफ़. के पायलट के साथ मिलकर प्रार्थना की कि परमेश्वर उन्हें बेंग्त तक पहुंचाने में उनकी मदद करे। इस दौरान, बेंग्त, भूमि पर पड़ा हुआ दुर्बल होता जा रहा था और आखिर में विलंब से लिया गया उसका फ़ोटो बताता है कि वह अपने प्रियजनों को हाथ हिलाते हुए अलविदा कह रहा था, वह उदास था; किंतु फिर भी मुस्कुरा रहा था। इसके बावजूद, परमेश्वर की दूसरी योजनाएँ थीं। जब ब्रूस और उसका मित्र दोनों ने गिरे हुए जहाज के दृश्य पर से उड़ान भरी, तब जहाज के सफेद धातु वाले मध्य भाग से परावर्तित होती हुई सूर्य की किरणों पर उनकी खोजी दृष्टि पड़ी और उन्होंने बेंग्त की जगह को जान लिया।

मैं इस कहानी को फिर क्यों दुहरा रहा हूँ? बाद में, बेंग्त ने मुझे बताया कि उन दस दिनों के दौरान, मैं मसीह के न्याय - सिंहासन की छोर में जी रहा था। अगली बार, जब बेंग्त से मेरी मुलाकात हुई, तब उसने मुझे बताया कि जब वह उस बर्फीले पर्वत पर अकेला था, तब पवित्र आत्मा ने उसे इस बात की अनुमति दी कि वह पृथ्वी पर अपने जीवन का पुनरावलोकन करे, क्योंकि वह शीघ्र ही परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिये वहां से बुलावे की अपेक्षा कर रहा था। उसने कहा कि वह ठीक वैसा था, मानो जैसे कि ''विश्वासियों के न्याय का सिंहासन'' उसके पास

समय से पहले आ गया था, तब बेंग्त ने अपनी समर्पित मसीही सेवकाई के बर्षो पर ध्यान दिया और विचार किया कि अनंतकाल के लिये इसमें से कितना सचमुच गिना जायेगा। अर्थात् इसमें से कितने की गणना की जायेगी।

बेंग्त ने बड़ी गंभीरतापूर्वक मुझे बताया कि उसने यह महसूस कियाः उसने पवित्र आत्मा की भरपूरी के अतिरिक्त प्रवाह के परिणामस्वरूप सेवकाई करने के बजाय चर्च बोर्ड मीटिंग, मिशनरी काडंसिल मीटिंग और अपनी कलीसियाई गतिविधियों में प्रसन्नतापूर्वक कार्य किया था, जिसमें उसने निजी निपुर्णताओं एवं क्षमताओं को अभिव्यक्त किया था।

बेंग्त ने कहा कि उन दस दिनों में, परमेश्वर ने उसे यह दिखाया था कि ऐसी ''लाभदायी योग्य'' गतिविधियाँ सिर्फ़ ''लकड़ी, घासफूस और पेड़ या ढूँठ है (हमारे जीवन के उन दिनों और कार्यों के लिये बाइबल में दी गयी उपमा हैं, जो विश्वासियों के लिये न्याय के सिंहासन पर जल जायेंगी और इसलिये अनंतकाल के लिये उनकी गणना नहीं की जायेगी)।

बेंग्त के लिये वह भयानक अनुभव, उसके जीवन में सचमुच एक जागृति का अनुभव था। हममें से वे लोग, जो उससे प्रेम करते थे और उसे जानते थे (काफ़ी लंबे अर्से से) तथा परमेश्वर का कार्य करने की उसकी जिज्ञासा की सराहना करते थे, बाद में, उन्होंने उसके शेष वर्षो के जीवन को समझा। उसने उसे अपनी योग्यताओं और शक्ति के संदर्भ में नहीं समझाया था, परंतु परमेश्वर की आशीष और उसके जीवन के माध्यम से होने वाले नये प्रेम के अतिरिक्त प्रवाह के द्वारा समझाया था, जहाँ कहीं उसने गवाही दी थी, वहाँ समझाया था।

यह मसीहियों के याद रखने के लिये एक उच्च एवं सुशील विचार है कि सभी विश्वासियों के लिये तैयार किये गये न्याय के सिंहासन पर हम

प्रकट होंगे। महान् सफ़ेद सिंहासन, वह जगह है, जहाँ सभी अविश्वासी लोगों का न्याय किया जायेगा और उन्हें खोये हुए अनंतकाल के लिये दोषी ठहराया जायेगा। जबकि विश्वासियों के न्याय का सिंहासन वह जगह है, जहाँ प्रत्येक वह चीज़, जो विश्वास से नहीं है, जला दी जायेगी और प्रत्येक वह चीज़ जो विश्वास से है, परमेश्वर की महिमा के लिये हमेशा के लिये जीवित रहेगी; क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं ही कार्य किया है! उस दिन, कई मसीहियों को यह जानकर दुःख होगा कि कलीसिया में उनका व्यवसाय भी तथा धार्मिक लोगों के बीच उनकी लोकप्रियता भी, जो उनके जीवनकाल के दौरान उन्हें अत्याधिक संतुष्ट करती थी; परमेश्वर के मन में उनकी गणना सच्ची आत्मिक सेवकाई के रूप में नहीं की गयी थी।

सफेद पृष्ठ

मेरे पास मेरे सामने साफ़ सफेद कागज के दो टुकड़े हैं। दोनों खाली हैं। किसी ने उन पर न तो कुछ लिखा है और न ही कुछ खींचा है। अगर आप उन्हें देखेंगे, तो उन पर कोई विचार छपा हुआ अथवा कोई सुंदर चित्र दिखाई नहीं देगा। परंतु उसी समय आपको किसी व्यक्ति की ग़लतियाँ दिखाई नहीं देंगी! जिस प्रकार वहाँ कोई सुंदरता नहीं है, ठीक उसी प्रकार, वहाँ कोई दाग या धब्बा नहीं है। **सिर्फ़ सफेद पृष्ठ; कुछ अधिक नहीं, कुछ कम नहीं।**

आपके और मेरे जीवन में कई दिन हैं, जो उन सफेद पृष्ठों के समान हैं। यद्यपि एक बार पाप का धब्बा लग चुका है; तौभी अब परमेश्वर की दया के कारण और प्रयाश्चित के बलिदान के यीशु के उस लोहू के द्वारा, किसी विश्वासी के जीवन का प्रत्येक पृष्ठ शुद्ध हो चुका है। कुछ शेष नहीं रहता है; किंतु वह जो बर्फ़ के समान उजला

सफेद है (यशायाह 1:18)। जब मैं एक मसीही होने के नाते अपने जीवन के कुछ पृष्ठों पर पुनः ध्यान देता हूँ, तब मैं दुःख के साथ याद करता हूँ कि जानबूझकर अथवा अनजाने में, इच्छापूर्वक या दुर्बलता के कारण मैं ने कैसे पाप किया है और पवित्र आत्मा को दुःखित किया है। यीशु के लोहू के अतिरिक्त, उन सफेद पृष्ठों में हमेशा के लिये पाप और आत्म केंद्रीकरण के बदसूरत धब्बे लग गये होते। परमेश्वर ने मुझ पर कैसी दया, और कैसा अनुग्रह किया है; ताकि वे पृष्ठ जिन पर एक बार पाप के धब्बे लग गये थे, अब बर्फ की तरह सफेद हो गये हैं! **सफ़ेद पृष्ठ; परंतु परमेश्वर की प्रशंसा हो, कोई दाग या धब्बे नहीं!**

तथापि, यह मेरे लिये भी एक उच्च एवँ सभ्य विचार है कि पवित्र आत्मा ने मेरे द्वारा जो कुछ नहीं किया है, उसकी गणना अनंतकाल के लिये नहीं की जायेगी। पौलुस प्रेरित के शब्दों में, जीवन के उन दिनों का वर्णन ''बचाया हुआ; परंतु जलते - जलते'' के रूप में किया गया है (1 कुरिन्थियों 3:15)। जब मेरे जीवन से पवित्र आत्मा का अतिरिक्त प्रवाह नहीं होता है, तब मेरे क्षमा करने वाले प्रभु के द्वारा मेरे पापों को मिटाने के बावजूद भी, कुछ भी उपलब्ध हुआ, जिसकी गणना अनंतकाल के लिये होगी। **सफेद पृष्ठ; परंतु दुर्भाग्यवश, कुछ भी अधिक नहीं!**

यद्यपि जीवन के कुछ पृष्ठ हमेशा के लिये सफेद रहेंगे, तौभी दूसरे पृष्ठ अत्युत्तम सौंदर्य के अमिट निशान को उन पर लिख लेंगे - यीशु के निजी कीलों से छिदे प्रेम के हाथ के द्वारा पेंट किये गये पृष्ठ''। प्रत्येक विश्वासी के लिये, ये महिमायुक्त पृष्ठ या पेज उन दिनों के वृतांत हैं, जब हम उपलब्ध पात्र थे, जिनके द्वारा एक अनंत परमेश्वर अपना अनंत कार्य करने में सक्षम था। **हाँ, सफेद पृष्ठ; परंतु परमेश्वर की प्रशंसा हो, अपेक्षाकृत बहुत अधिक!**

व्यर्थ गये वर्ष

यह कितनी दुःखद बात है कि जब ऐसे लोग, जिन्हें परमेश्वर के द्वारा प्रतिदिन ''आने और भोजन करने के लिये'' आमंत्रित किया जाता है, वे अपने जीवन के उन वर्षों को व्यर्थ में गंवाते हैं; जिनमें वे अपने प्रभु के साथ गहरी संगति का आनंद उठा सकते थे और स्वयं उद्धारकर्त्ता के लिये सुख ला सकते थे।

मेरा हृदय दुःखद आनंद से भर जाता है, जब मैं एक प्रौढ़ सज्जन को याद करता हूँ, जिसका उद्धार गवांये हुए सुअवसरों और जीवन के सतही सुखों पर गंवाये हुए वर्षो के दुख द्वारा कलंकित हो गया था। मेरे हृदय परिवर्तन के शीघ्र बाद ही, कुछ अन्य युवा लोगों के साथ, जिन्होंने भी हाल ही में मसीह को ग्रहण किया था, मैं एक स्थानीय अस्पताल में सेवकाई के लिये गया। प्रत्येक दूसरे शनिवार की रात्रि में, हम सुसमाचार का संदेश सुनाते थे और कुछ प्रौढ़ लोगों के साथ मिलकर प्रार्थना करते थे, जिन्होंने अपने अस्पताल के वार्ड को हमेशा के लिये छोड़ने की आशा त्याग दी थी। एक विशेष संध्या, मैं एक प्रौढ़ व्यक्ति के बिस्तर के पास गया, जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो वह अगले शनिवार शत्रि को हमारे आने तक जीवित नहीं रहेगा।

बाइबल के हमारे छोटे से संवाद को सुनने के बाद वह अत्याधिक भावुक हो गया था, उसके चेहरे पर अश्रुधारा लिये हुए उसने हकलाते और हिचकिचाते हुए यह बतायाः ''मैं जानता हूँ कि बचाया गया हूँ और स्वर्ग जाने वाला हूँ''। मैं ने उत्तर दियाः ''वह अद्‌भुत है''। इसके आगे मेरे कुछ कहने से पहले, वह अनियंत्रित आनंद के साथ नहीं; परंतु आंतरिक चोट की पीड़ा के साथ सुबकने लगा। उसने कमज़ोर स्वर में फुसफुसा कर

कहाः ''हाँ - लेकिन पूरी तरह नहीं - आप देखें कि मैं अब इकहत्तर वर्ष का हूँ और मेरे जीवन के सत्तर वर्ष व्यर्थ चले गये!''

एक नया युवा विश्वासी होने के नाते, मैं क्या उत्तर दे सकता था? मुझे याद नहीं है कि मैं ने उसे दिलासा देने का कैसे प्रयास किया; परंतु उस रात मुझे घर वापस जाना याद है, उस रात धुटने रेककर प्रभु से यह प्रार्थना करनाः ''हे प्रभु, यहाँ तक कि अब भी मैं जीवन में भविष्य की ओर देखता हूँ कि एक दिन मैं पीछे पलटकर बीते जीवन को देखूंगा। जब स्वर्ग आने के लिये मेरा समय आयेगा, तब मैं व्यर्थ गये वर्षो के साथ वहाँ आने के बजाय उद्धार पाये हुए अपने आत्मा के साथ आना चाहता हूँ। आज रात, मैं फिर अपना जीवन तुझे सौंपता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप उसे अनंतकाल के लिये सचमुच गणना किये जाने योग्य बनायेंगे।''

पुराने नियम में, हबक्कूक ने यह चेतावनी दी है कि अत्याधिक उर्जा या शक्ति लगाना संभव है और बाद में दुर्भाग्यवश यह मालूम हो कि हमने जो कुछ भी किया है, उसकी कोई आत्मिक कीमत नहीं है। जब उसने अपने समय के लोगों को यह सूचित किया कि धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा (हबक्कूक 2:4), तब उसने ऐसे लोगों को इस बात की भी चेतावनी दी, जो परमेश्वर पर इस बात के लिये पूर्ण निर्भरता के विश्वास सिद्धांत को लागू नहीं करते हैं कि जीवन की गतिविधियाँ आग का कौर होने के लिये परिश्रम हैं (हबक्कूक 2:13)। क्योंकि उन लोगों ने अपने नगर को परमेश्वर की ओर से पूर्णतः आज़ाद होकर स्थापित किया था, अब वहां सिवाय राख के कुछ नहीं बचा था। इसी तरह, हम जो कुछ करते हैं, अगर वह प्रभु यीशु मसीह पर पूर्ण निर्भरता से नहीं है, तो वह एक दिन परमेश्वर की प्रज्वलित उपस्थिति में शून्य अर्थात् कुछ नहीं रहेगा।

इसी तरह, पौलुस ने नये - नियम में यह चेतावनी दी हैः

> अब यदि कोई इस नींव पर सोना या चांदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रकट हो जायेगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिये कि आग के साथ प्रकट होगाः और वह हर एक का काम परखेगी कि कैसा है? जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पायेगा; और यदि किसी का काम जल जायेगा, तो वह हानि उठायेगा; पर वह आप बच जायेगा; परंतु जलते - जलते (1 कुरिन्थियों 3:12-15)।

नर्सिंग होम में, वह इकहत्तर वर्षीय सज्जन खुश था कि वह आग के माध्यम के रूप में बचा लिया गया था। आग जो उसके जीवन की लकड़ी, घास फूस और सूखी ढूंढ को जलायेगी, वह समान आग है, जो सोना, चांदी और बहुमूल्य पत्थरों को शुद्ध करती है, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा, परमेश्वर के निजी कभी नष्ट न होने वाले इमारत के पत्थरों का निर्माण करने के लिये मुक्त किया गया है।

अनंत प्रकाश

एक अनंत परमेश्वर अपना अनंत कार्य प्रत्येक उस मसीही के द्वारा करेगा, जो मसीह में बना रहता है, अपने विश्वास का पोषण करता है और अपने जीवन के लिये परमेश्वर के वचन को लागू करता है। ऐसे विश्वासी लोग प्रति दिन का सामना प्रसन्नतापूर्ण अपेक्षा के साथ इस प्रकार करने के योग्य होंगे, मानो वे निश्चयपूर्वक गवाही देते हैंः इस कारण हम इस राज्य को पाकर, जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है (इब्रानियों 12:28)। प्रभावकारी,

नियमित ''साथ समय बिताना'', हमें पवित्र आत्मा की शक्ति में चलने के लिये प्रोत्साहित करेगा, न कि हमारे शरीर की उर्जा में।

एक दिन, परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति के सर्वखोजी प्रकाश में, जीवित परमेश्वर के कार्य के खातिर उपलब्ध पात्र बने हुए लोग आत्मविभोर करने वाले आनंद के साथ खुशी मनायेंगे। हाँ, जब हम दिन प्रतिदिन उसके भोज की मेज के निकट आते हैं, तब प्रकाश और प्रेम का परमेश्वर उसके साथ पारदर्शी संगति का आनंद उठाने के लिये हमें आमंत्रित करता है। इस तरह, हम एक अंधकारमय और स्वार्थी जगत के लिये उसके प्रकाश और प्रेम का स्त्रोत एवं माध्यम बन जायेंगे।

आत्मिक जांच - पड़ताल

1.अगर मैं जिस ढ़ंग से अभी रहता हूँ, उसी ढ़ंग से रहना जारी रखूं, तो मसीह के न्याय सिंहासन पर मेरे जीवन से कोई फ़ल होगा?

2.जब मैं प्रार्थना करता हूँ, तब क्या मैं परमेश्वर तक उसे अनंत प्रकाश समझकर पहुँचता हूँ अथवा क्या मैं उसे स्वर्ग में मेरे व्यक्तिगत लाभ प्रदान करने वाले के रूप में समझता हूँ?

3.अब, क्या मुझे दाऊद की प्रार्थना करने की जरूरत हैः तू अपने वचन के अनुसार मुझे जिला (भजन संहिता 119:25)।

जीवन की रोटी को तू तोड़,
प्रिय प्रभु मेरे लिये,
जिस प्रकार तूने रोटियों को तोड़ा था,
समुद्र के किनारेः
पवित्र पृष्ठ के उस पार,
हे प्रभु, मैं तुझे ढूँढ़ता हूँ;
मेरी आत्मा तेरे लिये प्यासी है,
ओह जीवित वचन।

तू जीवन की रोटी है
हे प्रभु, मेरे लिये;
तेरा पवित्र वचन सत्य है
वह मुझे बचाता हैः
मुझे खाने और रहने के लिये दे
अपने साथ ऊपर;
मुझे अपने सत्य से प्रेम करना सीखा,
क्योंकि तू प्रेम है

ओह, अपना पवित्र आत्मा भेज,
हे प्रभु, अभी मेरे लिये,
कि वह मेरी आंखों को छू सके
और मुझे देखने योग्य बना सके;
मुझे छिपे हुए सत्य को दिखा
अपने वचन के भीतर,
और तेरी पुस्तक में प्रकट किया हुआ
मैं प्रभु को देखता हूँ।

- मेरी ऐन लैथबरी

अध्याय 8

आओ और भोजन करो

गलील की झील के रेतीले तट पर, परमेश्वर का पुनरूत्थित पुत्र अकेला और लोगों की नज़रों से दूर खड़ा था। यह संभव है कि वह सुबह की धुंध थी, जिसने उसकी महिमायुक्त उपस्थिति को थके हुए चेलों की आँखों से उसे ढ़ँक लिया था। अथवा शायद क्रूर क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद, उनकी आत्मिक आँखें आवरण से आच्छादित हो गयी थीं।

तट से थोड़ी ही दूरी पर, निराश चेले एक छोटी नाव (मछली पकड़ने वाली नाव) में एक साथ बैठ गये। उन्होंने एक निराशापूर्ण रात्रि मछली पकड़ने में बितायी थी और उस दौरान उन्होंने कुछ नहीं पकड़ा था। यह ठीक वैसी ही बात थी, जैसा कि कोई जले पर नमक छिड़कता है (घाव का अपमान करता है) और पूछता है कि बच्चों, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने के लिये है? तब तट पर खड़े उस रूचि न लेने वाले व्यक्ति के होठों से एक स्पष्ट सर्वपरिचित आज्ञा आयी नाव की दायीं ओर जाल डालो, और वहाँ तुम्हें कुछ मिलेगा।

यूहन्ना ने अपनी रात्रिनिंद्रा से जागते हुए उस परिचित स्वर का प्रत्युत्तर दिया और आनंदपूर्वक अचंभित हुआः क्या वह प्रभु है! चेलों ने पुन जागृत आशा के साथ अपने प्रभु के निर्देशों का पालन किया और तुरंत ही जाल बड़ी संख्या में मछलियों से भर गयी थी! तब पतरस ने अपने

जोश में लहरों में कूद पड़ा और अपने स्वामी की ओर उत्सुकता से तैरने लगा (यूहन्ना 21:11)।

तट पर, स्वयं महिमा के पुनरूत्थित प्रभु ने आग रख दी थी और जला दी थी। जब सभी - चेले वहां एक साथ एकत्र हुए, तब यीशु ने दो मछली मंगायी और जल्द दी एक स्वादिष्ट भोजन तैयार करने पकाया। यीशु ने उन भूखे किंतु आनंदित पुरूषों को अपना उदार आमंत्रण दियाः आओ और खाओ (यूहन्ना 21:12)।

यह वही समान उदार निमंत्रण है, जो बीस लाख बरामदों में गूंजता रहता है। प्रभु यीशु, प्रति सुबह अनंतकाल के तटों पर खड़ा रहता है और अभी भी हमें उस स्वर्गीय भोजन में भागीदार होने के लिये आमंत्रित करता है जिसे उसने सावधानी पूर्वक तैयार किया है। हाँ, वह स्वयं परमेश्वर ही है, यीशु हमारा प्रभु और उद्धारकर्त्ता, जिसने अत्याधिक सावधानी के साथ हमारे लिये प्रति दिन भोजन तैयार किया है। वह हमारे विश्वास के लिये भोजन है; वह परमेश्वर का वचन है; वह बाइबल है।

एक या दो क्षण में, मैं आपको ''सुनने'' के लिये आमंत्रित करूंगा, जबकि मैं साथ समय बिताने के लिये परमेश्वर के वचन पर ध्यान देता हूँ। मैं इस व्यक्तिगत प्रार्थना के समय को रिकॉर्ड करता हूँ; क्योंकि यह एक व्यवहारिक प्रोत्साहन साबित हो सकता है और आपके लिये अनमोल मदद हो सकता है, जबकि आप अपने स्वामी के उदार आमंत्रण ''आओ और खाओ'' का नियमित रूप से प्रत्युत्तर देते हैं। मैं दो बिल्कुल अलग - अलग स्त्रोतों से आपके साथ एक सच्चे जीवन में साथ समय बिताने में भागीदार होने के लिये उकसाया गया हूँ।

पहलाः मेरे एक मित्र ने, जिसने नम्रतापूर्वक पिछले अध्यायों की प्रतिलिपि या हस्तलिपि पढ़ी और मुझसे इस पुस्तक के लिये अनुरूप और अनुकूल निष्कर्ष बताने का आग्रह किया।

दूसराः अनेक वर्षों के दौरान, समय - समय पर मुझे इस बात की गवाही देने के सुअवसर प्राप्त हुए कि परमेश्वर ने लोगों को किस प्रकार विशेष रीति से आशीष प्रदान की है, जबकि मैं ने अलग - अलग समूहों और कलीसियाओं की एक सामूहिक साथ समय बिताने में अगुवाई की है।

ऐसे अवसरों पर, कोई भी उपस्थित व्यक्ति भाग ले सकता है; पवित्र आत्मा के प्रति शांत प्रार्थना के सिवाय, कोई दूसरे प्रश्न पूछने की आवश्यक्ता नहीं थी; कोई उपदेश देने की जरूरत नहीं थी! हमने संगति के प्रत्येक समय का आरंभ साथ प्रार्थना करने के द्वारा किया; ताकि पवित्र आत्मा हमारा शिक्षक हो सके। तब हमने एक स्वर में साथ मिलकर ऊँची आवाज में चुने हुए पवित्रवचन पढ़े। उसके पश्चात्, हम पवित्रशास्त्र के उस खंड या वचन को आरंभ से फिर एक साथ पढ़ा। पहले पहला पद पढ़ा। अगले पद को पढ़ने से पहले हमने तीस सेकंड की चुप्पी रखी। उस शांत समय के दौरान, प्रत्येक व्यक्ति ने प्रार्थनापूर्वक पढ़े हुए पद का मनन किया। अगर अध्याय के बाद, कोई प्रश्न लिखे गये हैं, जिसका उत्तर उस पद में से दिया जा सकता था, तो उस ओर ध्यान दिया। प्रार्थना और मनन के शांत समय के बाद, प्रत्येक व्यक्ति सभा को यह बताने के लिये स्वतंत्र था कि वह पद उसके जीवन में पवित्र आत्मा के द्वारा कैसे लागू किया गया है। इसके बाद प्रत्युत्तर की प्रार्थना की गयी या तो उस व्यक्ति के द्वारा जिसने पद में से बताया था अथवा सभा के किसी दूसरे सदस्य के द्वारा।

आकस्मिक तौर पर, मुझे यकीन है कि सामूहिक साथ समय बिताने के लिये यह विधि सबसे अधिक लाभदायी विधि है। ऐसे समय में, मैं भी पाठकों से विनती करता हूँ जो सामूहिक बाइबल अध्ययन के लिये इस पुस्तक का उपयोग करते हैं;

ताकि उपरोक्त सुझावों को लागू करने के उद्देश्य के लिये अनेक आनेवाली सभाओं को अलग कर दे। (आगे मदद के लिये पृस्तक में प्रश्न दिये गये हैं)।

सामूहिक साथ समय बिताने की विधि स्वर्गीय थॉमस बी. रीस ने मुझे सबसे पहले बतायी थी। वे एक ब्रिटिश प्रचारक थे। वे यंग पीपुल हॉलीडे कॉन्फ़्रेंस सेंटर में कार्यरत थे, जहाँ मैं ने मसीह को ग्रहण किया था।

टॉम ने जो प्रश्न हमारे उत्तर के लिये पूछे थे, वे उन्हीं प्रश्नों के अलग रूप थे, जिन्हें साथ समय बिताना अध्याय में पहले सुझाया गया है।

पिछले कई वर्षो से, मैं ने इस रीति से अनेक सभाएँ आयोजित की हैं, जिनमें परमेश्वर की उपस्थिति की असाधारण भावना तथा रही है तथा पवित्र आत्मा ने लोगों के हृदय और जीवन से बातचीत की है।

विक्टोरिया, कनाडा के बपटिस्ट चर्च के एक पास्टर ने ऐसी एक सभा के बाद टिप्पणी की कि ''अपनी संपूर्ण सेवकाई के दौरान, मैं ने पहली बार इतनी अधिक आशीषमय और ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण सभा में भाग लिया।''

इसी तरह, ओल्ड सिटी ऑफ़ जेरूसलेम के अरबों के लिये एक क्रिश्चियन एंड मिशनरी एलायन्स चर्च में कई दिनों की सभाओं के बाद, केनेडियन बाइबल कॉलेज के सेवानिवृत प्रिंसीपल ने टिप्पणी कीः ''हम यहाँ यरूशलेम में एक सच्चे आत्मिक आरंभ के इतने अधिक निकट कभी नहीं थे!''

परमेश्वर ने चर्च सभाओं, गृह संगति, बाइबल कॉन्फ्रेंसेस और

युवा संगति में लोगों को आशीष प्रदान की है; इसके बावजूद, परमेश्वर के वचन के प्रति एक व्यक्तिगत पहुंच प्रदान की है।

तथापि, मैं इस बात का उल्लेख करना चाहता हूँ कि जब मैं ने अपने व्यक्तिगत साथ समय बिताने को लिखने का प्रयास किया है, तब मुझे मालूम हुआ कि परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संगति का अनुभव करना निजी तौर पर अत्याधिक आनंददायक है या सार्वजनिक सभा में भी आनंद दायक होने के बजाय व्यक्तिगत संगति को सच्चाई, दमक और प्रेरणा को लिखना अधिक कठिन है।

आज परमेश्वर के साथ मेरे साथ समय बिताने की महत्वपूर्ण बातों को लिखने के लिये मैं कुछ प्रमुख नियम अपने लिये बनाया हूँ।

पहलाः मैं ने बाइबल से अपना मन पसंद पद नहीं चुना है और सर्वाधिक परिचित खंड नहीं चुना है! मेरे प्रतिदिन साथ समय बिताने में, मैं कुरिंथ की कलीसिया को पौलुस की लिखी दूसरी पत्री पढ़ रहा हूँ।

दूसराः पवित्रशास्त्र के आज के भाग का निम्नलिखित रिकॉर्ड पदों को क्रमगत रूप से लिखना नहीं है।

तीसराः मैं अपने साथ समय बिताने के वृतांत को हर संभव स्वाभाविक बनाने के लिये, आपको वे पद बताऊँगा, जिन्हें पवित्र आत्मा ने आज मेरे हृदय के लिये जीवित बनाया है।

चौथाः मैं आपको यह बताऊंगा कि परमेश्वर की आवाज को ध्यान व्यक्तिगत ध्यान केंद्र में कैसे लाया गया था, जब मैं ने प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर के वचन पर पहले से सुझाये गये प्रश्नों का उपयोग करने के द्वारा मनन किया।

जब मैं आपको अपने मनन के बारे में बताता हूँ, तब आप समझेंगे कि कोई भी साथ समय बिताना, एक तीव्र व्यक्तिगत अनुभव है। मैं जानता हूँ कि आज आपकी परिस्थितियाँ, मेरी परिस्थितियों के समान नहीं हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि आज जो मेरी परिस्थितियाँ हैं, वे छः महीने के दौरान ऐसी नहीं रहेंगी। परमेश्वर अपने महान् प्रेम के कारण हमसे मुलाकात करता है और हम जहाँ रहते हैं, वहाँ हमसे बातें करता है, वहाँ नहीं जहाँ हम पहले रह चुके हैं और न ही वहाँ जहाँ हम रहेंगे, और न ही वहाँ, जहाँ कोई दूसरा व्यक्ति रहता है; परंतु वहां, जहाँ हम रहते हैं या जहाँ हम हैं। क्योंकि परमेश्वर आपकी निजी जरूरतों और परिस्थितियों के संबंध में आपसे बात करेगा; आपको प्रतिदिन परमेश्वर की ओर से आने और भोजन करने के लिये निमंत्रण दिया जाता है।

निश्चय बाइबल हमारे हृदय के लिये परमेश्वर का एकमात्र **जीवित** और **शक्तिशाली** वचन ही नहीं है; परंतु यह हम में से प्रत्येक के लिये उसका व्यक्तिगत वचन भी है! क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और शक्तिशाली है... यह मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है (इब्रानियों 4:12)। इससे अधिक व्यक्तिगत और क्या हो सकता है?

आज मैं बाइबल के अपने मनन में न्यू किंग जेम्स वर्सन से पढ़ रहा हूँ। अब, मैं 2 कुरिन्थियों के अध्याय 1 को जब पढ़ता हूँ, तो उसे सुनने के लिये आपको आमंत्रित करता हूँ। कृपया, आप मेरे साथ अपनी बाइबल खोलें।

यह सुबह के 5:00 बजे हैं मैं ने अपना द्वार बंद कर दिया है और परमेश्वर के साथ अकेले रहने के लिये अपनी बाइबल को खोला है।

आज मेरे जीवन को कुछ परिस्थितियों ने घेरे रखा है; ठीक इस समय भी जब मैं खुली बाइबल और खुले हृदय के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में आता हूँ:

* डॉरथी को जो लगातार और बढ़ती हुई पीड़ा हो रही है, मैं उसके प्रति चिंतित हूँ। बीते सप्ताहों में वह पीड़ा काफ़ी अधिक हो गयी है।

* मैं इस बात के प्रति भी चिंतित हूँ कि इस शरद ऋतु में, हमारी सेवकाई की योजना के अंतर्गत, जो कार्यक्रम और समय सारिणी तैयार की गयी है, उसे अंतिम परिणाम देने तक उसके स्वास्थ्य की दशा उपयुक्त और अनुकूल होगी अथवा नहीं। इसलिये प्रायः बीते समय में, डॉरथी को लम्बी मिशनरी यात्रा करने के कारण, जब मैं असाधारण ढ़ंग से पीड़ित देखता हूँ, तब मैं उससे कहता हूँ कि ''डॉरथी, मैं तुम्हें फिर से कभी इस प्रकार की परिस्थिति में नहीं ले जाऊंगा या डालूंगा''। परंतु उसके बाद मैं पाता हूँ कि परमेश्वर ने एक तरीके से अथवा दूसरे तरीके से हमारी संयुक्त सेवकाई पर अपनी आशीष प्रदान की है और हमने साथ मिलकर कहा है कि ''यह अत्याधिक महिमायुक्त रूप से उपयोगी था!'' इस बार के बारे में, हे प्रभु, आप क्या सोचते हैं?

* आज मेरा हृदय भारी है, इसका कारण है, कीनिया की स्थिति; जहां परमेश्वर बीते समय में हमारी सेवकाई को आशीष प्रदान कर प्रसन्न था। उस देश में, संपूर्ण परिस्थिति मुद्रास्फिति की दर तेज होने के कारण अत्याधिक अस्थायी या अस्थिर हो गयी है। मेरी इच्छा है कि हम उन अनेक नागरिकों के लिये कुछ

कर सकने में सफ़ल और सक्षम होते, जो यहाँ विश्वासयोग्यता पूर्वक मसीह की सेवकाई कर रहे हैं।

* डॉरथी के परिवार में और मेरे परिवार में कई सदस्य या तो समय से पहले मर गये अथवा बुरी तरह बीमार हैं। हमारी जटिल और कभी कभी अनिश्चित समय सारिणी के कारण तथा डॉरथी की स्थायी एवं कठोर शारीरिक सीमित क्षमता के कारण, हम उन्हें व्यवहारिक रूप से यह बताने में असमर्थ और अयोग्य हो जाते हैं कि हमें उनकी कितनी फ़िक्र है।

प्रार्थना

हे पिता, आज सुबह मैं असाधारण तौर पर मुझे जगाने के लिये आपकी प्रशंसा करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आपका उद्देश्य सिर्फ मेरे हृदय से बातें करना ही नहीं हैं; परंतु आप अपने वचन के माध्यम से उन सब लोगों से बात करना चाहते हैं और उन्हें आशीष देना चाहते हैं, जो बाद में मेरे द्वारा तेरा वचन सुनेंगे।

हे प्रिय प्रभु, आप जानते हैं कि उन लोगों को तेरा वचन सुनाना इतना आसान नहीं हैं, जो यह जान सकें कि मैं तेरे बारे में सचेत और संवेदनशील हूँ। इसलिये, मैं अत्याधिक विशेष रीति से यह प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे हृदय को, मेरे मन और मेरे कलम एवं पेंसिल को पारदर्शिता, सच्चाई और तेरे साथ व्यक्तिगत घनिष्टता की एक सच्ची भावना से अभिषिक्त कर।

मैं तेरी उपस्थिति में पुनः स्वीकार करता हूँ कि मेरा जीवन, परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है। इस अद्भुत आश्वासन के लिये आपको धन्यवाद। हे प्रिय प्रभु, मैं आपकी प्रशंसा इसलिये भी करता हूँ कि हालांकि मैं सबकुछ अपने हाथों से यहाँ पृथ्वी पर लिखा रहा हूँ,

संभव है कि स्वर्ग के मेरे महान् महापुरोहित को जो आप हैं, मेरा निजी दृष्टिकोण स्वीकार न हो या दुःखद लगे। लेकिन इसके बावजूद, आप अपने सिद्ध ज्ञान और अपनी इच्छानुसार स्वर्गीय पिता के सिंहासन के सामने मेरी प्रार्थनाओं और प्रशंसा को प्रस्तुत करेंगे। इसलिये बड़ी आशा के साथ, मैं आज सुबह आपका वचन पढ़ता हूँ। आज तू मेरी आंखें खोलः ताकि मैं आपके वचन की अद्‌भुत बातें देख सकूं।

प्रिय पाठक, आज मैं कुरिन्थियों की दूसरी पत्री का अध्याय 1 खोलता हूँ और पूरे अध्याय को धीरे धीरे ऊँची आवाज में पढ़ता हूँ। मैं यह एक विशेष और अलग आवाज में लम्बे अंतराल के साथ करता हूं। मैं आपको भी यह करने के लिये आमंत्रित करता हूँ।

जब कुछ क्षण पहले, मैं ने अध्याय को इस रीति से पढ़ा, तब मसीह के सेवक के रूप में पौलुस के अनुकरणीय आचरण के प्रति मैं अत्याधिक सचेत हो गया हूँ। अब मुझे यह स्पष्ट मालूम हो गया है कि परमेश्वर के साथ मेरा अधिक से अधिक समय बिताना, आज मेरे प्रश्न का उत्तर देगाः **क्या इस पद में, अनुकरण करने योग्य कोई उदाहरण है?**

पूरे अध्याय को पहली बार मेरे पढ़ने से, पवित्रात्मा के द्वारा मेरा हृदय पहले ही पौलुस के सुशील और उत्तम उदाहरण का अनुकरण करने के लिये नम्र और दीन हो गया है। मैं प्रभु का एक बेहतर सेवक बनना चाहता हूँ। इससे पहले कि मैं अध्याय का मनन एक - एक पद को लेकर करूं, मैं प्रभु को यह बताऊँगाः

प्रार्थना

हे प्रभु यीशु, मैं आपके लिये सेवकाई के मेरे जीवन पर उस समान संतोष के साथ ध्यान देता चाहता हूँ, जिसे मैं ने पौलुस की गवाही में

महसूस किया है, जिसके बारे में मैं ने अभी पढ़ा है। मैं महसूस करता हूँ कि आपने मेरे जीवन में हजारों तरीके से आशीष बरसायी है और मुझे यह जानकर दुःख होता है कि प्रायः यह एक दिशा वाली सड़क के समान एक तरफ़ा रहा है। मेरा हृदय, आपके साथ संगति करने की मेरी इच्छा को सच्चाई से प्रकट करते हुए बोझिल हो गया है; परंतु जब तू मुझे अपने कष्टों की संगति में भागीदार होने का अवसर प्रदान करता है, तब मैं एक डरपोक की तरह संकोच करता हूँ। अब जबकि मैं इन पदों पर पुनः मनन करनेवाला हूँ, तब कृपया तू मुझे अपनी उपस्थिति के साथ आच्छादित कर ले अर्थात् ढ़ंक ले और अपनी शक्ति से मेरे जीवन को जीवन परिवर्तित करने वाले ढ़ंग से, एक ताजा स्पर्श प्रदान कर; ताकि आपके प्रिय नाम के खातिर मेरी स्वार्थी आदत स्थायी तथा मौलिक रूप से बदल सके।

अब मैं फिर से उसी अध्याय को बारी - बारी से क्रमशः पद और विचार के अनुसार पढ़ता हूँ। जब मैं ऐसा करता हूँ, तब मैं लगातार यह प्रार्थना करूंगा कि पवित्रात्मा संदेश देने में मुझसे कोई चूक न होने दे जिसे परमेश्वर मेरी प्रार्थना के प्रत्युत्तर में मेरे हृदय को बताना चाहता है। इस रीति से, परमेश्वर के साथ मेरा दो तरफ़ा वार्तालाप आरंभ होगा। मैं खुद को भी यह स्मरण दिलाता हूँ कि जब मैं प्रत्येक पद पर मनन करता हूँ, तब मुझे जल्दबादी करते हुए किसी ऐसे पद को नहीं छोड़ना चाहिये, जिससे मैं पहले ही परिचित हूँ। आज, संभव है कि परमेश्वर उस पद को मेरे हृदय के लिये नये और विशेष रूप में जीवित बना दे। अतः मैं यह पूछता हूँः क्या इस खंड में पिता परमेश्वर के बारे में कोई ताजा विचार है?

पठन

पद 3ः अनेक तरह की दया का पिता और सभी प्रकार की राहत का परमेश्वर

आज, मैं विशेष रूप से ध्यान देता हूँ कि परमेश्वर के पितृत्व के बारे में यह वक्तव्य, पद 2 में पाये गये परमेश्वर के पितृत्व के खातिर दिये गये एक अन्य निर्देश से पहले आता है। जब मैं पृष्ठ के किनारों पर दिये गये संकेत पद देखता हूँ, तब मैं पढ़ता हूँ कि पद 2 का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता हैः हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता। सिर्फ उसके बारे में सोचेंः प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता मेरा भी दया और राहत का पिता है। मेरी राहत के लिये, मेरे स्वर्गीय पिता ने मेरे लिये अपना अनुग्रह और अपनी शांति प्रदान की है।

प्रार्थना

हे पिता, मैं आपके सामने धन्यवाद और प्रशंसा के साथ झुकता हूँ। मैं तुझे तेरे अनुग्रह के लिये धन्यवाद देता हूँ। आपने हृदय को वह प्रदान किया है, जो अनंत रूप से आपका है - आपकी शांति! आपके अनुग्रह के द्वारा - शांति, निस्तब्धता, मेलमिलाप, जो आपमें हमेशा बसते हैं, आप आज मेरे हैं! हालेलूयाह! आपके पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे व्याकुल हृदय को शांत करने के लिये प्रार्थना करता हूँ। जब मैं आपकी पवित्र उपस्थिति में झुकता हूँ, तब अपने निवास करने के द्वारा, मेरे जीवन को निस्तब्धता और शांति से भर दे।

पठन

पद 4: वह हमारे सब क्लेशों में शांति देता है; ताकि हम उस शांति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शांति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों।

जब मैं पौलुस की इस गवाही पर मनन करता हूँ, तब मैं कुछ अन्य

दूसरे शब्दों पर ध्यान देता हूँ, जिनका उसने ''राहत'' के संदर्भ में उपयोग किया है, जिसे (राहत को) उसने अपने स्वर्गीय पिता से ग्रहण किया है। वे हैं: विपत्ति, या परीक्षा, पीड़ा, तकलीफ़ या समस्या, कष्ट और मृत्यु दंड। ऐसा प्रतीत होता है कि पवित्र आत्मा मेरा ध्यान इस तथ्य की ओर खींच रहा है, कि ये अनुभव, राहत की सामान्य धारणा से बहुत दूर कर दिये गये हैं।

जब मैं आगे पढ़ता हूँ, तब ध्यान देता हूँ कि पौलुस ने भी यह गवाही दी है जीवन की सभी कठिनाइयाँ को परमेश्वर के द्वारा एक विशिष्ट उद्देश्य के लिये अनुमति दी गयी है: कि हम स्वयं पर भरोसा न रखें; परंतु उस परमेश्वर पर भरोसा रखें, जो मुर्दो को जिलाता है। मैं पद 4 में यह अवलोकन भी करता हूँ कि परमेश्वर ने पौलुस के प्रति राहत की सेवकाई इसलिये नहीं की थी कि वह आराम से रहे; परंतु इसलिये कि वह दूसरों को आराम और शांति दे। मुझे यह प्रार्थना करनी चाहिये!

प्रार्थना

हाँ प्रभु, आप मेरे जीवन के उन अवसरों को जानते हैं, जब मैं दुःखी लोगों को सचमुच राहत और सांत्वना देना चाहता था। मैं चाहता हूँ कि आप डॉरथी को, जो अपने शरीर में लगातार और तीव्र रूप से कष्ट उठाती है, अपनी राहत प्रदान करें।

मैं अक्सर उससे बहुत कुछ लेता हुआ प्रतीत होता हूँ और आपके अनुग्रह और शांति से उसके लिये बहुत कम शांति और सांत्वना की सेवकाई करता हूँ। मेरे स्वार्थीपन को कृपया क्षमा कर और मुझे ताजगी से सेवा करने की इच्छा से भरपूर कर न कि सेवा पाने की इच्छा से। और जबकि मैं लाखों ऐसे दुःखी लोगों के बारे में सोचता हूँ, जो एकांत और कठिन स्थितियों में रहते हैं, जहाँ भूख, रोग और मृत्यु का राज्य

होता है, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपका अनुग्रह और आपकी शांति मेरे हृदय में इतनी अधिक बढ़ेगी तथा आपकी उपस्थिति मेरे जीवन में इतनी अधिक स्पष्ट और प्रत्यक्ष होगी कि उसका उपयोग दूसरों के जीवन के बोझ को उठाने तथा भयावह प्राणधातक दशा में रहने वाले लोगों को राहत देने के लिये होगा।

लेकिन इसके बावजूद, हे प्रभु यीशु, मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि मैं अधिक स्पष्ट रूप से यह समझना चाहता हूँ कि आपकी राहत जीवन की हर कठिनाई का सामना कैसे करती है; चाहे वे कितनी भी कठोर या जटिल क्यों न हों। इसके साथ ही साथ, आपके प्रेमी हृदय से यह अनुमति प्राप्त हुई है कि मुझे स्वयं पर नहीं; परंतु तुझ पर भरोसा करना चाहिये।

अब इस समय, परमेश्वर का वचन मुझे प्रबलता से भेद रहा है। मैं महसूस करता हूँ कि पौलुस की भी सेवकाई कठिनाईयों की एक कठिन सूची के द्वारा की गयी थी; ताकि वह अपने आत्मविश्वास पर अधिक दृढ़ न रहे और परमेश्वर पर भरोसा रखे। तब मुझे क्यों शिकायत करनी चाहिये, यदि परमेश्वर व्याकुलता और शत्रुता के द्वारा मेरे घमंड का समाधान करना चाहता है और मेरी प्रार्थनाओं, उत्तर अपने प्रेम से देना चाहता है।

प्रार्थना

हाँ, प्रभु, मेरे जीवन में आपके प्रेम की सेवकाई के लिये, मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ। यद्यपि दूसरे लोगों के पढ़ने के लिये, इस प्रार्थना को लिखना कठिन है; तौभी मैं प्रोत्साहित हूँ कि पौलुस जिनसे प्रेम करता था, उन लोगों के सामने अपनी कठिन परीक्षाओं और विपत्तियों के बारे में पारदर्शी था। उसने जीवन की अच्छी बातों के लिये अपनी गवाही को सीमित करके नहीं रखा; इसलिये मैं अपने

हृदय की गहराई से, आज प्रत्येक अकेले क्षण के लिये जो तेरे प्रति मेरी सेवकाई में आये और प्रत्येक हृदय विदारक बात के लिये जिन्हें तूने मेरे मार्ग में आने की अनुमति दी, तेरी प्रशंसा करूँगा। इसके अलावा, मैं उस प्रत्येक क्षण के लिये तेरी प्रशंसा करूँगा, जिसमें मैं गलतफ़हमी का शिकार हुआ, अपने जीवन के प्रत्येक मूर्खतापूर्ण और पापपूर्ण अकस्मात् कार्य के लिये, मेरी असफ़ला के समय आत्मविभोर करने वाली प्रत्येक परिस्थिति के लिये; क्योंकि मैं ने तेरे बजाय खुद पर भरोसा किया - मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ! अब, प्रभु यीशु, आपकी पवित्र उपस्थिति में, मैं पौलुस के साथ यह स्वीकार करता हूँ कि मैं खुद पर भरोसा न रखकर तुझ पर भरोसा रखूंगा।

प्रभु, सिर्फ एक दूसरे दिन, मैं ने पौलुस के वचन को पढ़ाः परमेश्वर से संबंधित हमारी पर्याप्ति। इस सुबह, मैं विश्वास के द्वारा यह स्वीकार करता हूँ कि सिर्फ़ आप मेरी पर्याप्ति हैं। प्रिय प्रभु, पवित्रशास्त्र के शब्दों में, वे मेरे सामने खुले हुए हैं; मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ - कि आपने मुझे छुड़ाया है; कि आप मुझे छुड़ाते हैं; कि आप मुझे फिर भी छुड़ायेंगे - मुझसे! प्रभु यीशु आपको धन्यवाद, एक ऐसे महान् उद्धार के लिये आपको धन्यवाद!

अब, प्रभु, पवित्र आत्मा के द्वारा आपकी राहत के साथ मेरे हृदय को सामर्थ मिलने पर, मैं अपेक्षा के साथ आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आज आप मुझे व्यवहारिक तौर पर और प्रेमपूर्वक उन लोगों तक राहत और मदद पहुंचाने के खातिर उपयोग में लाएँ, जिनसे आज मेरी मुलाकत होगी और जिन्हें आपके प्रेम की जरूरत है।

पठन

पद 11: तुम भी मिलकर प्रार्थना के द्वारा हमारी मदद करोगे, कि जो वरदान... हमारी ओर से धन्यवाद करें।

मैं सोचता हूँ कि अगर पौलुस की सेवकाई के लिये अनेक लोगों ने परमेश्वर से प्रार्थना नहीं की होती, तो उसकी सेवकाई कैसी होती। इसी तरह, मैं यह सोचता हूँ कि आज मैं कहां होता, अगर मेरे अनेक मित्रों ने साथ मिलकर प्रार्थना में मेरी मदद नहीं की होती।

प्रार्थना

हे पिता, मैं अपने प्रति आपने महान् प्रेम को नहीं समझ सकता हूँ, जिसे आपने अपने कई बच्चों के हृदय में मेरे और डॉरथी के लिये प्रार्थना करने के लिये स्थापित किया। मैं ऐसे अद्‌भुत प्रेम के लिये अपना आभार कैसे प्रकट करूं?

अब, मैं विशेष तौर पर, मध्यस्थ प्रार्थना के दौरान इन कुछ मित्रों को परमेश्वर के हाथों में सौंपता हूँ। जब मैं ऐसा करता हूँ, तब मैं पवित्रशास्त्रों के प्रकाश में उनके लिये प्रार्थना करने की कोशिश करता हूँ जिनसे पवित्र आत्मा मेरे निजी हृदय और जीवन को प्रभावित करता रहा है और यह प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर, अपनी निजी राहत (सामर्थ) उनके हृदय और जीवन में लाये, जबकि वे उस पर अपना भरोसा रखते हैं।

पठन

पद 15, 17-18: और इस भरोसे से मैं चाहता हूँ कि पहिले तुम्हारे पास आऊँ.... शरीर के अनुसार करना चाहता हूँ?.... तुम्हारे लिये हमारे शब्द हाँ और नहीं, नहीं थे।

मैं विचार के इस क्रम पर मनन करता हूँ। पौलुस ने गवाही दी कि

दूसरी बार कुरिन्थ जाने का उसका एकमात्र कारण यह था कि वह जिनसे प्रेम रखता है, उन संत जनों की सेवकाई राहत, सांत्वना और लाभ करे। उसने वहाँ जाने की इच्छा उनसे कुछ पाने के उद्देश्य से नहीं की थी, बल्कि वह उन्हें देना चाहता था। उसने यह भी गवाही दी थी कि उसने अपनी यात्रा की योजनाएँ हल्के तौर पर नहीं लनायी थी। (मैं ध्यान देता हूँ कि यहाँ इस बात का उल्लेख नहीं किया गया है कि उसकी यात्रा के खर्च की कीमत कौन चुकायेगा तथा उसके जाने में पैसे का कोई योगदान नहीं था!)। निश्चय ही, कुरिन्थ जाने के उसके निर्णय यें व्यक्तिगत लाभ का कोई योगदान नहीं था।

प्रार्थना

प्रिय प्रभु, आपके पवित्र आत्मा के द्वारा और आपके वचन के माध्यम से, मेरे हृदय के किसी भी ग़लत अभिप्राय को दिखा, जो पवित्र आत्मा के कार्य को बंद कर दे, जबकि मैं आपकी इच्छा निर्धारित करता हूँ कि आने वाली शरद ऋतु में सेवकाई के लिये मुझे कहाँ जाना चाहिये। प्रभु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कुरिन्थ के के मसीहियों के द्वारा पौलुस के अभिप्रायों का ग़लत अर्थ निकालने के बावजूद भी, जब उसने अपनी यात्रा की योजना में असामान्य परिवर्तन करने का निर्णय लिया, तब उसे सिर्फ़ पवित्र आत्मा की अगुवाई के द्वारा सहमत किया गया था। किंतु प्रभु, आपको धन्यवाद हो कि पौलुस के द्वारा प्रत्युत्तर में हाँ कहकर फिर उसे ना में बदलने पर, जिस शब्द का उसने प्रचार किया वह कभी हाँ नहीं था और तब नहीं, क्योंकि मसीह में यह हमेशा हाँ है, अपरिवर्तित और अनंत आपके हृदय में कोई परिवर्तन नहीं होते हैं, हे प्रभु, पौलुस ने परमेश्वर के जिस वचन का प्रचार किया, वह अनंत रूप से आपके द्वारा प्रमाणित किया गया था। हे प्रभु,

आपको धन्यवाद, मेरे संसार में ऐसी ठोस चट्टान होने के लिये - मेरे संसार में, जहाँ परिस्थितियाँ इतनी जल्दी परिवर्तित होती हैं, जहाँ योजनाएँ बनायी जाती हैं और कभी- कभी बदल दी जाती हैं। हे प्रभु, मुझे आपकी योजनाओं को जानने की जरूरत है। मुझे ऐसे निर्णय से बचाएँ, जो अवसरवादिता से प्रवाहित होती हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे प्रतिदिन अपनी संगति में चलने दे।

पठन

पद 20: क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएँ हैं, वे सब उसी में हाँ के साथ हैं: इसलिये उसके द्वारा आमीन भी हुई कि **हमारे द्वारा** परमेश्वर की महिमा हो।

जैसा कि मैं अवलोकन करता हूँ कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमारे माध्यम से व्यक्तिगत बनायी गयी, तो मैं यह पूछता हूँ: **क्या इस खंड में मेरे दावा करने लिये कोई प्रतिज्ञा है?**

प्रार्थना

*हे प्रभु, **हमारे द्वारा**? परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ - हमारे द्वारा। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ **मसीह** में? हे प्रभु, **परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएँ मसीह में? हाँ,** प्रभु, आपको धन्यवाद। आज सुबह, आपकी पवित्र उपस्थिति में, मैं अपनी हाँ तथा उस प्रभु के लिये आमीन लिखना चाहता हूँ! हे परमेश्वर, मैं उन **सब बातों** को ग्रहण नहीं कर सकता हूँ, जिन्हें **आपने** मुझे **मसीह में** प्रदान की है। सचमुच, मैं इस बात की कल्पना नहीं कर सकता हूँ कि आपके बिना मेरा जीवन कितना*

खाली होगा। प्रिय प्रभु यीशु आज मैं यह स्वीकार करता हूँ कि आप वह सब हैं, जिनकी मुझे जरूरत हैं; जबकि मैं सुअवसरों, परीक्षाओं और निर्णयों के साथ आज की मांगों का सामना करता हूँ।

अब मैं कुछ समय अपने प्रभु की आराधना और प्रशंसा करने में बिताता हूँ, जब उसकी शांति मेरे प्राण को भरपूर करती है। मैं अपनी प्रार्थना के निवेदनों के विशिष्ट उत्तर नहीं जानता हूँ; परंतु इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता है; क्योंकि मेरे हृदय में परमेश्वर की शांति है। मैं ने अपने प्रभु के साथ अमूल्य साथ समय बिताने का वक्त गुज़ारा है। उसकी प्रशंसा हो! अब, जबकि मैं आज जाता हूँ, परमेश्वर ने अपने वचन से मुझे बहुमूल्य भोजन प्रदान किया है, जिस पर मेरा मन और हृदय मनन कर सकता है जबकि मैं बाद में, दिन की मांगों का सामना करूंगा।

इसलिये, आइये लगातार याद रखें, उस प्राथमिक कर्तव्य को याद रखें कि हममें से प्रत्येक को हर सुबह ''अपने प्राण को परमेश्वर के सम्मुख प्रसन्नता की स्थिति'' में प्रस्तुत करना है।

यह जानना कितनी अद्‌भुत बात है कि प्रभु यीशु प्रति दिन अपना निजी व्यक्तिगत निमंत्रण आपको भेजता है। आपको आपके नाम से बुलाकर, वह उदारतापूर्वक **आपको आने और भोजन करने** के लिये आमंत्रित करता है!

तेरा सत्य जो अपरिवर्तित है, हमेशा स्थायी रहता है
तुझे जो बुलाते हैं, तू उन्हें बचाता है;
तू उनके लिये अच्छा है, जो तुझे खोजते हैं;
उनके लिये जो तुझे सर्वेसर्वा पाते हैं।

हे जीवित रोटी, हम तुझे चखते हैं,
और अभी भी आपके साथ भोजन करना चाहते हैं;
हम तुझमें से पीते हैं, तू झरने का स्त्रोत है
हमारी आत्माएँ जो तेरे लिये प्यासी हैं, तुझ से भरपूर होती हैं

बर्नाड ऑफ़ क्लेयरवॉक्स

परिशिष्ट - क

टिप्पणी - यद्यपि प्रतिदिन के लिये - औपचारिक बाइबल अध्ययन आत्याधिक महत्वपूर्ण नहीं है; तौभी प्रतिदिन साथ समय गुजारना, आपकी आत्मिक वृद्धि के लिये आदेशात्मक है।

बाइबल अध्ययन

आप बाइबल के जिन खंडों को पढ़ेगे, उससे संबंधित पूछने के लिये कुछ प्रश्न आपके खातिर दिये गये हैं; ताकि आपका औपचारिक बाइबल अध्ययन सचमुच प्रतिफलदायक हो सकेः

- अनुच्छेद किसके बारे में बात कर रहा है?
- अनुच्छेद किसकी ओर संकेत करता है?
- लेखक कौन से विशेष शब्दों का प्रयोग करता है?
- अनुच्छेद किस समय में लिखा गया था?
- अनुच्छेद कहाँ से लिखा गया था?
- अनुच्छेद किस उद्देश्य से लिखा गया था ?
- अनुच्छेद किस परिस्थिति में लिखा गया था?
- अनुच्छेद अपने से पहले और बाद की बातों के अनुरूप या अनुकूल कैसे है?

अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाये और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो (2 तीमुथियुस 2:15)।

साथ - साथ समय

जब आप अपने प्रतिदिन के पवित्र शास्त्र पठन के दौरान, प्रत्येक पद पर मनन करते हैं, तब आपके पूछने के लिये यहां कुछ प्रश्न दिये गये हैं:

क्या पद - में यह है:

- पाप जो नहीं करना चाहिये?
- ध्यान देने के लिये चेतावनी?
- मानने के लिये आज्ञा?
- अनुकरण करने के लिये उत्तम उदाहरण?
- त्यागने या छोड़ने के लिये बुरा उदाहरण?
- पिता परमेश्वर के बारे में नया विचार?
- पुत्र परमेश्वर के बारे में नया विचार?
- पवित्रात्मा परमेश्वर के बारे में नया विचार?
- शैतान के व्यक्तित्व के लिये ताजी प्रेरणा?
- शैतान के क्रूर उद्देश्यों के लिये ताजी प्रेरणा?
- शैतान की धूर्त युक्तियों के लिये नयी प्रेरणा?

परंतु वचन पर चलने वाले बनो और केवल सुनने वाले ही नहीं, जो अपने आपको धोखा देते हैं। परंतु जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पायेगा कि सुनकर भूलता नहीं; परंतु वैसा ही काम करता है (याकूब 1:22,25)।

परिशिष्ट - ग

प्रतिदिन की प्रार्थना मार्गदर्शक

हमारी दैनिक मध्यस्थ प्रार्थना में मेरी पत्नी डॉरथी और मेरी मदद करने के लिये, हमने प्रचारक थॉमस बी.रीस के द्वारा सुझाये गये दैनिकक्रम का पालन करने का फैसला किया। पचास वर्ष पहले मसीह के लिये मेरे हृदय परिवर्तन के तुरंत बाद, उन्होंने सुझाव दिया था। मंडे (सोमवार) के लिये ''एम'' मिश्नरी के लिये ''एम'' इत्यादि। अपनी आत्माओं को परमेश्वर के वचन से आत्मिक भोजन खिलाने और सिर से हृदय तक प्रार्थना के परिणामस्वरूप विनयपूर्ण प्रार्थना महत्वपूर्ण बन जाती है। एक लापरवाह दैनिक दिनचर्या के बजाय, दूसरों के लिये विनती करना, एक विलंबित या बढ़ाया हुआ और धन्यवाद का तरोताजा समय, मध्यस्थ प्रार्थना और उनके लिये फ़िक्र बन जाता है। यद्यपि हमारे पास इस तरह की फ़िक्र वाली प्रार्थना की सूची लिखी हुई नहीं होती है, फिर भी हम पवित्र आत्मा पर भरोसा करते हैं कि वह हमारी प्रार्थना के समय को बढ़ायेगा; ताकि तत्कालीन सभी जरूरतों के बारे में प्रार्थना के निवेदनों को शामिल किया जा सके।

> किसी भी बात की चिंता मत करो; परंतु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के संमुख उपस्थित किये जायें (फिलिप्पियों 4:6)।

टिप्पणी:- आगे दी गयी **प्रतिदिन की प्रार्थना मार्गदर्शक** किसी व्यक्तिगत स्वभाव या प्रवृत्ति अथवा दैनिक जीवन पर आधारित सामने आने वाली फ़िक्र और चिंता के लिये प्रार्थना करने को भी शामिल करती है।

सोमवार मिश्नरी
Monday Missionary - उन मिशनरियों के लिये प्रार्थना, जिनकी सेवकाई में परमेश्वर रूचि लेता है और शामिल होता है।

मंगलवार धन्यवाद
Tuesday Thanksgiving - धन्यवाद की प्रार्थना का विशेष समय और वह सबकुछ है इसलिये उसकी आराधना उसने सबकुछ किया है सबके लिये कि वह जो करेगा तथा सबकुछ जो उसने दिया है।

बुधवार सेवक
Wednesday Workers - पास बानों, प्रचारकों, बाइबल शिक्षकों और मसीही कार्यकर्त्ताओं के लिये प्रार्थना।

गुरूवार कार्य
Thursday Tasks - घरेलू जिम्मेदारियां; सेवकाई संबंधी कर्तव्य, आर्थिक कृतज्ञता इत्यादि।

शुक्रवार परिवार
Friday Family - हमारा निजी छोटा परिवार और हमारे रिश्तेदारों का बड़ा परिवार; इसमें वे सब लोग शामिल हैं जो डॉरथी और मेरे प्रति हमारे बच्चों, नातिपोतों के समान मसीह में हमसे प्रेम रखते हैं।

शनिवार पापी
Saturday Sinners - समस्त विश्व में परमेश्वर की खोज की सेवकाई; सड़कों में हमने जिन लोगों से मुलाकात की है और गवाही दी है, पारिवारिक सदस्य, जो मसीह में नहीं हैं, इत्यादि।

रविवार संत
Sunday Saints - वे लोग, जिनके बारे में हम जानते हैं कि उन्होंने हाल ही में उद्धारकर्ता को ग्रहण किया है; प्रार्थना भागीदार, जिनके माध्यम से परमेश्वर ने हमारे जीवन को भरपूर किया है; सतायी हुई कलीसिया - जिसके बारे में हम प्रयास करके विस्तृत जानकारी खोजते हैं; और आज कलीसिया में जागृति के लिये प्रार्थना।

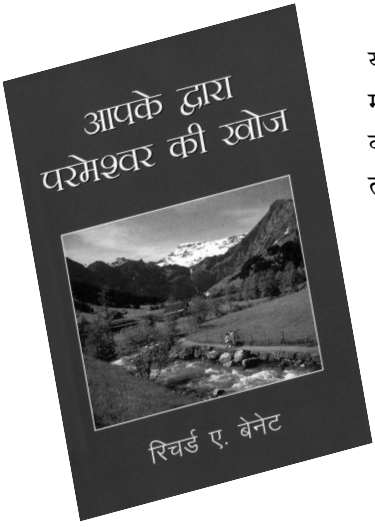

यदि आप उद्धार के बारे में परमेश्वर के मार्ग की अपेक्षाकृत अधिक पूरी व्याख्या जानने की इच्छा रखते हैं, तो लेखक ने यह पुस्तक लिखी है:

आपके द्वारा परमेश्वर की खोज

www.ccim-media.com

आपके द्वारा परमेश्वर की खोज, सुसमाचार प्रचार - कार्य के लिये आपका औजार भी बन सकती है।

''यह पुस्तक है, जिसके लिये मैं ने 20 वर्ष से प्रार्थना की है''।

-जॉर्ज वर्वर, संस्थापक, ऑपरेशन मोबिलाइजेशन

50 भाषाओं में तीन लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित की गयी हैं।